वर्ष : 17 अंक : 241 लखनऊ बुधवार, 10 सितंबर, 2025 पृष्ठ : 12, मूल्य: ₹4/-

विश्ववार्ता

www.vishwavarta.com

सच्ची ख़बर, पैनी नज़र

मौसम
सूर्योदय : 5:46
सूर्यास्त : 6:25
अधिकतम : 31:00°
न्यूनतम : 26:00°

ई-पेपर पढ़ने के लिए स्कैन करें हमारा क्यू आर कोड

मूल्य ₹4

नगर संस्करण **

जनशिकायतों के निस्तारण में योगी सरकार... 2 | 2029 तक चलने वाला मिथ्या प्रचार है वोटों की चोरी 6 | नेपाल में जेन जेड ने पलट दी रातों-रात सरकार 12

राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति

विपक्ष के सुदर्शन रेड्डी को 152 मतों से हराया

विश्ववार्ता ब्यूरो

नयी दिल्ली। भारत को नया उपराष्ट्रपति मिल गया है। मंगलवार को हुए चुनाव में सत्तारूढ़ गठबंधन एनडीए उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन ने जीत हासिल की है। वह भारत के 15वें उपराष्ट्रपति बनने जा रहे हैं। उन्होंने विपक्षी गठबंधन इंडिया के साझा उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी को हराया। जुलाई में स्वास्थ्य संबंधी कारणों का हवाला देकर जगदीप धनखड़ ने पद से इस्तीफा दे दिया था, जिसके चलते चुनाव हुए।

संसद के दोनों सदनों के सदस्य इस चुनाव में वोट डालने के लिए पात्र थे। इलेक्टोरल कॉलेज में कुल 788 सदस्य हैं। इनमें 245 राज्यसभा औ 543 लोकसभा से हैं। फिलहाल, इन सदस्यों की कुल संख्या 781 है, क्योंकि राज्यसभा में 6 और लोकसभा में 1 सीट खाली है। ऐसे में चुनाव में जीत के लिए 391 मतों की जरूरत थी।

एनडीए के पास 293 सांसद हैं और राज्यसभा सदस्यों की संख्या 129 है। जबकि, इंडिया गठबंधन के पास कुल 325 सांसद हैं। इस लिहाज से राधाकृष्णन की जीत पहले ही आसान मानी जा रही थी। एनडीए को आंध्र प्रदेश के विपक्षी दल वाईएसआरसीपी के एनडीए उम्मीदवार का साथ देने का फैसला किया था। पार्टी के पास 11 सांसद हैं। वहीं एआईएमआईएम यानी असदुद्दीन ओवैसी के नेतृत्व वाली ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन ने इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार का समर्थन किया था। इधर भारत राष्ट्र समिति और बीजू जनता दल के अलावा शिरोमणि अकाली दल ने चुनाव से बाहर होने का फैसला किया था। खबर है कि अकाली दल (वारिस पंजाब दे) के सांसद सरबजीत सिंह खालसा और अमृतपाल सिंह ने उपराष्ट्रपति चुनाव के

एक लाइन में क्रॉस वोटिंग में एनडीए को 14 वोट ज्यादा मिले

जीत के बाद राधाकृष्णन को शाल ओढ़ा कर उनका अभीनंदन करते पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और रक्षामंत्री राजनाथ सिंह।

जगन मोहन रेड्डी की पार्टी ने दिया समर्थन

बहिष्कार करने का ऐलान किया है। खडूर साहिब लोकसभा सीट से सांसद अमृतपाल सिंह असम की डिब्रूगढ़ केंद्रीय जेल में बंद है। खास बात है कि एनडीए सदस्यों की संख्या से ज्यादा वोट राधाकृष्णन को मिले हैं। वहीं कांग्रेस के 315 के दावे के मुकाबले रेड्डी के खाते में कम वोट आए हैं। मंगलवार को हुए चुनाव में कुल 98.20 फीसदी मतदान हुआ था। इस दौरान 788 में से कुल 767 सांसदों ने मताधिकार का इस्तेमाल किया। शाम 6 बजे मतगणना शुरू हुई, जिसमें राधाकृष्णन को 452 और रेड्डी को 300 वोट मिले। खास बात है कि विपक्षी गठबंधन के उम्मीदवार को मिले 15 वोट अवैध माने गए। जीत के लिए 391 मतों की जरूरत थी।

राज्यसभा महासचिव पीसी मोदी ने कहा, 'एनडीए उम्मीदवार और महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को 452 प्रथम वरीयता वोट मिले हैं। वह भारत के उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए हैं...। उपराष्ट्रपति पद के विपक्ष के उम्मीदवार जस्टिस सुदर्शन रेड्डी को 300 प्रथम वरीयता वोट मिले हैं।'

देश के 17वें उप राष्ट्रपति के चुनाव के लिए, निर्वाचक मंडल में राज्यसभा के 233 निर्वाचित सदस्य (वर्तमान में पांच सीटें रिक्त हैं) एवं 12 मनोनीत सदस्य तथा लोकसभा के 543 निर्वाचित सदस्य (वर्तमान में एक सीट रिक्त है) शामिल थे। निर्वाचक मंडल में कुल 788 सदस्य (वर्तमान में 781) हैं। बीजू जनता दल (बीजद), भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) और शिरोमणि अकाली दल (शिअद) ने चुनाव से दूर रहने का फैसला किया था।

बीजेडी के राज्यसभा में 7 सांसद हैं। वहीं, बीआरएस के पास राज्यसभा में 4 सांसद हैं। दोनों ही दलों का लोकसभा में एक भी सदस्य नहीं है। वहीं, शिअद के पास सिर्फ एक लोकसभा सांसद हरसिमरत कौर है। तीनों दलों के मिलाकर कुल आंकड़ा 12 होता है। साथ ही अकाली दल (वारिस पंजाब दे) के सांसद सरबजीत सिंह खालसा और अमृतपाल सिंह ने उपराष्ट्रपति चुनाव के बहिष्कार करने का एलान किया है। इस लिहाज से कुल कम हुए मतों की संख्या 14 हो जाती है और वोट देने वाले कुल सांसद 767 रह जाते हैं। वोटिंग में शामिल हुए दलों को मिलाया जाए, तो मंगलवार को 100 फीसदी मतदान हुआ है। खास बात है कि राधाकृष्णन को उम्मीद से 25 वोट ज्यादा मिले हैं। एनडीए दलों के अलावा राधाकृष्णन को जगन मोहन रेड्डी की अगुवाई वाली वाईएसआरसीपी ने समर्थन दिया था, जिनके पास कुल 11 सांसद हैं। ऐसे में सवाल है कि राधाकृष्णन के खाते में 14 और वोट कहां से आए? जगनमोहन के फैसले से एनडीए खेमे के 11 वोट सीधे बढ़ गए हैं। वाईएसआर कांग्रेस के पास लोकसभा में चार तो राज्यसभा में सात सांसद हैं।

कांग्रेस नेता मणिकम टैगोर ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि आंध्र प्रदेश के लोग उनके इस विश्वासघात को नहीं भूलेंगे कि उन्होंने इस दक्षिणी राज्य के हितों के बजाय सीबीआई के मामलों के डर से आरएसएस के उम्मीदवार का समर्थन किया। उन्होंने कहा, ''इतिहास जगन मोहन रेड्डी के विश्वासघात को नहीं भूलेगा। उपराष्ट्रपति पद के लिए आरएसएस समर्थित उम्मीदवार का समर्थन करके उन्होंने आंध्र प्रदेश के हितों के बजाय सीबीआई के मामलों के डर को चुना है।''

नेपाल के हाल बेहाल

पीएम ओली का इस्तीफा, वित्त मंत्री को पीटा

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल में हिंसक प्रदर्शनों से हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन में आग लगा दी। इसके अलावा, पीएम ओली, राष्ट्रपति, गृहमंत्री के निजी आवास पर तोड़फोड़ के बाद आगजनी की। ओली हेलीकॉप्टर से किसी अज्ञात स्थान को चले गये हैं। प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन और सुप्रीम कोर्ट तक को आग के हवाले कर दिया। नेपाल में उपद्रवियों ने पूर्व प्रधानमंत्री झालानाथ खनाल के घर में आग लगा दी। इस घटना में पूर्व प्रधानमंत्री की पत्नी की जलकर मौत हो गई। नेपाल में विरोध प्रदर्शन की आग लगातार बढ़ती जा रही है। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के इस्तीफे के बाद भी उपद्रवियों का गुस्सा थमने का नाम नहीं ले रहा है। प्रदर्शनकारियों ने पूर्व पीएम शेर बहादुर देउबा को घर में घुसकर पीटा। वहीं, वित्त मंत्री विष्णु पोडौल को काठमांडू में उनके घर के नजदीक दौड़ा-दौड़ाकर पीटा। इसका वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें एक प्रदर्शनकारी उनके सीने पर लात मारता दिख रहा है। इस हिंसा में अब तक 22 लोग मारे जा चुके हैं, जबकि 400 से ज्यादा लोग घायल हैं। प्रदर्शनकारियों ने पूर्व प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड, शेर बहादुर देउबा और संचार मंत्री पृथ्वी सुब्बा गुरुंग के निजी आवासों को भी आग के हवाले कर दिया।

भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिमालयी देश नेपाल में 2008 में राजशाही खत्म होने के बाद पिछले 17 वर्षों में राजनीतिक अस्थिरता और अशांति का दौर जारी रहा है। इस दौरान देश में 13 बार सरकारें बदलीं। चीन और भारत जैसे दो बड़े देशों से घिरा नेपाल अपनी

पूर्व पीएम की पत्नी की जिंदा जलने से मौत

आंदोलन की सात प्रमुख वजहें

1. **नेपोटिज्म:** जेन-जी को भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी ने निराश किया। भाई-भतीजावाद (नेपोटिज्म) और चहेतों को कुर्सी पर बैठाने से नेताओं के बच्चों की विदेशी यात्राएं, ब्रांडेड सामान, शानो शौकत की पार्टियां सोशल मीडिया पर चर्चित होने लगीं।
2. **सोशल मीडिया बैन:** लोगों को लगा कि उनकी आवाज दबा दी गई है। कई युवा इसके जरिए कमाई भी कर रहे थे। इससे गुस्सा भड़का।
3. **तीन बड़े घोटाले:** 4 साल में 3 बड़े घोटाले सामने आए। 2021 में 54,600 करोड़ रुपए का गिरी बंधु भूमि स्वैप घोटाला, 2023 में 13,600 करोड़ रुपए का ओरिएंटल कोऑपरेटिव घोटाला और 2024 में 69,600 करोड़ रुपए का कोऑपरेटिव घोटाला। इससे युवाओं में सरकार के प्रति आक्रोश बढ़ता जा रहा था।
4. **सियासी अस्थिरता:** 5 साल में 3 सरकारें आईं। जुलाई 2021 में शेर बहादुर देउबा पीएम। दिसंबर 2022 में प्रचंड पीएम बने। जुलाई 2024 से ओली आए।
5. **बेरोजगारी-आर्थिक असमानता:** बेरोजगारी दर 2019 में 10.39% थी, अभी 10.71% है। महंगाई दर 2019 में 4.6% थी। अब 5.2% है। आर्थिक असमानता हावी। 20% लोगों के पास 56% संपत्ति।
6. **विदेशी दबाव:** ओली सत्ता में आए तो चीन की ओर झुकाव बढ़ा। पहले सरकारों ने कई फैसले अमेरिकी प्रभाव में लिए। सोशल मीडिया बैन के बीच सिर्फ चीनी ऐप टिक-टॉक चलता रहा। युवाओं को लगता है कि बड़े देशों के दबाव में नेपाल मोहरे जैसा इस्तेमाल हो रहा है।
7. **भारत से बढ़ती दूरी:** ओली पीएम बने तो लिपुलेख दर्रे को नेपाल के नक्शे में दिखाया। चीन से नजदीकी बढ़ाई। दोनों देशों के संबंध तनावपूर्ण हुए तो नेपाल पर आर्थिक दबाव पड़ा। इससे भी युवाओं में बेचैनी।

» राष्ट्रपति, संसद, सुप्रीम कोर्ट गृहमंत्री के घर जलाये

विदेश नीति और राजनीति में इन दोनों देशों के साथ संतुलन बनाने की चुनौती का सामना करता रहा है। बाहरी ताकतों की दखलंदाजी ने भी देश में अस्थिरता को बढ़ावा दिया। लगभग तीन करोड़ की आबादी वाले नेपाल में एक दशक के गृहयुद्ध के बाद 2008 में 239 साल पुरानी राजशाही समाप्त होकर गणतंत्र स्थापित हुआ।

इन 17 वर्षों में बार-बार विरोध प्रदर्शनों के कारण देश ने अस्थिरता का सामना किया, और औसतन हर एक-दो साल में सरकार बदली। इस दौरान केपी शर्मा ओली चार बार, पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' तीन बार और शेर बहादुर देउबा दो बार प्रधानमंत्री बने। कोई भी प्रधानमंत्री अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर सका।

हालिया घटनाक्रम इस अस्थिरता का हिस्सा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ जनता का गुस्सा लंबे समय से सुलग रहा था। सरकार के सोशल मीडिया पर प्रतिबंध के फैसले ने विशेष रूप से 'जेनरेशन जेड' कहे जाने वाले युवाओं को सड़कों पर उतरने के लिए उकसाया।

दो दिन के उग्र प्रदर्शनों के बाद प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को इस्तीफा देना पड़ा। प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के आवासों पर तोड़फोड़ और आगजनी की। पुलिस कार्रवाई में 22 लोगों की मौत हुई और लगभग 400 लोग घायल हुए। सरकार ने सोशल मीडिया प्रतिबंध हटाया, लेकिन प्रदर्शनकारी शांत नहीं हुए।

राधाकृष्णन की जीत से कैसे भाजपा लिख रही नयी कहानी

विश्ववार्ता ब्यूरो

नयी दिल्ली। उपराष्ट्रपति चुनाव में एनडीए उम्मीदवार और महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने शानदार जीत हासिल की है। सीपी राधाकृष्णन का उपराष्ट्रपति बनना अप्रत्याशित नहीं था, क्योंकि उनके पक्ष में पहले से ही पर्याप्त संख्याबल मौजूद था। हालांकि, उनकी इस जीत ने बीजेपी की राजनीतिक रणनीति को नया आयाम दे दिया है। संभव है कि आने वाले समय में भारत की सियासत में बड़ा बदलाव देखने को मिले। सीपी राधाकृष्णन की जीत इस बात का संकेत देती है कि बीजेपी ने अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए तमिलनाडु के एक प्रभावशाली नेता को उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनकर दक्षिण भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। साथ ही, पार्टी ने आरएसएस के वरिष्ठ और समर्पित कार्यकर्ता राधाकृष्णन को इस भूमिका के लिए चुना है। सीपी राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरुप्पुर में हुआ था और उन्होंने व्यवसाय प्रशासन में स्नातक की डिग्री हासिल की है। अपने करियर की शुरुआत उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से की थी। बाद में वे सक्रिय राजनीति में आए और अटल

» निर्वाचित उपराष्ट्रपति आजीवन रहे संघ के कार्यकर्ता

बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान 1998 और 1999 में कोयंबटूर से दो बार लोकसभा सांसद चुने गए। उस समय तमिलनाडु का राजनीतिक माहौल हिंदुत्व-केंद्रित बीजेपी के लिए अनुकूल नहीं था, क्योंकि इसे द्रविड़ विचारधारा के विपरीत माना जाता था।

2004 में सीपी राधाकृष्णन को तमिलनाडु बीजेपी की राज्य इकाई का अध्यक्ष बनाया गया। हालांकि, 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। 2023 तक बीजेपी तमिलनाडु में नया नेतृत्व स्थापित करने की कोशिश में थी, जिसके तहत राधाकृष्णन को पहले झारखंड और बाद में महाराष्ट्र का राज्यपाल नियुक्त किया गया।

पीएम ने दिया पंजाब को 1600 और हिमाचल को 1500 करोड़ का पैकेज

मोदी ने किया हवाई सर्वे, पंजाब की आप सरकार बोली- ये मजाक, जख्मों पर नमक छिड़का

विश्ववार्ता ब्यूरो

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को हिमाचल और पंजाब के बाढ़ प्रभावित इलाकों का हेलिकॉप्टर से हवाई सर्वे किया। दोनों राज्यों के लिए उन्होंने कुल 3100 करोड़ की सहायता राशि का ऐलान किया। मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख और घायलों को 50-50 हजार रुपए दिए जाएंगे।

गुरदासपुर में पीएम मोदी ने 19 किसानों, एनडीआरएफ और एसडीआरएफ टीम से बातचीत की। मंत्रियों व अधिकारियों के साथ बैठक के बाद उन्होंने पंजाब को 1600 करोड़ देने का ऐलान किया। इस पर पंजाब के मंत्री बरिंदर गोयल ने कहा कि ये बहुत बड़ा मजाक है। वहीं आप प्रदेशाध्यक्ष अमन अरोड़ा ने कहा- केंद्र ने पंजाबियों के जख्मों पर नमक छिड़का है।

इससे पहले प्रधानमंत्री ने कुल्लू, मंडी और चंबा में हुए नुकसान का सर्वे किया। कांगड़ा में बैठक में अधिकारियों से प्रेजेंटेशन लिया और 1500 करोड़ की मदद का ऐलान किया। बैठक में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू भी मौजूद रहे। पीएम ने 18 प्रभावित परिवारों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने मंडी की एक साल की बच्ची नितिका को टॉफी दी और फिर उसे गोद में उठाया। नितिका के माता, पिता और दादी की 30 जून को मंडी में बादल फटने से आई बाढ़ में मौत हो गई थी।

पीएम की आंखों में आ गए थे आंसू: कंगना

सांसद कंगना रनोट ने कहा कि पीएम जब आपदा प्रभावितों से बात कर रहे थे तो उनकी आंखों में आंसू आ गए थे। उन्होंने कहा कि आपदा की घड़ी में केंद्र और राज्य सरकार मिलकर जनता के साथ खड़ी है। प्रधानमंत्री ने हर आपदा प्रभावित क्षेत्र का दौरा किया। कंगना ने कहा कि पीएम ने हर साल आ रही आपदा पर हैरानी जताई।

इससे पहले पीएम ने हेलिकॉप्टर से कुल्लू, मंडी और चंबा में हुए नुकसान का हवाई सर्वेक्षण किया। इसके बाद कांगड़ा में आपदा को लेकर एक बैठक की, जिसमें अधिकारियों ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से उन्हें नुकसान की जानकारी दी। इस दौरान उन्होंने 1500 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता देने का ऐलान किया। पीएम ने कहा कि केंद्र सरकार हर संभव मदद करेगी। मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपए और घायलों को 50-50 हजार रुपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी।

इसके बाद प्रधानमंत्री ने मंडी, कुल्लू और चंबा जिले के 18 प्रभावित लोगों से मुलाकात की और उनकी आपबीती सुनी। उन्होंने एक साल की नितिका से भी मुलाकात की, जिसके माता, पिता और दादी की 30 जून को मंडी में बादल फटने से आई बाढ़ में मौत हो गई थी। प्रधानमंत्री ने नितिका को पहले टॉफी दी और फिर उसे गोद में उठा लिया।

इसके अलावा हिमाचल में पीएम किसान सम्मान निधि की किस्त भी एडवांस में जारी की जाएगी। पीएम मोदी ने कई ऐंगल से हवाई सर्वे किया ताकि पूरे इलाके की स्थिति को समझा जा सके।

उन्होंने एक आदेश और दिया है कि पीएम आवास योजना के तहत क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत की जाए। इसके अलावा नेशनल हाइवेज की मरम्मत, स्कूलों का दोबारा निर्माण और अन्य राहत के लिए भी आदेश दिया है। पीएम मोदी ने इसे लेकर सोशल मीडिया पर भी लिखा है। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'हिमाचल प्रदेश के बाढ़ एवं भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों का हवाई सर्वेक्षण किया और हालात का जायजा लिया। इस कठिन समय में हम प्रभावितों के साथ पूरी दृढ़ता के साथ खड़े हैं। प्रभावितों की सहायता सुनिश्चित करने के लिए हम निरंतर अपना समर्थन जारी रखेंगे।'

प्रदेश में इस मानसून सीजन में 4122 करोड़ रुपए की सरकारी व प्राइवेट संपत्ति नष्ट हो चुकी है। राज्य सरकार राष्ट्रीय आपदा घोषित कर पूरे नुकसान की भरपाई चाह रही थी।

अगली सूचना तक नेपाल ना जायें, भारत की एडवाइजरी

विश्ववार्ता ब्यूरो

नयी दिल्ली। नेपाल में सोशल मीडिया प्रतिबंध के खिलाफ हुए विरोध प्रदर्शनों पर भारत सरकार सतर्क है। नेपाल में बढ़ती अशांति में कम से कम 22 लोगों की मौत हो चुकी है। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने भ्रष्टाचार के खिलाफ कई दिनों तक चले हिंसक प्रदर्शनों और विवादास्पद सोशल मीडिया प्रतिबंध के बाद इस्तीफा दे दिया है। भारी विरोध के बीच विदेश मंत्रालय ने कहा है कि भारतीय नागरिकों को स्थिति सामान्य होने तक नेपाल की यात्रा टाल देनी चाहिए। जो लोग पहले से ही इस हिमालयी देश में हैं, उन्हें घर के अंदर रहने और सड़कों पर न निकलने की सलाह दी गई है।

बयान में आगे कहा गया है कि काठमांडू और नेपाल के कई अन्य शहरों में अधिकारियों ने कर्फ्यू लागू कर दिया है। नेपाल में मौजूद भारतीय नागरिकों को सतर्क रहने और नेपाली अधिकारियों के निर्देशों व नियमों का पालन करने की सलाह दी गई है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि सहायता की आवश्यकता वाले भारतीय नागरिक निम्नलिखित हेल्पलाइन नंबरों के माध्यम से दूतावास से संपर्क कर सकते हैं।

» काठमांडू में सभी भारतीय छात्र सुरक्षित

+977–980 860 2881
+977–981 032 6134
(व्हाट्सएप पर भी)

विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि हम कल से नेपाल में हो रहे घटनाक्रमों पर बारीकी से नजर रख रहे हैं और कई युवाओं की जान जाने से बहुत दुखी हैं। हमारी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं मृतकों के परिवारों के साथ हैं। एक करीबी मित्र और पड़ोसी के रूप में, हम उम्मीद करते हैं कि सभी संयम बरतेंगे और शांतिपूर्ण तरीकों व बातचीत के माध्यम से मुद्दों का समाधान करेंगे। भारत सरकार के आंकड़ों के मुताबिक, 2100 से ज्यादा भारतीय छात्र नेपाल में पढ़ाई कर रहे हैं। इनमें से ज्यादातर भारतीय मेडिकल कोर्सेज की पढ़ाई के लिए नेपाल गए हैं। इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिन-काठमांडू, बीपी कोइराला इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ साइंसेज, काठमांडू मेडिकल कॉलेज और मणिपाल कॉलेज और मेडिकल साइंसेज देश के पॉपुलर मेडिकल कॉलेज हैं, जहां भारतीय एमबीबीएस करने जाते हैं।

2027 के चुनाव में अखिलेश ने गुर्जरों को साधने का बनाया मेगा प्लान

जयंत के एनडीए में जाने से वेस्ट यूपी में समीकरण बिगड़े, 'जाट वोटरों' के साथ एक्सपेरिमेंट करेंगे

विश्ववार्ता ब्यूरो

लखनऊ। अखिलेश यादव अक्सर हर चुनाव से कुछ नया सीखने का दावा करते हैं। हर चुनाव से पहले नया एक्सपेरिमेंट करते हैं और यह भी कहते हैं कि जब तक सफलता नहीं मिलेगी तब तक एक्सपेरिमेंट जारी रहेगा। लिहाजा इस बार 2027 से पहले अखिलेश ने नया एक्सपेरिमेंट करने का प्लान बनाया है। अखिलेश यादव का यह प्रयोग पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जयंत के बीजेपी के साथ जाने से जाट वोटों के नुकसान की भरपाई करने का है। दरअसल, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए नयी रणनीति अपनाई है। राष्ट्रीय लोकदल के नेता जयंत चौधरी के राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में शामिल होने के बाद जाट वोटों के नुकसान की आशंका को देखते हुए अखिलेश अब गुर्जर समाज को साधने के लिए मेगा प्लान तैयार कर रहे हैं।

इस मेगा प्लान के तहत पहली रणनीति है-पश्चिमी यूपी में गुर्जरों के बीच गुर्जर चौपाल और रैलियों के आयोजन करना। इस रणनीति के तहत यूपी के 34 जिलों के 132 विधानसभा में छोटी-छोटी चौपाल और रैलियां की जाएंगी। ये चौपाल उन विधानसभा क्षेत्रों में होंगी जहां गुर्जर मतदाताओं की संख्या जाटों से ज्यादा है। इन रैलियों की कमान सपा के पश्चिमी यूपी के नेता और प्रवक्ता राजकुमार भाटी को सौंपी गई है।

दूसरी रणनीति के तहत अखिलेश नवंबर महीने में ग्रेटर नोएडा में बड़ी रैली करेंगे, जिसमें एक लाख से ज्यादा भीड़ जुटने का दावा है। इतना ही नहीं, इस रैली में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जनसभा को संबोधित करेंगे. रैली की जिम्मेदारी संभालने वाले राजकुमार भाटी का कहना है कि दिल्ली में 19 जुलाई को गुर्जर चौपाल का आयोजन समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय पर हुआ था, जिसमें अखिलेश यादव मौजूद थे। वर्तमान समय में भारतीय जनता पार्टी ने गुर्जर समाज की बहुत उपेक्षा की है और उन्हें अपमानित किया है। देश की आजादी के बाद योगी आदित्यनाथ की सरकार पहली ऐसी सरकार हैं, जिनमें कोई गुर्जर कैबिनेट मिनिस्टर नहीं है इसलिए गुर्जर समाज भारतीय जनता पार्टी से बहुत ज्यादा नाराज है और इस बार विधानसभा चुनाव में एकजुट होकर समाजवादी पार्टी को वोट देगा।

दरअसल पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाट वोटर समाजवादी पार्टी के पारंपरिक समर्थक माने जाते हैं, खासकर रालोद के साथ गठबंधन के दौरान यह पैटर्न देखने को मिला था। हालांकि, जयंत चौधरी के 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले एनडीए में शामिल होने से सपा को जाट वोटों के खिसकने का खतरा पैदा हो गया है। पश्चिमी यूपी में जाट समुदाय की आबादी करीब 3-4% है, जो कई सीटों पर निर्णायक भूमिका निभाती है।

इस नुकसान की भरपाई के लिए अखिलेश ने गुर्जर समुदाय पर फोकस किया है, जो पश्चिमी यूपी में करीब 5-6% आबादी रखता है और मेरठ, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर, बागपत, सहारनपुर, मुजफ्फरपुर नगर, शामली और बुलंदशहर जैसे जिलों में प्रभावशाली है।

सपा ने गुर्जर समुदाय को जोड़ने के लिए हाल ही में दिल्ली में करीब 60 गुर्जर संगठनों के साथ बैठक की। इस बैठक में अखिलेश ने गुर्जर समुदाय की सामाजिक और आर्थिक चिंताओं को समझने और उनके लिए नीतिगत समाधान पेश करने का वादा किया। इसके अलावा, सपा ने ऐतिहासिक गुर्जर नायक राजा मीहिर भोज की विरासत को उभारने की रणनीति अपनाई है।

शिक्षण संस्थान बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला

सीएम योगी ने किया ने सरस्वती विद्या मंदिर का भूमि पूजन

विश्ववार्ता संवाददाता

बस्ती। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत की शिक्षा कैसी होनी चाहिए। आजादी के पांच साल के बाद जब तत्कालीन सरकारें इस दिशा में प्रयास नहीं कर पाईं, तब नाना जी ने गोरखपुर से इस प्रयास को बढ़ाया था। उसके पीछे का ध्येय था कि भारत, भारतीयता, परंपरा, संस्कृति और मातृभाव से ओतप्रोत ऐसे शिक्षण संस्थान की स्थापना आवश्यक है, जो देश को फिर से विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने में योगदान दे सके। इसकी शुरूआत शिक्षा के मंदिरों से ही होती है। शिक्षण संस्थान केवल अक्षर ज्ञान के माध्यम ही नहीं, बल्कि बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला हैं। शिक्षा यदि संस्कार, मूल्यों-आदर्शों, मातृभूमि, महापुरुषों,

राष्ट्रीयता के प्रति समर्पण का भाव पैदा नहीं कर पा रही है तो वह कुशिक्षा और भटकाव है। आजादी के तत्काल बाद उसका समाधान सरस्वती शिशु मंदिर से प्रारंभ हुआ।

एक नजर

महिला ने उधार के रुपये वापस मांगने पर जाति सूचक गालियां देने और रुपये न देने की रिपोर्ट कराई दर्ज

लखनऊ। सरोजनीनगर थाना क्षेत्र के कानपुर रोड स्थित स्कूटर इंडिया कंपनी के निकट शिवमंगल कॉलोनी निवासी अनीता रावत ने 6लाख रुपये न देने और मांगने पर जाति सूचक गालियां देने की रिपोर्ट कराई दर्ज। अनीता रावत का कहना है कि वह अनुसूचित जाति पासी बिरादरी से आती हैं ,उनसे आशियाना निवासी श्याम सिंह और उनकी पत्नी ने 1200000 लाख रूपये बैंक खाते के माध्यम से उधार लिए थे, जिसमें पीड़िता का 685000 हजार रुपये बचा था । पीडिता का कहना है कि इसका समझौता थाना कैंट के यहां हुआ था ,जिसमें समझौता हुआ था कि श्याम सिंह 6लाख रुपये के चेक दिये थे और 85000 हजार रुपये खाते में ट्रांसफर कर देंगे। पीडिता का कहना है कि वह 85000 हजार रुपये खाते में ट्रांसफर कर दिये परंतु 6 लाख रुपये का चेक बाउंस हो गया ,मांगने पर श्याम सिंह व उनकी पत्नी द्वारा पीडिता को जाति सूचक गालियां दिया जा रहा है और वह लोग फोन भी नहीं उठा रहे हैं। पीडिता ने इसकी शिकायत सरोजनीनगर थाने में दर्ज कराई । सरोजनीनगर पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल कर रही है ।

थार चालक पर मां को पीछे से ठोकर मार कर घायल करने की रिपोर्ट कराई दर्ज

लखनऊ। सरोजनीनगर थाना क्षेत्र के समर बिहार कॉलोनी निवासी अंकुर चौधरी ने अज्ञात थार चालक पर माताजी को ठोकर मार कर घायल करने की रिपोर्ट कराई दर्ज ।अंकुर चौधरी का कहना है कि उनके माता शोभा चौधरी प्रत्येक रविवार ब्रह्म कुमारी सेंटर जाती हैं, 7 सितंबर को सुबह 5 :15 बजे वह अपने घर से ब्रह्म कुमारी सेंटर पैदल जा रही थी, चुंगी मोड ज्ञानी जी के ढाबे के पास पहुंची थी तभी अचानक तेज रफ्तार अनियंत्रित थार गाड़ी UP 32 PR 4333 ने पीछे से जोरदार ठोकर मार कर अपनी गाड़ी लेकर फरार हो गया ।पीड़ित का कहना है कि ठोकर लगने से उनकी मां गंभीर रूप से घायल हो गयीं और थार चालक वाहन से फरार हो गया। पीडित का कहना है कि वहां पर खड़े लोगों ने उनकी माता जी को एंबुलेंस से लोकबंधु अस्पताल ले गए और परिवार वालों की इसकी सूचना दिये। पीड़ित का कहना है कि मौके पर पहुंचे परिवारिजन उन्हें के के हॉस्पिटल में भर्ती कराये , उनके सिर में गंभीर चोटे आईं हैं ,इंटरनल ब्लीडिंग हुई है, बायें और दाएं पैर में फैक्चर हो गया है और अभी भी वह वेंटिलेटर सपोर्ट सिस्टम पर है । पीड़ित का कहना है कि अभी तक उनको होश नहीं आया है। पीड़ित ने इसकी शिकायत सरोजनीनगर थाने में दर्ज कराई । सरोजनीनगर पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर थार चालक का पता लगा रही है।

अवैध असलहा खरीदने व बेचने वाले एक आरोपी को किया गिरफ्तार

काकोरी। काकोरी में अवैध असलहा फैक्ट्री का खुलासा करने बाद अन्य आरोपियों की तलाश में जुटी पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी से असलहा खरीदने व बेचने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। इंस्पेक्टर सतीश राठौर ने बताया कि असलहा फैक्ट्री में खुलासा करने के बाद गिरफ्तार आरोपी दिलीप से पूछताछ में जानकारी में आया कि मेंहदी नगर गांव निवासी विनीत आरोपी दिलीप से असलहा खरीदता था साथ ही बेचने का भी काम करता था। जिसके बाद आरोपी विनीत को बहरू नहर के पास गिरफ्तार कर लिया गया है। जिसके पास 315 बोर का एक असलहा बरामद हुआ है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

बड़ी-बड़ी घास व अवैध कब्जे से पटे हैं अमृत सरोवर

काकोरी। विकास खंड में बनाए गए अमृत सरोवर बदहाल स्थिति में है । सकरा गांव में बने अमृत सरोवर में चारो तरफ बड़ी बड़ी घास खड़ी हुई है। सरोवर के चारो ओर बनी कच्ची सीढ़ीया बदहाल हो गई है। देख रेख़ के अभाव में सरोवर के चारो तरफ बनाई गई तार की फेंसिंग भी कई जगह पर टूट गई है। हालांकि बारिश का पानी सरोवर में है। सरकारी लापरवाही का यह आलम है कि सरोवर में कई लोग अवैध कब्जा कर पक्का निर्माण भी किए हुए है। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि दिलीप मौर्य ने बताया कि सरोवर का अवैध कब्जा नहीं हट सके हैं। वही अमेठिया सलेम पुर गांव में बना अमृत सरोवर भी बदहाल स्थिति में है। तार की फेंसिंग टूटी हुई है। ग्रामीण इसी सरोवर के पास शव का दाह संस्कार भी करते है। सेमरा मऊ गांव में बने अमृत सरोवर भी बदहाल स्थिति में है। ग्रामीणों ने बताया कि इस सरोवर में गांव के पानी आने की व्यवस्था नहीं है ।सरोवर में मात्र काकोरी रजबहा से पानी भरा जा सकता है। इस समय बारिश का पानी अमृत सरोवर में है। जिससे यह सरोवर निष्प्रयोज्य साबित हो रहा है। देख रेख की अभाव में अमृत सरोवर अस्तित्व खो रहे है।

राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ डीएम ने की बैठक

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान परिषद द्विवार्षिक निर्वाचन हेतु मतदेय स्थलों के निर्धारण के संबंध में जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी विशाख जी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के क्रम में आगामी पुनरीक्षण प्रक्रिया प्रारम्भ होने से पूर्व मतदेय स्थलों का चयन राजनैतिक दलों के साथ विचार–विमर्श कर सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। इसके तहत मतदाताओं की संख्या एवं सुविधा, मतदेय स्थलों पर न्यूनतम आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता आदि बिंदुओं पर चर्चा की गई ।जिला निर्वाचन अधिकारी ने स्पष्ट किया कि आयोग के मानक के अनुसार किसी भी मतदाता को मतदान हेतु अधिकतम 16 कि.मी. की दूरी तय करनी होगी। यह दूरी अधिकतम सीमा है, अतः मतदेय स्थलों का चयन इस प्रकार किया जाए कि मतदाताओं को यथासंभव कम दूरी तय करनी पड़े तथा सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूर्ण हों। साथ ही यह भी उल्लेख किया गया कि स्नातक एवं शिक्षक निर्वाचन क्षेत्रों के मतदाता को प्रायः अलग–अलग स्थानों पर जाकर मतदान करना पड़ता है जिससे उन्हें असुविधा होती है। इस बार इस असुविधा को दूर करने हेतु नगर निगम के वार्डवार एवं विकास खण्ड/नगर पंचायतवार मतदेय स्थलों की सूची प्रस्तावित की गई है ।जनपद लखनऊ में उत्तर प्रदेश विधान परिषद द्विवार्षिक निर्वाचन हेतु कुल 119 मतदान केंद्र तथा शिक्षक निर्वाचन के लिए 119 मतदेय स्थल एवं स्नातक निर्वाचन के लिए 122 मतदेय स्थल प्रस्तावित किए गए हैं। बैठक में निर्देशित किया गया कि विधानसभावार प्रस्तावित मतदेय स्थलों की सूची राजनैतिक दलों को उपलब्ध कराई जाए और उनसे शीघ्र सुझाव प्राप्त किए जाएं। साथ ही अपेक्षा की गई कि अगली बैठक से पूर्व सभी राजनैतिक दल प्रस्तावित मतदेय स्थलों के सम्बन्ध में अपने सुझाव प्रस्तुत करें ।इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी/उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती शुभी सिंह, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट, समस्त निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी अभय किशोर सहित भारतीय जनता पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी एवं अन्य दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को रोजगार के जरिए आत्मनिर्भर बना रही सरकार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के निर्देश पर राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत गठित स्वयं सहायता समूहों, संकुल स्तरीय संगठनों व ग्राम स्तरीय संगठनों से जुड़ी महिलाओं को स्वावलंबी व आत्मनिर्भर निर्भर बनाने लिये प्रभावी व ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में प्रदेश के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों व अन्य प्रमुख स्थानो पर स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा प्रेरणा कैंटीन खोली गयी हैं। इससे स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं आत्मनिर्भर होने के साथ साथ, आमदनी बढ़ने से अपने घर –परिवार का आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक विकास और अधिक बेहतर ढंग से कर रही है। मरीजों सहित तीमारदारो को भी इन दीदी कैफे से ताजा भोजन और नास्ता मिल रहा है। महिलाओं की आर्थिक स्थिति को संवारने वाला यह महत्वपूर्ण कदम है। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मन्शा जाहिर की है कि इन प्रेरणा कैंटीनों में मोटे अनाज के व्यंजन भी बनाए जांय तो और अधिक बेहतर होगा। राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा समूहों की महिलाओं की आमदनी बढ़ाने के लिये हर सम्भव कदम उठाए जा रहे हैं और समूहों की महिलाओं को विभिन्न गतिविधियों से जोड़ कर उन्हें स्वावलंबी बनाया जा रहा है। प्रेरणा कैन्टीन संचालन हेतु सामुदायिक निवेश निधि ग्राम संगठन आजीविका निधि अथवा सी सी एल का उपयोग करवाते हुए कैंटीन हेतु उपयुक्त स्थान का चयन किया गया है स्वस्थ प्रदेश–खुशहाल प्रदेश की अवधारणा को साकार करते हुए सरकार महिलाओं के शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक उन्नयन के लिए पर विशेष रूप से फोकस कर रही है। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के निर्देश पर विभाग स्वावलंबन और रोजगार से महिलाओं को जोड़ रहा है। इसमें राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन योजना कारगर बन रही है।

निजीकरण और उत्पीड़नात्मक कार्रवाइयों के वापस होने तक संघर्ष जारी रखने का संकल्प

उप्र में सम्पूर्ण ऊर्जा क्षेत्र के निजीकरण की तैयारी के विरोध में बिजली कर्मियों ने प्रान्त भर में व्यापक विरोध प्रदर्शन कर व्यक्त किया आक्रोश

विश्ववार्ता ब्यूरो

लखनऊ। विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति, उत्तर प्रदेश ने आरोप लगाया है कि यद्यपि अभी पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम और दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम के निजीकरण की बात खुलकर की जा रही है किंतु वस्तुतः प्रदेश सरकार संपूर्ण ऊर्जा क्षेत्र का निजीकरण करने की तैयारी कर रही है।

संघर्ष समिति के केंद्रीय पदाधिकारियों ने आज यहां कहा कि 220 केवी और इससे अधिक क्षमता के विद्युत उपकेंद्रों और लाइनों का कार्य टी बी सी बी प्रक्रिया के तहत देने का निर्णय वस्तुतः पूरे ट्रांसमिशन सेक्टर के निजीकरण का राजमार्ग है। 100 करोड रुपए की लागत से अधिक की ट्रांसमिशन परियोजनाओं पहले ही टी बी सी बी प्रक्रिया के तहत निजी घरानों को दी जा रही हैं। उत्पादन के क्षेत्र में जहां उत्तर प्रदेश में बिजली की मांग लगभग 31000 मेगावॉट है वहां उत्तर प्रदेश का सरकारी क्षेत्र का कुल उत्पादन इसका पांचवा हिस्सा लगभग 6000 मेगावॉट है। प्रदेश में नई बिजली परियोजनाएं बड़े पैमाने पर निजी घरानों को पहले ही दी जा चुकी है। अब प्रदेश के सबसे बड़े आनपारा और ओबरा ताप बिजली घर के एक्सटेंशन प्रोजेक्ट को ज्वाइंट वेंचर में मेजा थर्मल प्राइवेट को देना उत्पादन निगम के समाप्ति की तैयारी है। निजीकरण के विरोध में चल रहे आंदोलन के लगातार 286 वें दिन आज बिजली कर्मचारियों, संविदा कर्मियों , जूनियर इंजीनियरों और अभियंताओं ने प्रदेश के समस्त जनपदों और परियोजनाओं पर जोरदार विरोध प्रदर्शन कर अपना आक्रोश व्यक्त किया। बिजली कर्मियों ने संकल्प लिया कि जब तक निजीकरण का निर्णय निरस्त नहीं किया जाता और समस्त उत्पीड़नात्मक कार्यवाहियां वापस नहीं ली जाती संघर्ष जारी रहेगा।

संघर्ष समिति के केन्द्रीय पदाधिकारियों ने कहा कि शीर्ष प्रबन्धन की निजी घरानों के साथ मिलीभगत है और साढ़े नौ माह से निजीकरण न कर पाने के कारण हताश प्रबंधन बिजली कर्मियों का लगातार उत्पीड़न कर रहा है।

संघर्ष समिति ने कहा कि उत्पीड़न का उद्देश्य बिजली कर्मियों का मनोबल तोड़ना है किंतु बिजली कर्मी किसी कीमत पर निजीकरण स्वीकार नहीं करेंगे। संघर्ष समिति ने कहा कि उत्पीड़न की कार्यवाहियां मुख्यतया निम्नवत हैं। फेशियल अटेंडेंस के नाम पर लगभग लगभग 10 हजार बिजली कर्मचारियों का लगातार चौथे माह भी वेतन नहीं दिया गया है। कार्य करने के बाद भी फेशियल अटेंडेंस जैसे विवादास्पद तकनीकी बिंदु को लेकर वेतन रोकना घोर निंदनीय है। सितंबर अक्टूबर का महीना हिंदुओं के सबसे बड़े त्योहारों का महीना है। ऐसे में वेतन को रोक रखना उत्पीड़न की पराकाष्ठा है।

संघर्ष समिति की मांग है कि निजीकरण के नाम पर 55 साल की उम्र और डाउन साइजिंग के नाम पर हटाये गये सभी संविदा कर्मी बहाल किये जाय। उत्पीड़न की दृष्टि से बिजली कर्मियों के किये गये सभी ट्रांसफर निरस्त किये जाय। उत्पीड़न के नाम पर स्टेट विजिलेंस की जांच कराकर शीर्ष पदाधिकारियों के विरुद्ध की गई फर्जी एफ आई आर वापस ली जाए। रियायती बिजली की सुविधा समाप्त करने की दृष्टि से धमकी देकर जोर जबरदस्ती से स्मार्ट मीटर लगाने की कार्यवाही तत्काल बन्द की जाय।

आज वाराणसी, आगरा, मेरठ, कानपुर, गोरखपुर, मिर्जापुर, आजमगढ़, बस्ती, अलीगढ़, मथुरा, एटा, झांसी, बांदा, बरेली, देवीपाटन, अयोध्या, सुल्तानपुर, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बुलंदशहर, नोएडा, गाजियाबाद, मुरादाबाद, हरदुआगंज, जवाहरपुर, परीक्षा, पनकी, ओबरा, पिपरी और अनपरा में मुख्यतया बड़ी विरोध सभा और प्रदर्शन किया गया।

भाजपा सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद किया : अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद कर दिया है। भाजपा की गलत नीतियों ने छात्रों, नौजवानों का भविष्य खराब कर दिया है। शिक्षा के साथ ऐसा खिलवाड़ कभी नहीं हुआ जैसा भाजपा सरकार में हो रहा है। अखिलेश यादव ने कहा कि अब-जब मुख्यमंत्री एसआईआर की तर्ज पर विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में टीआईआर (थ्रो इन्वेस्टीगेशन रिपोर्ट) लाने का आदेश दे रहे है तो सभी विश्वविद्यालयों के वाइस चांसलर की भी जांच हो, जो संगी साथियों की पर्ची के लेनदेन से पदों पर बैठे है। विश्वविद्यालयों के वित्तीय अनियमितताओं और परीक्षा घोटालों की भी जांच हो। शिक्षकों की नियुक्तियों में आरक्षण घपले की जांच हो। विश्वविद्यालयों में इस मामले की भी जांच हो कि किस तरह से नॉट फाउण्ड सूटेबल (एन.एफ.एस.) को पीडीए के खिलाफ हथियार की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। साथ ही विश्वविद्यालयों की मान्यता और प्रवेश प्रक्रिया की गड़बड़ी की भी पड़ताल हो। छात्रवृत्ति योजनाओं में हुए घपलों की जांच हो। इसके साथ ही फर्जी डिग्री विवाद और निजी विश्वविद्यालयों में लगे सत्ताधीशों के काले धन की जांच हो। अखिलेश यादव ने कहा कि अच्छा हो कि जांच की निष्पक्षता, विश्वसनीयता और पारदर्शिता का आदर्श प्रस्तुत करने के लिए जांच वहां से शुरू हो।

श्रीराममंदिर अयोध्या के नये न्यासी बने कृष्णमोहन

अयोध्या। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र की आज सम्पन्न बैठक में हरदोई के निवासी पूर्व प्रशासनिक अधिकारी कृष्णमोहन जी को नया न्यासी नियुक्त किया गया है। कृष्णमोहन जी हरदोई जनपद के शाहाबाद तहसील अन्तर्गत ग्राम सिकन्दरपुर बाजार, मजरा चन्द्रपुर के मूल निवासी हैं और वर्तमान में हरदोई शहर में निवास करते हैं। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से Geology में M.Sc. करने के उपरांत परमाणु ऊर्जा विभाग में वैज्ञानिक पद पर कुछ वर्षो तक कार्य किया। तत्पश्चात 1978 में भारतीय वन सेवा में चयन होने के बाद महाराष्ट्र राज्य में वन विभाग के विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए A.P.C.C.F के पद से 2012 में सेवानिवृत्त हुए तथा 2012 से हरदोई में निवास करते हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में सक्रिय भूमिका में रहते हुए कृष्णमोगन जी नेराष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर संघ चालक, जिला संघ चालक एवं अवध प्रान्त के प्रांत संघचालक के दायित्व का निर्वहन किया। वर्तमान में आप 2024 से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के क्षेत्र संघचालक के दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

रिश्वत लेने के आरोपों में फंसे प्रतापगढ़ सीएमओ कार्यालय के लिपिक निलंबित

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को नौकरी से बर्खास्त करने के आदेश दिए

● डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक के निर्देश पर हुई कार्रवाई

विश्ववार्ता ब्यूरो

लखनऊ। रिश्वत लेने के आरोपों में फंसे प्रतापगढ़ के मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय (सीएमओ) में तैनात आशुलिपिक राहुल कुमार पटेल को निलंबित कर दिया गया है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक के निर्देश पर यह कार्यवाही हुई है। जबकि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी आलोक श्रीवास्तव को नौकरी से बर्खास्त करने के आदेश दिए हैं। सीएमओ की तरफ से उसे नौकरी से बर्खास्त करने की कार्रवाई शुरू कर दी गई है।सोमवार को दोपहर करीब 1.15 बजे प्रयागराज की एंटी करप्सन टीम ने सीएमओ कार्यालय में तैनात आशुलिपिक राहुल कुमार पटेल और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी आलोक श्रीवास्तव को गिरफ्तार किया था। उनके जिला कारागार गोरखपुर में निरूद्धीकरण की कार्यवाही की गयी है।डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने घटना को गंभीरता से लिया है। उन्होंने तत्काल प्रभाव से आशुलिपिक राहुल को निलंबित करने के आदेश दिए। जिसके बाद उन्हें निलंबित कर दिया गया है। साथ ही अनुशासनिक कार्यवाही संस्थित की गई है। प्रयागराज में अपर निदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण आरोपों की जांच करेंगे। जमानत के बाद निलंबित राहुल अपर निदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, प्रयागराज मण्डल प्रयागराज में सम्बद्ध रहेंगे।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्वास्थ्यकर्मियों की तैनाती होगी

लखनऊ। कुशीनगर के खड्डा रेता क्षेत्र के शिवपुर में स्थापित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की दशा सुधारी जाएगी। उसमें स्वास्थ्यकर्मियों की तैनाती की जाएगी। इसमें किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी ।डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज न मिलने की मीडिया खबरों का संज्ञान लिया है। उन्होंने कहा कि यह गंभीर मामला है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्वास्थ्यकर्मियों की तैनाती न होना जिले के अधिकारियों की लापरवाही को भी उजागर करता है। अधिकारी पर्यवेक्षणीय दायित्व को ठीक से नहीं निभा रहे हैं। उसमें शिथिलता बरत रहे हैं। प्रकरण काफी गंभीर है। इसकी जांच कराई जाएगी। दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि विभाग की छवि को धूमिल करने वालों पर कठोर कार्रवाई की जाएगी।

अहर्निश प्रासंगिक हैं युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ के विचार

● पुण्यतिथि आश्विन कृष्ण तृतीया पर बुधवार को गोरखनाथ मंदिर में सीएम योगी की अध्यक्षता में होगी श्रद्धांजलि सभा

गोरखपुर। कर्ता के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करने, विरासत पर गौरव की अनुभूति करने और गुरु के प्रति सम्मान प्रकट करने की सनातनी परंपरा की संवाहक गोरक्षपीठ में प्रतिवर्ष स्मृतिशेष गुरुजन की स्मृति में अध्यात्म और राष्ट्रीयता के सुर गुंजित होते हैं। अवसर होता है युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज और राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि पर साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह का। इस वर्ष ब्रह्मलीन महंतद्वय की स्मृति में श्रीमद्भागवत महापुराण कथा 4 सितंबर से और समाज व राष्ट्र को प्रभावित करने वाले समसामयिक विषयों पर चिंतन–मंथन के सांगोष्ठिक कार्यक्रम 5 सितंबर से जारी हैं। इस साप्ताहिक कार्यक्रम के तहत आश्विन कृष्ण तृतीया पर 10 सितंबर (बुधवार) को ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 56वीं पुण्यतिथि पर तथा आश्विन कृष्ण चतुर्थी पर 11 सितंबर (गुरुवार) को ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 11वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन गोरक्षपीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में किया जाएगा। पुण्य स्मरण का यह कार्यक्रम गोरखनाथ मंदिर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में होगा जहां देशभर के प्रमुख संतजन उपस्थित रहेंगे। पुण्यतिथि समारोह में बुधवार को ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ की स्मृतियों के जीवंत होने के इस अवसर पर यह जानना भी प्रासंगिक है कि उन्हें युगपुरुष क्यों कहा जाता है। भौतिक विद्यमानता न होने के बावजूद जो व्यक्तित्व अपने कार्यों–विचारों से अपने बाद की पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते हैं, सही अर्थों में युगपुरुष होते हैं। कारण, हरेक कालखंड में उनके बताए मार्गों, विचारों और आदर्शों की प्रासंगिकता रहती है।

स्वच्छता अभियान के साथ सौंदर्यीकरण पर विशेष बल

विश्ववार्ता ब्यूरो

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस 17 सितंबर से महात्मा गांधी जयंती 2 अक्टूबर तक प्रदेशभर में "स्वच्छता ही सेवा 2025" पखवाड़ा मनाया जाएगा। इसके लिए नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने राजधानी स्थित संगम सभागार में विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की और स्वच्छता पखवाड़े को उत्सव की तरह मनाने के निर्देश दिए। मंत्री श्री शर्मा ने कहा कि स्वच्छता केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं बल्कि जनभागीदारी से चलने वाला सामाजिक आंदोलन है। उन्होंने सभी नगर निगमों और निकायों को वार्ड स्तर पर विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। इसके तहत बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, स्कूल-कॉलेज, रामलीला स्थल और सार्वजनिक जगहों पर विशेष सफाई अभियान चलाया जाएगा। मंत्री श्री शर्मा ने खास तौर पर "एक पेड़ मां के नाम" कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर सफल बनाने के साथ वार्डवार पूरी क्षमता से स्वच्छता अभियान चलाए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी नगर निगम के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि वे अपने नगर निगम क्षेत्र के साथ ही अपने समीपवर्ती नगर पंचायतों में अपनी मशीनरी भेजकर विशेष स्वच्छता अभियान चलाएंगे। बैठक के दौरान मंत्री श्री शर्मा ने कहा कि पंद्रह दिन के इस विशेष अभियान में प्रारंभ के दस दिन सघन स्वच्छता पर और अंतिम के पांच दिन सुशोभन/सुंदरीकरण पर बल दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस दौरान वृक्षारोपण, मियावाकी,एक पेड़ मां के नाम, नमो पार्क की स्थापना,दीवालों की पेंटिंग तथा चौराहों का सुंदरीकरण आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। प्रमुख सचिव नगर विकास अमृत अभिजात ने बताया कि स्वच्छता पखवाड़ा के प्रथम दिन मा. मुख्य मंत्री जी , मंत्रीगण , जनप्रतिनिधि,अधिकारी , स्वयंसेवी संस्थाएं और स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी श्रमदान कर स्वच्छता अभियान का भव्यता के साथ शुभारंभ करेंगे। नगरी निकाय के निदेशक अनुज झा ने बताया कि पखवाड़े के दौरान जागरूकता रैली, जनसंवाद, क्लीन ग्रीन उत्सव, चिन्हित सी टी यू का विलोपन, सफाई मित्र सुरक्षा शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा कोई भी गरीब बच्चा : संदीप सिंह

लखनऊ। योगी सरकार ने गरीब बच्चों को निजी स्कूलों में प्रवेश दिलाने की व्यवस्था को संशोधित करते हुए अब और कड़े नियमों तथा सख़्त निगरानी के साथ लागू कर दिया है। आवेदन प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन होगी और इसके लिए माता-पिता व बच्चे का आधार कार्ड अनिवार्य रहेगा। पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश की आयु सीमा 3 से 6 वर्ष और कक्षा-1 के लिए 6 से 7 वर्ष तय कर दी गई है। पहली बार जिलास्तर पर क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण समिति गठित की गई है, जिसकी अध्यक्षता डीएम करेंगे। इस समिति में दर्जन भर से अधिक जिला स्तरीय अधिकारी सदस्य होंगे, जो पूरी प्रक्रिया की निगरानी करेंगे। इतना ही नहीं, प्रवेश आवेदन एवं प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होने वाले विवादों का त्वरित निस्तारण सीडीओ की अध्यक्षता वाली चार सदस्यीय विवाद समाधान समिति करेगी।बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह का कहना है कि सरकार की यह पहल शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने कहा कि अब कोई भी गरीब बच्चा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा। यह सरकार की जिम्मेदारी है कि हर वर्ग को समान अवसर मिले।

जनशिकायतों के निस्तारण में योगी सरकार का देवीपाटन मंडल अव्वल

विश्ववार्ता ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की निगरानी से जन शिकायतों के निस्तारण की प्रक्रिया में अभूतपूर्व तेजी आई है। योगी सरकार के आईजीआरएस पोर्टल से शिकायतों के समाधान में न केवल पारदर्शिता आई है, बल्कि पीड़ितों को त्वरित न्याय भी मिल रहा है। योगी सरकार ने अपने कार्यकाल में प्रशासनिक सुधारों और तकनीकी उपायों को अपनाकर शिकायतों के निस्तारण को सुनिश्चित किया है। वहीं, आईजीआरएस की अगस्त माह की रिपोर्ट में देवीपाटन मंडल ने जन शिकायतों के निस्तारण में बाजी मारी है और प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त किया है। इसी तरह प्रदेशभर में मीरजापुर मंडल ने दूसरा और अलीगढ़ मंडल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

देवीपाटन मंडलायुक्त शशि भूषण लाल सुशील ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप जनशिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण किया जा रहा है। इसके लिए देवीपाटन मंडल के जिलों क्रमशः श्रावस्ती, बहराइच, गोंडा और बलरामपुर में जनशिकायतों के पारदर्शी और त्वरित समाधान के लिए कई बिंदुओं पर लगातार काम किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि जिलों में जनशिकायतों की निस्तारण की रिपोर्ट की लगातार मॉनीटरिंग की जाती है। मंडलायुक्त ने बताया कि वह खुद मंडल के सभी जिलों के जनशिकायतों के निस्तारण के पहलुओं की मॉनीटरिंग करते हैं। इसके साथ ही रेंडम पांच शिकायतकर्ता से मंडलायुक्त कार्यालय से फीडबैक लिया जाता है ताकि यह पता चल सके कि पीड़ित की शिकायत पर वास्तविकता में एक्शन लिया गया है या फिर रिपोर्ट ही लगायी गयी है। इसके साथ ही हर माह जनशिकायतों के मामलों की विभागीय आख्या की जांच की जाती है। यही वजह है कि देवीपाटन मंडल ने जन शिकायतों के निस्तारण में प्रदेश भर में पहला स्थान प्राप्त किया है। मंडलायुक्त ने बताया कि अगस्त माह की आईजीआरएस रिपोर्ट में दवीपाटन मंडल को पूर्णांक 120 में से 105 अंक प्राप्त हुए हैं और सफलता दर 87.50 प्रतिशत है। योगी सरकार द्वारा लांच आईजीआरएस (एकीकृत शिकायत निवारण प्रणाली) पोर्टल नागरिकों की शिकायतों के समाधान के लिए एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर कई सुधारों के बाद यह अत्यधिक प्रभावी साबित हुआ है। आईजीआरएस की अगस्त की रिपोर्ट के अनुसार मीरजापुर मंडल ने जन शिकायतों के निस्तारण में प्रदेशभर में दूसरा प्राप्त किया है। मीरजापुर मंडलायुक्त ने बताया कि अगस्त माह की आईजीआरएस रिपोर्ट में मीरजापुर मंडल को पूर्णांक 120 में से 96 अंक प्राप्त हुए हैं और सफलता दर 80 प्रतिशत है। इसी तरह अलीगढ़ मंडल ने जनशिकायतों के निस्तारण में पूरे प्रदेश में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। अलीगढ़ मंडलायुक्त संगीता सिंह ने बताया कि अगस्त माह की आईजीआरएस रिपोर्ट में अलीगढ़ मंडल को पूर्णांक 120 में से 93 अंक प्राप्त हुए हैं और सफलता दर 77.50 प्रतिशत है।

समीक्षा बैठक सेवा पखवाड़ा के दौरान स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान चलायेगा स्वास्थ्य विभाग : ब्रजेश पाठक

स्वास्थ्य केन्द्रों पर उपलब्ध करायी जायेगी विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवाएं

विश्ववार्ता ब्यूरो

● अभियान के दौरान स्वच्छता, रक्तदान, स्वास्थ्य परीक्षण सहित कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम चलाये जायेंगे
● सभी जिलों के लिए नामित किये जायेगे नोडल अधिकारी

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्म दिवस 17 सितम्बर के शुभ अवसर पर से गांधी जयन्ती 02 अक्टूबर तक मनाये जाने वाले सेवा पखवाड़ा के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किये जायेगे। इसमूं स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम, रक्तदान शिविर का आयोजन आदि प्रमुख है। इन सभी कार्यक्रमों में स्वास्थ्य विभाग की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य विभाग, सेवा पखवाड़े के दौरान ''स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार'' अभियान चलायेगा। यह कार्यक्रम प्रदेश के आम जनमानस को समर्पित होने के साथ ही नारी स्वास्थ्य पर केन्द्रित होगा। यह जानकारी प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने स्वास्थ्य विभाग की एक समीक्षा बैठक के दौरान दी। उन्होंने बताया कि 17 सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2025 के मध्य स्वास्थ्य विभाग द्वारा चरणबद्ध तरीके से कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम संचालित होगे। इसमें प्रदेश की समस्त स्वास्थ ईकाइयों पर स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जायेगा। इन स्वास्थ्य शिविरों में महिलाओं की विभिन्न स्वास्थ्य

संबंधी समस्याओं की जांच की जायेगी। रोस्टर के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों पर विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवायें भी उपलब्ध करायी जायेगी। सभी जिला स्तरीय चिकित्सालयों मेडिकल कालेजों और विशिष्ट चिकित्सालयों में रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि सभी जनपदों के लिए नोडल अधिकारी नामित कर निरीक्षण एवं अनुश्रवण कराया जायेगा।

उपमुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिये कि रक्तदान अभियान के दौरान सभी चिकित्सालय भण्डारण क्षमता के अनुरूप ही रक्त का संग्रहण कराये। रक्तदाताओं की संख्या अधिक होने पर उनका पंजीकरण कराकर भविष्य के लिए उनका विवरण सुरक्षित रख ले। स्वास्थ्य शिविरों में निजी क्षेत्रों की इकाइयों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाये। स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन हेतु स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, ग्राम्य विकास, पंचायती राज आदि विभागों से समन्वय स्थापित कर आशा, आंगनबाड़ी, एनम, सीएचओ की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाये। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि सभी स्वास्थ्य शिविरों का उद्घाटन उपलब्ध स्थानीय, मा0 सांसदों, विधायकों व अन्य उपलब्ध जनप्रतिनिधिगण से कराया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि सेवा पखवाड़ा 17 सितम्बर से प्रारम्भ होगा। उसके पूर्व सभी स्वास्थ्य इकाईयों पर साफ सफाई से संबंधित कार्य पूर्ण कर दिया गया है। समीक्षा बैठक में प्रमुख सचिव चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा स्वास्थ्य पार्थीसेन शर्मा, महानिदेशक चिकित्सा शिक्षा श्रीमती किंजल सिंह, महानिदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य रतनपाल सिंह सुमन सहित स्वास्थ्य विभाग के सभी प्रमुख उच्चाधिकारीगण के साथ ही सभी मेडिकल कालेजों के प्रधानाचार्यों के साथ सभी जिला के सीएमओ वर्चुअली जुडे.थे।

एक नजर

फेफड़ों की रेयर बीमारी से ग्रस्त मरीजों की बचाई पीजीआई ने जान

लखनऊ। संजय गांधी पीजीआई (एसजीपीजीआईएमएस) में पल्मोनरी एल्वियोलर प्रोटीनोसिस (पीएपी) जैसी अल्ट्रा-रेयर फेफड़ों की बीमारी से जूझ रहे दो मरीजों की जान बचाई गई। यह रोग बेहद दुर्लभ है, जिसमें मरीज को साधारण कामों के दौरान भी सांस फूलने, खांसी व थकान की गंभीर समस्या होती है और अक्सर इसका गलत निदान अस्थमा या टीबी जैसी बीमारियों के रूप में हो जाता है। संस्थान के पल्मोनरी मेडिसिन विभाग ने एक माह के भीतर दो महिलाओं का सफलतापूर्वक उपचार किया। यह उपलब्धि प्रो. अजमल खान की देखरेख में एडिशनल प्रोफेसर डॉ. मानसी गुप्ता के नेतृत्व में डॉ. प्रशांत ए.पी. (सहायक प्रोफेसर) और डॉ. यश जगधारी (सहायक प्रोफेसर) की टीम ने हासिल की। इन उच्च जोखिम वाली प्रक्रियाओं में कार्डियक एनेस्थीसिया टीम का अहम योगदान रहा, जिसका नेतृत्व एडिशनल प्रोफेसर डॉ. अमित रस्तोगी ने किया। टीम में डॉ. पल्लव सिंह (सहायक प्रोफेसर) और डॉ. आरिब शेख (सहायक प्रोफेसर) शामिल रहे। इस दौरान प्रो. प्रभात तिवारी, प्रमुख कार्डियक एनेस्थीसिया विभाग, और प्रो. एस.के. अग्रवाल, प्रमुख कार्डियोथोरेसिक व वैस्कुलर सर्जरी विभाग का भी मार्गदर्शन मिला।

हाफ डाला की टक्कर से पौत्र की मौत, बाबा घायल

लखनऊ। गोसाईगंज क्षेत्र में गुमटी नंबर पांच के समीप हाफ डाला वाहन ने बोलेरो में टक्कर मार दिया। टक्कर में पांच वर्षीय गोलू की मौत हो गई जबकि बच्चे का बाबा गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने टक्कर मारने वाले वाहन को कब्जे में लेकर चालक की तलाश शुरू कर दिया है। इंस्पेक्टर गोसाईगंज बृजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मंगलवार को दोपहर लगभग बारह बजे गुमटी नंबर पांच के समीप सुल्तानपुर से लखनऊ मार्ग पर हाफ डाला वाहन के अज्ञात चालक ने बोलेरो में टक्कर मार दिया। टक्कर से गोसाईगंज क्षेत्र के ही कबीरपुर निवासी स्वर्गीय सतीश के दो वर्षीय बच्चे गोलू की मौत हो गई जबकि बोलेरो के चालक मृतक बच्चे के बाबा रामकिशोर गंभीर रूप से घायल हो गए। चालक राम किशोर को इलाज के लिए गोसाईगंज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां से उन्हें सिविल अस्पताल रेफर कर दिया गया। टक्कर मारने आले हाफ डाला का चालक वाहन छोड़ कर भाग निकला। वाहन को पुलिस ने कब्जे में ले लिया। पुलिस ने बच्चे के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर चालक की तलाश शुरू कर दिया।

स्कूल में बंदरों का आतंक, बच्चों में दहशत

निगोहां। निगोहां-नगराम मार्ग स्थित ब्राइट स्टार्ट कान्वेंट स्कूल में इन दिनों बंदरों का आतंक बढ़ता जा रहा है। बंदर कक्षाओं में घुसकर बच्चों को डराने, टिफिन और बैग उठाकर ले जाने जैसी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। इससे जहां पढ़ाई बाधित हो रही है, वहीं बच्चों की सुरक्षा पर भी संकट मंडरा रहा है।मंगलवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक बंदर अचानक कक्षा में घुस गया। सभी बच्चे चीखने लगे और भागकर किनारे खड़े हो गए। इस दौरान कक्षा दो का एक छात्र सहमकर अपनी सीट पर ही घुटनों के बल खड़ा रह गया। बंदर ने बच्चे का बैग फाड़कर टिफिन निकाल लिया और कक्षा से भाग निकला। डर के मारे बच्चा जोर-जोर से रोने लगा।सूचना पर पहुंचे अभिभावकों ने वन विभाग को अवगत कराया। टीम मौके पर पहुंची और बंदरों को स्कूल परिसर से खदेड़ा। कासिमपुर निवासी जुगल किशोर, रामपुर के वीरेंद्र, डिग्घारी के कुलदीप पाल, आलोक पाल, महेश और दुर्गेन्द मिश्रा सहित कई अभिभावकों ने बताया कि एक महीने से स्कूल में बंदरों का आतंक जारी है। बंदरों के डर से कई परिवार बच्चों को स्कूल भेजना बंद कर चुके हैं। अभिभावकों का कहना है कि शिकायत करने पर स्कूल प्रशासन ने खुद को भी असहाय बताया और वन विभाग पर जिम्मेदारी डाल दी।स्कूल इंचार्ज अनुजा ने बताया कि स्कूल में 250 बच्चे पढ़ते हैं। कटखने बंदर लगातार कक्षाओं में घुस आते हैं और टिफिन छीनकर भाग जाते हैं। इससे बच्चों के मन में डर बैठ गया है और पढ़ाई प्रभावित हो रही है।वन डिप्टी रेंजर अभिषेक चौधरी ने बताया कि टीम मौके पर गई थी और बंदरों को भगाया गया है। यह बंदरों की ऐसी किस्म है, जिन्हें पकड़ने की जिम्मेदारी वन विभाग की नहीं है। इसका प्रबंधन ग्राम प्रधान और नगर पंचायत को करना चाहिए।ग्रामीणों और अभिभावकों ने प्रशासन से मांग की है कि स्कूलों व रिहायशी क्षेत्रों से बंदरों का आतंक खत्म करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं, ताकि बच्चों को सुरक्षित माहौल मिल सके।

साइबर जालसाजों ने खाते से उड़ाई लाखों की नगदी

पीजीआई। कोतवाली क्षेत्र में रहने वाले युवक को साइबर जलसाजो ने फोन कर खुद को बैंक कर्मी बता केवाईसी अपडेट करने के नाम पर बैंक खाते की जानकारी हासिल कर खाते से लाखों की नगदी पार कर दी । मामले की जानकारी होने पर पीड़ित ने साइबर सेल समेत स्थानीय थाने में लिखित शिकायत दी । पीड़ित की शिकायत पर सोमवार मुकदमा दर्ज कर पुलिस अग्रिम कार्यवाही में जुटी है। पीजीआई थाना क्षेत्र के वृन्दावन योजना सेक्टर - 6ए/856 में अपने परिवार संग रहने वाले व बरनाला पंजाब में एक निजी कंपनी जोमैटो में काम करने वाले उत्कर्ष पाण्डेय की माने तो रायबरेली रोड के साउथ सीटी स्थित स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया में उनका बचत खाता है । बीती 24 जुलाई को जालसाजो ने फोन कर उन्हें खुद को स्टेट बैंक का कर्मचारी बता केवाईसी अपडेट कराने की बात कह खाते की जानकारी हासिल कर लगभग 3 लाख 64 हजार रूपये ऑनलाइन ट्रांसफर कर लिए ।जानकारी होने पर पीड़ित ने साइबर सेल समेत स्थानीय पीजीआई थाने में मामले की लिखित शिकायत दर्ज कराई । सोमवार मुकदमा दर्ज कर पीजीआई पुलिस मामले जाँच पड़ताल में जुटी हैं ।

दिल्ली से काठमांडू जा रही इंडिगो एयरलाइन्स की उड़ान को आपात स्थिति में लखनऊ एयरपोर्ट पड़ा उतरना

लखनऊ। मंगलवार दोपहर दिल्ली से काठमांडू जा रही इंडिगो एयरलाइंस की अंतर्राष्ट्रीय उड़ान को आपात स्थिति में लखनऊ एयरपोर्ट पर उतारना पड़ा। एयरपोर्ट सूत्रों ने बताया कि नेपाल में सोशल मीडिया बैन होने से चल रहे बवाल की वजह से काठमांडू एयरपोर्ट पर मंगलवार को विमान संचालन बंद कर दिया गया। इसकी वजह से अन्य स्थानों से काठमांडू जाने वाले विमान वहां एयरपोर्ट पर नहीं उतर सके, बल्कि उन्हें अन्य एयरपोर्ट पर डायवर्ट कर दिया गया। जिसके चलते मंगलवार को दिल्ली से काठमांडू पहुंची इण्डिगो की उड़ान संख्या 6ई-1153 दोपहर लगभग 2:30 बजे काठमांडू एयरपोर्ट के रनवे पर नहीं उतर सकी, बल्कि उसे लखनऊ डायवर्ट कर दिया गया। जिसकी वजह से वह काठमांडू एयरपोर्ट के ऊपर हवा में चक्कर लगाने के बाद लखनऊ चली आयी। विमान में उस समय कुल 160 यात्री और छह चालक दल के सदस्य सवार थे। इसी तरह दुबई से काठमांडू जा रही फ्लाई दुबई की उड़ान एफजेड 539 को डायवर्ट कर लखनऊ एयरपोर्ट पर दोपहर 3.25 बजे उतारा गया। वहीं मुम्बई से काठमांडू जा रही इंडिगो की उड़ान 6ई-1157 को डायवर्ट कर लखनऊ उतारा गया और फिर इसे दिल्ली भेज दिया गया। जबकि बैंकाक के डॉन मुआंग अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से काठमांडू जा रही थाई लायन एयर की उड़ान टीएलएम- 220 को दोपहर 3.05 बजे लखनऊ में उतारा गया।फिलहाल अभी यह उड़ने लखनऊ एयरपोर्ट पर खड़ी है। अधिकारियों ने बताया कि एयर ट्रैफिक कंट्रोल से समन्वय कर विमान को सुरक्षित रूप से लखनऊ एयरपोर्ट पर लैंड कराया गया। यात्रियों की सुरक्षा को लेकर एयरपोर्ट प्रशासन पूरी तरह सतर्क रहा। सभी विमानों के यात्री और चालक दल सुरक्षित हैं। एयरलाइन ने यात्रियों को हर संभव सुविधा मुहैया कराने का आश्वासन दिया है। एयरपोर्ट सूत्रों के मुताबिक, काठमांडू एयरपोर्ट पर स्थिति सामान्य होने के बाद उड़ान आगे रवाना की जाएगी।

एक साल से बन रहा नादरगंज तिराहे पर ओवरब्रिज मंगलवार से आम जनमानस के लिए खोल दिया गया

लखनऊ। सरोजनीनगर स्थित नादरगंज तिराहे पर एक साल से बन रहा ओवर ब्रिज दोपहर से यातायात के लिए चालू कर दिया गया। लखनऊ कानपुर एलिवेटेड एक्सप्रेसवे को नादरगंज तिराहे पर नया ओवर ब्रिज मंगलवार को दोपहर से यातायात के लिए खोल दिया गया। इस पुल के खुलने से क्षेत्र में लगने वाले जाम की समस्या का समाधान हो गया है ।पीएनसी कंपनी द्वारा एक साल से अमौसी नादरगंज फैक्ट्री एरिया के लिए लगने वाले जाम से निजात दिलाने के लिए फ्लालाईओवर बनाया जा रहा था। पीएनसी द्वारा निर्मित ओवर ब्रिज से कानपुर - लखनऊ आने वाले वाहन सीधे निकल सकते हैं ।अमौसी औद्योगिक क्षेत्र या नादरगंज फैक्ट्री एरिया जाने वाले वाहनों के लिए नीचे का मार्ग उपलब्ध किया गया है। पहले यहां कानपुर से आने वाले वाहनों के लिए सड़क किनारे अस्थाई मार्ग बना था.।, हल्की बारिश होने पर मार्ग गड्ढे में तब्दील हो जाते थे। जिससे रोज जाम की स्थिति बनी रहते थी । नये ओवर ब्रिज के खुलने से दोनों तरफ यातायात समान हो गया है । तिराहे पर तैनात ट्रैफिक पुलिस को भी राहत मिली हुई है।,स्थानीय लोगों और वाहन चालकों के अनुसार अब समय और ईंधन की भी बचत होगी। करीब एक साल से निर्माणाधिन यह ओवर ब्रिज सरोजनीनगर नादरगंज क्षेत्र के लिए जाम से मुक्ति का कारगर समाधान बन गया है।

रिटायर्ड असिस्टेंट इंजीनियर की गोली मारकर हत्या

नौकरानी के पति ने दोनाली बंदूक से सीने पर चलाई गोली

विश्ववार्ता संवाददाता

लखनऊ। राजधानी में रिटायर्ड असिस्टेंट इंजीनियर की गोली मारकर हत्या कर दी गई। वारदात उनकी नौकरानी के पति ने की है। उसने घर में घुसकर अपनी दुनाली बंदूक से उनके सीने पर से गोली मारी है। रिटायर्ड एई की पत्नी प्रिंसिपल पद से रिटायर्ड हैं। मामला मड़ियांव थाना क्षेत्र का है।

मृतक की पहचान दिलकश विहार में रहने वाले अरुण कुमार मिश्रा (68) के रूप में हुई है। वह 8 साल पहले पीडब्ल्यूडी से रिटायर हुए थे। उनका बेटा विदेश में रहकर जॉब करता है। पुलिस और फोरेंसिक टीम घटनास्थल की जांच कर रही है। पुलिस के मुताबिक, घर में काम करने वाली नौकरानी रामा देवी के पति मनोज पांडे (40) ने गोली मारकर अरुण की हत्या की है।

मनोज बीकेटी थाना क्षेत्र के भैंसमऊ क्रॉसिंग का रहने वाला है। परिवार की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। मनोज को गिरफ्तार करने के लिए टीम लगाई गई है। अरुण के भतीजे नितिन मिश्रा ने बताया- चाचा पीडब्ल्यूडी से असिस्टेंट इंजीनियर पद से रिटायर हुए थे। करीब 15 साल से वह अकेले रह रहे थे। उनका बेटा अनुज मिश्रा अमेरिका में रहता है। चाची अंजू मिश्रा प्रिंसिपल पद से रिटायर हो चुकी हैं। वह लखनऊ में ही पति से अलग रहती हैं।

पिछले डेढ़ साल से नौकरानी रामा देवी अरुण के यहां काम कर रही थी। पुलिस के मुताबिक, रामा देवी 3 दिन से अरुण कुमार के घर पर रुकी थी। आरोपी मनोज पांडेय गॉर्ड की नौकरी करता है। उसके पास दुनाली लाइसेंसी बंदूक है। उसी से गोली चलाई, जो अरुण के सीने में जाकर लगी। रामा को पुलिस ने हिरासत में लिया है।

पुलिस हिरासत में उसने बताया है कि पति के साथ उसका मकान बनवाने को लेकर विवाद चल रहा है। इसकी वजह से उसका पति झगड़ा करने के लिए अरुण के घर आया था। उसने गोली रामा पर चलाई लेकिन मिस फायर होकर अरुण को सीने में गोली लग गई।

मामले में पुलिस का कहना है रमा देवी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। आरोपी पति को पकड़ने के लिए टीमें लगी हैं। इसके अलावा अवैध संबंधों पर भी जांच की जा रही है।

जल्द ही शुरू होगी लखनऊ में फिल्म बावर्ची खाना की शूटिंग : तनवीर हुसैन रिज़वी

विश्ववार्ता संवाददाता

लखनऊ। मंगलवार को क्रिएटिव फ़िल्म्स 16 सुभाष मार्ग, नियर केनरा बैंक, लखनऊ में क्रिएटिव फ़िल्म्स एंड टेलीविज़न अकादमी की ओर से एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया, जिसमें अकादमी ने अपनी पहली फीचर फ़िल्म ₹बावर्ची खानाः हेल्दी और अनहेल्दी रिश्ते₹ के निर्माण की आधिकारिक घोषणा की।

इस अवसर पर फिल्म के एक्सेक्युटिव प्रोड्यूसर तनवीर हुसैन रिज़वी ने जानकारी दी कि इस फ़िल्म की शूटिंग जल्द ही उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थलों पर की जाएगी। फ़िल्म के लेखक एवं निर्देशक चौधरी ज़िया इमाम ने कहा कि "यह फ़िल्म अपने आप में एक प्रयोगात्मक सिनेमा है, जो दर्शकों के दिलों को छुएगी और एक नये अंदाज़ में रिश्तों की परिभाषा सामने रखेगी।" लेखक और पत्रकार से फिल्ममेकर बने ज़िया इमाम ने बताया कि यह फिल्म इंटरनेशनल पैमाने पर रिलीज़ की जाएगी। इस अवसर पर फ़िल्म के को-प्रोड्यूसर शांति स्वरूप ने कहा कि लखनऊ की कहानी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रिलीज़ करने की तैयारी है। फिल्म के गाने रेडी है। जिनकी मुंबई में रिकॉर्डिंग होने वाली है।

इस फिल्म के क्रिएटिव प्रोड्यूसर और लखनऊ के मशहूर लेखक एस एन लाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा की कहानी बहुत मज़बूत है। कहानी में वो सारा माद्दा है। जो एक सशक्त कहानी में होना चाहिए। अब सारा मामला इसके ट्रीटमेंट पर निर्भर करेगा। फ़िल्म के क्रिएटिव डायरेक्टर परवेज़ ज़ैदी ने फिल्म के संदेश के बारे में बात करते हुए कहा कि फ़िल्म का मूल संदेश यह हैः "रिश्ते भी बावर्ची खाने के पकवान हैं – जो जैसा पकाओगे, वैसा ही जीवन में चखोगे।"

वहीं, लाइन प्रोड्यूसर दिलावर हुसैन ने कहा कि इस फ़िल्म के लिए कलाकारों का चयन उत्तर प्रदेश से ही किया जाएगा और बहुत जल्द ऑडिशन की प्रक्रिया शुरू होगी। फ़िल्म की शूटिंग शीघ्र ही आरम्भ होने वाली है। यह फ़िल्म अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप फिल्माई जाएगी, ताकि लखनऊ में निर्मित यह फ़िल्म अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सवों में सराही जा सके। इस फ़िल्म को गोवा, बर्लिन सहित कई प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सवों में प्रस्तुत किए जाने की योजना है। उल्लेखनीय है कि फ़िल्म के लेखक एवं निर्देशक चौधरी ज़िया इमाम की कई पुस्तकें अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों से प्रकाशित हो चुकी हैं, और अब वह सिनेमा के क्षेत्र में भी अपने हाथ आज़माएँगे। कार्यक्रम के अंत में एक्सेक्युटिव प्रोड्यूसर तनवीर हुसैन रिज़वी ने क्रिएटिव फ़िल्म्स एंड टेलीविज़न अकादमी की ओर से प्रेस कॉन्फ्रेंस में आये सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा किया। उन्होंने वरिष्ठ पत्रकार ताहिर हुसैन हाशमी का अलग से शुक्रिया अदा किया। इस अवसर पर राजश्री फिल्म प्रोडक्शन और मैगनम फिल्म के उत्तर प्रदेश के डिस्ट्रीब्यूटर प्रतिनिधि मंज़ूर अली भी मौजूद थेइनके अलावा प्रेस कॉन्फ्रेंस में रंगमंच के निर्देशक नईम खान, एडवोकेट सय्यद अली अख्तर और अभिनेता संदीप भी मौजूद रहे।

इकलौते पुत्र और दो पौत्र हादसे में खो चुका किशोरी का परिवार

राम दशरथ यादव

लखनऊ। कहते हैं ईश्वर का लिखा कभी टाला नहीं जा सकता। नियति को जो मंजूर है वह होकर रहेगा।शायद कुछ ऐसा ही लिखा था किशोरी लाल की किस्मत में। डेढ़ वर्ष पहले तक पूरा परिवार खुश था लेकिन आज उनके ऊपर दुख का जो पहाड़ टूटा उससे उनको सहारा देने वाला भी कोई नहीं बचा। राजधानी के गोसाईगंज क्षेत्र में स्थित कबीरपुर गांव में किशोरीलाल यादव रहते हैं। इकलौते बेटे का विवाह करने के बाद उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था।घर में जब पौत्र का जन्म हुआ तो परिवार की खुशियां और बढ़ गई। धीरे धीरे पहला पौत्र करीब पांच वर्ष का हो गया और घर में दूसरे पौत्र ने जन्म लिया। दूसरे पौत्र के जन्म से परिवार आनंदित हो उठा। इसी बीच परिवार पर ऐसा समय आया कि डेढ़ साल में किशोरी के घर में सहारा देने वाला भी कोई नहीं बचा। गत वर्ष अप्रैल महीने में किशोरी का इकलौता पुत्र सतीश जो गोसाईगंज पुत्र की दवा लेने गया था दुर्घटना का शिकार हो गया। दुर्घटना में सतीश और सतीश के मासूम पुत्र की दर्दनाक मौत हो गई। सतीश के दूसरे बेटे को देख कर किशोरी धीरे धीरे दुखों को भूलने लगे और दूसरे पौत्र को बुढ़ापे के सहारे के रूप में देखने लगे। मंगलवार को उस समय किशोरी लाल यादव का सहारे का वह सपना भी टूट गया जब एक हादसे मे उनके दूसरे पौत्र को भी मौत ने छीन लिया।

प्रेम विवाह की रंजिश में युवक की निर्मम हत्या

निगोहां। मोहनलालगंज थाना क्षेत्र के शंकर बक्श खेड़ा गांव निवासी 24 वर्षीय शनी रावत का शव मंगलवार सुबह निगोहां के गौतमखेड़ा गांव के पास बांक नाले में उतराता मिला। सोमवार शाम घर से निकले शनी की खून से लथपथ लाश देखकर हर किसी की आंखें नम हो गईं। शव के पास सड़क पर खून बिखरा पड़ा था और खून से सनी चप्पल भी बरामद हुई।मृतक शनी के पिता रामनरेश रावत ने बताया कि सोमवार देर शाम जब बेटे से बात हुई तो उसने कहा कि वह खुझौली चौराहे पर है और थोड़ी देर में घर आ रहा है। मगर वह घर नहीं लौटा। रात में कॉल रिसीव नहीं हुई और सुबह मोबाइल बंद मिला। सुबह जब सोशल मीडिया पर नाले में शव मिलने की सूचना मिली तो परिवार वहां पहुंचा। खून से लथपथ बेटे की लाश देख मां इंद्रानी और पत्नी साधना बेसुध होकर गिर पड़ीं।मृतक के परिजनों ने बताया कि डेढ़ वर्ष पूर्व शनी ने निगोहां क्षेत्र के मस्तीपुर गांव की एक युवती से कोर्ट मैरिज की थी। विवाह से युवती का परिवार बेहद नाराज था और लगातार शनी को धमकियां मिल रही थीं। मृतक के पिता ने युवती के भाई जीतू यादव, देवेश यादव उर्फ बोग्गा और जीतू के साले संतोष यादव के खिलाफ हत्या की तहरीर दी है।ग्रामीण बोले निर्दोष को मौत के घाट उतार दिया गया।निगोहां थाना क्षेत्र के गौतमखेड़ा गांव के ग्रामीणों ने बताया कि मंगलवार सुबह जब शव नाले में उतराता देखा गया तो गांव में सनसनी फैल गई। ग्रामीण अनिल यादव ने कहा, शनी शांत स्वभाव का लड़का था, कभी किसी से झगड़ा नहीं किया। प्रेम विवाह की रंजिश में निर्दोष की जान ले ली गई।वहीं एक अन्य ग्रामीण रामलखन ने कहा कि नाले के पास सड़क पर खून बिखरा था, साफ लग रहा था कि पहले उसकी हत्या की गई और फिर शव को नाले में फेंक दिया गया।

युवक की धारदार हथियार और ईटों से कुचलकर की गयी निर्मम हत्या

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में युवक की बेरहमी से की गयी हत्या से हड़कम्प मच गया है। थाना बन्थरा में पुलिस की निष्क्रियता सामने आयी है। बन्थरा क्षेत्र में जहाँ चोरी की घटनाएं बढ़ रहीं थी। वहीं अब हत्याओं का दौर पुनः चालू हो गया है। जब दबंग जान से मारने की धमकी देते है,तो पुलिस मौन बनकर तमाशबीन बन जाती है। जिससे ऐसी शर्मशार घटनाएं जन्म लेती हैं। धनुवापुर फैजाबाद के मूल निवासी अशोक शुक्ला फैजाबाद में रोड़वेज बस चालक है। उनका 26 वर्षीय बेटा कुनाल शुक्ला दादूपुर, बन्थरा स्थित न्यू डेस्टिन सिटी कॉलोनी में अपनी माँ सुधा और बड़े भाई सौरभ के साथ रहता है। वह दादूपुर में विवेक सिंह के साथ फाइनेंस की गयी गाडियों की किश्त न अदा होने वाली गाड़ियों को खीचंकर लाने की रिकवरी करता था। दादूपुर में स्थित स्वास्तिक एसोसियेट ऑफिस में कार्य करता था । सोमवार की शाम को जब सभी लोग अपने अपने घर चले गये, तो कुनाल सांय 09 बजे के बाद वहीं रुक गया । मंगलवार की सुबह 08 बजे जब ऑफिस की सफाई करने महिला कर्मी संगम थारू पहुंची, तो ऑफिस के अन्दर देखा कि कुनाल का शरीर खून से लथपथ पड़ा है, और फर्श पर काफी खून बिखरा हुआ है । संगम थारू ने घबड़ाकर इसकी सूचना विवेक सिंह को दी। तब तक यह खबर आग की भाँति फैल गयी और वहाँ भीड एकत्रित होने लगी । तत्काल पुलिस को इसकी सूचना दी गयी। सूचना पाकर बन्थरा पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर देखा कि कुनाल के सिर को कुचल कर बेरहमी से उसकी हत्या की गयी है । पुलिस ने घटनास्थल का मौका मुआयना करके शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जाँच कार्यवाही तेज कर दी गयी है।

महिला सुरक्षा एवं साइबर अपराध से बचाव के लिए चलाया गया अभियान

लखनऊ। पुलिस उपायुक्त दक्षिणी निपुण अग्रवाल के निर्देशन और अपर पुलिस उपायुक्त दक्षिणी रल्ला पल्ली वसंथ कुमार के पर्यावेक्षण मे जोन दक्षिणी के सरोजनी नगर थाना पुलिस द्वारा महिला सुरक्षा एवं साइबर अपराध मे बचाव के सम्बन्ध मे अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत पुलिस की टीमों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रो, रिहासी इलाकों और अपार्टमेंट मे जाकर महिलाओ व छात्र छात्राओं को महिला हेल्पलाइन नम्बर, महिला पावर लाइन, 1090,आपातकालीन नम्बर 112,साइबर हेल्पलाइन 1930,मुख्य मंत्री हेल्पलाइन 1076,महिला हेल्प डेस्क और पिंक बूथ, जैसी सुबिधाओं के लिए जागरूक किया जा रहा है। साथ ही बच्चों को गुड़ टच और बैड टच की जानकारी देकर उन्हें सुरक्षित रहने के उपाय बताये जा रहे है। इसी क्रम मे मंगलवार को सरोजनी नगर थाना पर नियुक्त महिला बीट अधिकारी पूजा यादव, एस आई महेश गुप्ता ने अपने हमरहियो के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सरोजनी नगर मे एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महिलाओ और बच्चों को साइबर क्राइम से बचाव, हेल्पलाइन नंबरो और महिला सुरक्षा से सम्बंधित जानकारिया बिस्तर से दी गई।

न्यायालय के आदेश पर सरोजनीनगर थाने में दर्ज हुआ चोरी का मुकदमा

लखनऊ। सरोजनीनगर थाना क्षेत्र में चोरी का मुकदमा न दर्ज करने पर पीड़ित ने ली न्यायालय की शरण, न्यायालय के आदेश पर सरोजनीनगर थाने में चोरी का मुकदमा हुआ दर्ज। कृष्णानगर थाना क्षेत्र के आजाद नगर स्थित मुण्डावीर मंदिर निवासी रामसमुझ शर्मा का कहना है कि वह अमौसी रेलवे स्टेशन स्थित सरोजनीनगर थाना क्षेत्र के कुशैला में एक भूखंड क्रय किए थे, जिस पर वह मकान निर्माण सामग्री एकत्रित कर रखे थे ।पीड़ित का कहना है कि 14, 15 जनवरी की रात में चोरों द्वारा एकत्रित किये गये सामान चोरी कर लिया गया। इसकी सूचना उन्होंने डाक द्वारा सरोजनीनगर थाने को दिये ,फिर 30 जनवरी को रात में वहां से सामान चोरी हो गया स्थानीय पुलिस को उन्होंने सूचित किया लेकिन कोई निष्कर्ष नहीं निकल पाया, 16 फरवरी को चोरों द्वारा अपराधी घटना और विनष्टीकरण फिर किया गया जिसकी सूचना पीड़ित ने सरोजनीनगर थाने को दिया लेकिन सरोजनीनगर पुलिस द्वारा कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया गया । पीडित ने मुकदमा न दर्ज करने पर डाक द्वारा पुलिस आयुक्त को भी इसकी शिकायत भेज दिया । पीड़ित का कहना है कि चोरों द्वारा पानी की टंकी ,समरसेबल ,पंप सेट, पाइप ,चौखटें जंगले और अन्य कीमती उपकरण, सेप्टिक टैंक को तोड़कर लोहे का नुकसान पहुंचाया गया ।

22वां राष्ट्रीय पुस्तक मेला : छठा दिन आंखों में समंदर, पानी पे आग बोते हुए, मौन जब मुखरित हुआ व करुणा पाण्डेय की पुस्तकों का विमोचन

आपरेशन सिंदूर के पहलू और टैगोर व आशुतोष की कहानियां

विश्ववार्ता संवाददाता

लखनऊ। युवाओं का उत्साह बलरामपुर गार्डन अशोक मार्ग पर चल रहे 22वें राष्ट्रीय पुस्तक मेले में सहभागिता के हर स्तर पर नजर आ रहा है। यहां उनके लिये किताबें ही नहीं प्रतिभा प्रदर्शन के भी अवसर खूब हैं।

हर किताब पर कम से कम 10 प्रतिशत छूट देने के संग ही मुफ्त प्रवेश देने वाले मेले के परिसर में युवक युवतियों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किये।

किताबों की बात करें तो अंजाम दिए जाने के बाद से लगातार चर्चा में बने रहे आपरेशन सिंदूर के अनेक पहलुओं की पड़ताल करती किताबें पुस्तक मेले में मेले में हैं। सामायिक प्रकाशन के स्टाल पर करुणा शंकर उपाध्याय ने अपनी किताब आपरेशन सिंदूरः अनजाने संदर्भ में इसकी विस्तृत समीक्षा करते हुए स्पष्ट संदेश दिया है कि भारत अपनी संप्रभुता की रक्षा के प्रति दृढ़ संकल्प है। यहां मृदुला सिन्हा, चित्रा मुद्गल, नमिता सिंह, मीनाक्षी नटराजन आदि की साहित्यिक कृतियां खूब हैं और हर पुस्तक पर 20 प्रतिशत छूट है।

भागलपुर के दिनकर पुस्तकालय वाले राज वर्मा की स्वतंत्रता का काकोरी अध्याय, यशवंत व्यास की बेगम पुल से दरियागंज, जया किशोरी की जो है ठीक है... और विवेक-अमित की ज्योतिर्लिंग पसंद की जा रही है। अनबाउण्ड स्क्रिप्ट के स्टाल पर ग़ालिब, दाग, इकबाल, ज़फ़र, मोमिन के साथ नीरज, मंजर भोपाली, राहत इंदौरी का भरपूर काव्य साहित्य है।

श्री रामस्वरूप विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने मेले में घूम घूम कर मेले की थीम विजन-2047 पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। विश्वम महोत्सव के अंतर्गत इन प्रस्तुतियों में शगुन, स्नेहा, चांदनी, वर्तिका, लक्ष्मी, नैना, कीर्ति, श्रद्धा, पायल, किशन, आकाश, काजल, रोली आदि बच्चों ने विशेष रूप से बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

यहीं आपको भुला दी गयी हिन्दी हाथ की लेखनी या कैलिग्राफी को कागज पर उतारकर पोस्टर, कार्ड और बुक मार्क्स तैयार करती शशि यादव मिल जायेंगी। पुस्तक प्रेमी उनसे मनचाहे संदेश लिखवा कर पोस्टर तैयार करवा सकते हैं।

कथा रंग की ओर से शाम को रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानी पिंजर और आशुतोष शुक्ल की कहानी ठेस का सस्वर वाचन हुआ। टैगोर की 'पिंजर' एक कहानी है जो एक युवा छात्र को वैद्यक सिखाने के लिए मंगवाए गए हड्डियों के ढांचे या पिंजर और उस से जुड़े एक महिला आत्मा के माध्यम से मृत्यु, प्रेम, और पुनर्जन्म की कहानी को बयां करती है। स्त्री अस्मिता और स्वाभिमान को केन्द्र में रखकर रची निःसंतान दम्पति की कहानी ठेस में स्वर नूतन वशिष्ठ, पुनीता अवस्थी व अनमोल मिश्रा के तो पिंजर में अनुपमा शरद व सोम गांगुली के रहे। सुबह भारतीय लघुकथा सृजन संस्थान के पुस्तक चर्चा के बाद साहित्य वीथिका की काव्य गोष्ठी चली। दोपहर में डा.करुणा पाण्डेय की किताबों कथा संग्रह हाई टेक व जनजाति का गांव-लोकगीतों की छांव का विमोचन हुआ। समारोह में प्रो.सूर्यप्रसाद दीक्षित, पद्मश्री विद्या विंदु सिंह, अशोक चौधरी, महेंद्र भीष्म, डा.हरिशंकर मिश्रा, डा.अलका प्रमोद व वीबी पाण्डेय ने विचार व्यक्त किये। इरा पत्रिका के समारोह में आंखों में समंदर, पानी पे आग बोते हुए, टूटती जंजीरें, और मौन जब मुखरित हुआ जैसी किताबों का विमोचन हुआ। काव्य समारोह में दीन बंधु, वंदना शर्मा, पवन श्रीवास्तव, मो.सिद्दीकी, नीरजा नीरू, अनुश्री, फुरकान, मनोज, अजय आदि ने अशआरों की शानदार महफ़िल सजायी गई।

आज के कार्यक्रम 10 सितंबर

- पूर्वाह्न 11:00 बजे गोष्ठी- अविरल सेवा संस्थान
- अपराह्न 12.30 बजे ज्वाइन हैंड्स फाउण्डेशन व होली ट्रिनिटी पब्लिकेशन के बच्चों का कार्यक्रम
- अपराह्न 2:00 बजे साहित्य चर्चा- अभा साहित्य परिषद महानगर
- अपराह्न 3:30 बजे युवाओं का कार्यक्रम
- शाम 4:30 पुस्तक विमोचन- अमिताभ कुमार
- शाम 7.00 काव्य गोष्ठी- अविरल सेवा संस्थान

फर्जी अभ्यर्थी बनकर दे रहा था PET की परीक्षा, रोजा पुलिस ने दबोचा

» फर्जी आधार कार्ड, प्रश्नपत्र और ओएमआर शीट के साथ गिरफ्तार

विश्ववार्ता संवाददाता

शाहजहांपुर। रोजा थाना पुलिस ने यूपीएसएसएससी PET की परीक्षा में फर्जी अभ्यर्थी के रूप में शामिल एक युवक को गिरफ्तार कर बड़ी सफलता हासिल की है। आरोपी बिहार का रहने वाला है, जो दूसरे अभ्यर्थियों के स्थान पर परीक्षा दे रहा था। पुलिस ने उसके पास से फर्जी आधार कार्ड, ओएमआर शीट और प्रश्नपत्र बरामद किए हैं। प्रकरण कोतवाली क्षेत्र स्थित जान नेव सीनियर सेकेंडरी स्कूल से जुड़ा है। परीक्षा केंद्र पर संदिग्ध लगने पर प्रधानाचार्या सुनीता द्विवेदी ने युवक को पुलिस के हवाले किया।

इस मामले में मुकदमा पंजीकृत कर विवेचना शुरू की गई। पूछताछ में पहले युवक खुद को आजमगढ़ निवासी नितीश कुमार पुत्र राजेश सिंह बताता रहा, लेकिन सख्ती से पूछताछ करने पर उसने अपना असली नाम विवेक कुमार मंडल (31) निवासी भवानी विगहा थाना वारिस अलीगंज, जिला नवादा बिहार बताया। उसने पुलिस को बताया कि पिछले साल बनारस रेलवे स्टेशन पर उसकी मुलाकात आजमगढ़ निवासी श्याम कृष्ण से हुई थी। वहीं से दोनों के बीच जान-पहचान हुई। श्याम कृष्ण ने विवेक को पैसे का लालच देकर उसके स्थान पर परीक्षा देने के लिए तैयार किया। उसे 20 हजार रुपये में सौदा तय हुआ था, जिसमें 10 हजार रुपये एडवांस भी मिल गए थे। विवेक ने स्वीकार किया कि उसने पहले हरदोई के आर्चसिया इंटरनेशनल स्कूल में श्याम कृष्ण के नाम से परीक्षा दी और फिर शाहजहांपुर में नितीश नामक अभ्यर्थी के स्थान पर परीक्षा देने पहुंचा, जहां पकड़ा गया।

पुलिस के अनुसार मामले में शामिल श्याम कृष्ण पुत्र माधव सिंह निवासी बड़गांव केशवपुर थाना अतरौलिया, जिला आजमगढ़ और वास्तविक अभ्यर्थी नितीश पुत्र राजेश सिंह निवासी भीलमपुर छपरा थाना अतरौलिया की तलाश में दबिश दी जा रही है। दोनों को जल्द गिरफ्तार किए जाने की बात कही जा रही है। गिरफ्तारी करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार, उपनिरीक्षक देवेंद्र सिंह, उपनिरीक्षक अभिषेक कुमार और उपनिरीक्षक सागर शामिल रहे। पुलिस अधीक्षक के निर्देश और सीओ सदर के पर्यवेक्षण में यह कार्रवाई की गई।

यूपी स्टेट शूटिंग चैंपियनशिप का आयोजन 30 से 7 सितम्बर तक

बरेली। 48वीं यूपी स्टेट शूटिंग चैंपियनशिप का आयोजन 30 अगस्त से 7 सितम्बर तक जगतपुर जयपुर शूटिंग रेंज में किया गया। इसमें रोहिलखंड विश्वविद्यालय के शूटिंग रेंज के विगिनर्स खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर प्री-नेशनल चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई किया। कोच मिसरयार खान ने बताया कि रुद्रांश प्रजापति ने सब यूथ, यूथ, जूनियर, सीनियर और मेन वर्ग में 354/400 का स्कोर हासिल किया। वहीं, ताराइय सम्राट ने सब यूथ मेन, यूथ मेन और जूनियर मेन में 335/400 का स्कोर प्राप्त किया। इसके अलावा, दशयानी राठौर ने सब यूथ वूमेन में 301/400 अंक बनाकर क्वालीफाई किया।

रोहिलखंड विश्वविद्यालय के मैथमैटिक्स विभाग की छात्रा कशिश यादव ने सीनियर वूमेन वर्ग में भाग लेते हुए 324/400 अंक बनाए। हालांकि, वह मात्र 6 अंकों से प्री-नेशनल के लिए क्वालीफाई करने से चूक गईं। खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह, खेल सचिव प्रोफेसर एस.एस. बेदी, डॉ. विजय सिन्हाल, तपन वर्मा और रामप्रीत सर ने खिलाड़ियों को बधाई दी।

बीडीए ने बारादरी में अवैध कॉलोनी पर चलाया बुलडोजर

» मौके पर पहुंचकर अवैध कॉलोनी में हो रहे निर्माण कार्यों को तत्काल ध्वस्त किया

विश्ववार्ता संवाददाता

बरेली। बरेली विकास प्राधिकरण (बीडीए) की प्रवर्तन टीम ने थाना बारादरी क्षेत्र में अवैध कॉलोनी के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई करते हुए ध्वस्तीकरण अभियान चलाया। बीडीए की इस कार्यवाही से क्षेत्र में अवैध कॉलोनी विकसित करने वालों में हड़कंप मच गया है। बीडीए के अधिकारी ने बताया कि अरशद खाँन आदि द्वारा आला हजरत रोड स्थित रॉयल विला कॉलोनी के पास लगभग 1500 वर्गमीटर क्षेत्रफल में बिना बीडीए की स्वीकृति के अवैध रूप से सड़क, बाउंड्रीवाल व भूखंडों का चिन्हांकन कर कॉलोनी विकसित की जा रही थी। बिना मानचित्र स्वीकृति के किए जा रहे इस निर्माण को टीम ने मौके पर पहुंचकर अवैध कॉलोनी में हो रहे निर्माण कार्यों को तत्काल ध्वस्त कराया।

यह कार्रवाई उत्तर प्रदेश नगर योजना एवं विकास अधिनियम-1973 की सुसंगत धाराओं के अंतर्गत की गई। प्रवर्तन टीम में अवर अभियंता अजीत साहनी, सीताराम, सुरेंद्र द्विवेदी, सहायक अभियंता मनोज कुमार सिंह, गजेन्द्र पाल शर्मा, संयुक्त सचिव दीपक कुमार और विशेष कार्याधिकारी अजीत कुमार सिंह मौजूद रहे। प्राधिकरण ने आम नागरिकों को चेतावनी देते हुए कहा है कि किसी भी प्रकार की प्लाटिंग या निर्माण कार्य शुरू करने से पूर्व बीडीए से मानचित्र स्वीकृत कराना अनिवार्य है। बिना मानचित्र स्वीकृति के किए गए किसी भी विकास कार्य को पूरी तरह अवैध माना जाएगा और प्राधिकरण द्वारा ऐसे निर्माण का ध्वस्तीकरण किया जा सकता है।

बीडीए अधिकारियों ने भवन और भूखंड खरीदने वाले लोगों को भी सतर्क किया है। उन्होंने कहा कि खरीदारी से पहले किसी भी संपत्ति का सौदा करने से पहले प्राधिकरण से उसकी मानचित्र स्वीकृति की जानकारी अवश्य लेनी चाहिए। मानचित्र स्वीकृत न होने की स्थिति में संपत्ति की खरीद-फरोख्त से बचना ही हितकर है, अन्यथा भविष्य में खरीदार को भी कानूनी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

प्राधिकरण ने स्पष्ट किया कि अवैध निर्माण या कॉलोनी विकसित करने की जिम्मेदारी पूरी तरह निर्माणकर्ताओं की होगी और इस पर की जाने वाली कानूनी कार्रवाई के लिए वही उत्तरदायी होंगे।

एक नजर

बाढ़ में बहे पूर्व फौजी का शव 36 घंटे बाद मिला

बरेली। मीरगंज क्षेत्र के गांव गोरा पुलिया के पास रविवार रात बड़ा हादसा हो गया। गुलड़िया निवासी व वर्तमान में रामनगर स्थित स्टेट बैंक में गार्ड के रूप में कार्यरत रिटायर्ड फौजी प्रेमपाल सिंह अपने मामा उमराय के घर खुर्द मीरगंज में जन्मदिन समारोह में शामिल होने आए थे। पार्टी से लौटते समय उनकी बाइक अनियंत्रित होकर नदी के पास जा गिरी और प्रेमपाल बहाव में बह गए। करीब 36 घंटे बाद मंगलवार को घटनास्थल से लगभग 200 मीटर दूर झाड़ियों में उनका शव बरामद किया गया। नदी में डूबने के कारण शव काफी फूल चुका था। शव की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। रविवार रात करीब 12 बजे प्रेमपाल बाइक से घर लौट रहे थे। तभी गोरा पुलिया के पास सड़क कट जाने से उनकी मोटरसाइकिल फिसलकर नदी में गिर गई। सोमवार सुबह ग्रामीणों को घटनास्थल पर उनकी बाइक, चप्पल और मोबाइल मिले, लेकिन प्रेमपाल का कोई पता नहीं चल सका। सूचना पर एनडीआरएफ की टीम ने सोमवार को दिनभर तलाश की, मगर सफलता नहीं मिली। अंतत: मंगलवार को उनका शव घटनास्थल से करीब दो सौ मीटर दूर झाड़ियों के बीच पानी में उतराता मिला। थानाध्यक्ष मीरगंज प्रयागराज सिंह ने बताया कि शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

बीड़ी नहीं देने पर युवक की हत्या

बरेली। बीड़ी ना देने पर लोडर चालक पर फावड़े से हमला कर दिया, जिससे गंभीर रुप घायल पिता की चीख सुनकर बेटा बचाने भगा जब तक चालक की मौत हो गई। बेटे ने आरोपी को पकड़ने की कोशिश की तो आरोपी धक्का देकर फरार हो गया घटना के बाद क्षेत्र में सनसनी फैल गई। घटना पास में लगे सी सी कैमरे में कैद हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस के साथ-साथ फोरेंसिक टीम, डॉग स्क्वाड, एसपी सिटी और सीओ भी पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी। थाना बिथरी चैनपुर क्षेत्र के उडला जागीर निवासी 53 वर्ष अब्दुल हमीद ठिरिया निजामत खां में जावेद खां की बिल्डिंग मटेरियल की दुकान पर रेत-बजरी लोडर चालक के पद पर कार्यरत था। सोमवार रात भी वो कैंट थाना क्षेत्र के ठिरिया निजामत खां रोड पर रेत-बजरी लेकर गया था, उसके साथ उसका बेटा नदीम भी था नदीम रेत-बजरी के पैसे लेने गया हुआ था। इसी दौरान ठिरिया निजामत खां का निवासी शहरोज अब्दुल हमीद के पास आया और उससे बीड़ी मांगने लगा। उसने बीड़ी देने से इंकार किया तो युवक ने उसी के लोडर से फावड़ा उठाया और हमला कर दिया जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। अब्दुल हमीद जोर जोर से चीखने लगा और सड़क पर गिर गया पिता की चीख सुनकर बेटा नदीम दौड़कर आया घायल अब्दुल हमीद रोड पर गिर गया और मौके पर मौत हो गई। बेटा नदीम ने हत्यारे को पकड़ने का प्रयास किया तो वो धक्का देकर भाग गया। मौके पर भारी भीड़ जुट गई। हत्या की जानकारी परिजनों को दी,परिवार में कोहराम मच गया। वहीं हत्या की वारदात पास में लगे CCTV कैमरे में कैद हो गई। घटना की सूचना112 नंबर पर दी गई। जिसके बाद 112 और कैंट पुलिस मौके पर पहुंची। घटनास्थल पर एसपी सिटी मानुष पारीक और सीओ आशुतोष शिवम पहुंच गए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया ओर मामले की जांच शुरू कर दी।

क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल व एबी रिच इंटर कॉलेज की बदलेगी सूरत

युवा नेता अजय मीरा पांडेय के प्रयास से दोनों विद्यालय हुए प्रोजेक्ट अलंकार में चयनित

विश्ववार्ता संवाददाता

शाहजहांपुर। शिक्षा क्षेत्र में एक और नई पहल करते हुए जनराज्य फ्रंट इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व विधानसभा प्रत्याशी अजय मीरा पांडेय के प्रयास रंग लाए हैं। जिले के दो ऐतिहासिक विद्यालय क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल और ए.बी.रिच इंटर कॉलेज (मिशन स्कूल) को प्रोजेक्ट अलंकार में शामिल कर लिया गया है। इसके तहत दोनों संस्थानों का कायाकल्प होगा।

ब्रिटिश शासनकाल में वर्ष 1826 में निर्मित क्रिश्चियन गर्ल्स हाई स्कूल अब प्रोजेक्ट अलंकार के माध्यम से नए स्वरूप में दिखाई देगा। करीब दो सौ साल पुराने इस विद्यालय की जर्जर स्थिति देखकर अजय मीरा पांडेय ने इसके जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया। उनके प्रयासों से स्कूल का चयन कर लिया गया है। इस पहल से छात्राओं और शिक्षिकाओं में खुशी की लहर है। इसी क्रम में जिले का ऐतिहासिक

ए.बी.रिच इंटर कॉलेज जिसे मिशन स्कूल के नाम से जाना जाता है और जहां अमर शहीद पंडित रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां ने अध्ययन किया था। उसका भी कायाकल्प कराया जाएगा। जिलाधिकारी से मिलकर अजय मीरा पांडेय ने इस विद्यालय की दुर्दशा को दूर करने की मांग की थी। डीएम ने इसे गंभीरता से लेते हुए शिक्षा विभाग व एडीएम वित्त एवं राजस्व अरविंद कुमार को नोडल अधिकारी नामित किया है।

गौरतलब है कि अजय मीरा पांडेय इससे पहले भी जिले की शैक्षिक तस्वीर बदलने में अहम भूमिका निभा चुके हैं। वर्ष 2015 में उनके प्रयासों से जीजीआईसी चौक शाहजहांपुर का आधुनिक भवन 12 करोड़ 86 लाख रुपये की लागत से तैयार हुआ था। बिना किसी संवैधानिक पद पर रहते हुए शिक्षा संस्थानों के उत्थान में उनका योगदान लगातार जारी है।

तीन किलो अफीम के साथ दो गिरफ्तार

विश्ववार्ता संवाददाता

बरेली। फरीदपुर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए अफीम तस्करी करने वाले दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से तीन किलो अफीम, एक लग्जरी कार, बाइक और मोबाइल फोन बरामद किया है।

फरीदपुर पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर इंस्पेक्टर राधेश्याम के नेतृत्व में उपनिरीक्षक लोकेश तोमर और पुलिस टीम ने बरेली-लखनऊ राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक होटल के पास घेराबंदी कर दो आरोपियों को पकड़ा। उनके कब्जे से तीन किलो अफीम, एक लग्जरी कार, बाइक और मोबाइल फोन बरामद किया है। गिरफ्तार तस्करों की पहचान मोहल्ला भूरे खां गोटिया निवासी फिरोज और इमरान के रूप में हुई है। पुलिस ने दोनों को एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया।

फिरोज पर पहले से ही पांच मुकदमे दर्ज हैं जबकि इमरान पर एक मुकदमा चल रहा है। पुलिस ने बताया कि जांच में आया कि आरोपी अमेरिका और यूके के नंबर ऑनलाइन जनरेट कर व्हाट्सएप चैट और कॉलिंग के जरिए अफीम की डीलिंग किया करते थे। पुलिस ने आरोपियों की गतिविधियों और नेटवर्क की गहन जांच शुरू कर दी है।

बाढ़ प्रभावित इलाकों का निरीक्षण, सुनी गईं समस्याएं

» नगर आयुक्त ने दिए सफाई व स्वास्थ्य संबंधी सख्त निर्देश

विश्ववार्ता संवाददाता

शाहजहांपुर। महानगर के बाढ़ प्रभावित इलाकों का निरीक्षण कर नगर आयुक्त डॉ. बिपिन कुमार मिश्र ने जलभराव और गंदगी से निपटने के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए। मंगलवार को नगर आयुक्त ने दलेलगंज वार्ड व पक्का पुल के पास बने रैन बसेरा का स्थलीय निरीक्षण किया।

इस दौरान क्षेत्रीय पार्षद अनूप गुप्ता भी मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त ने सुभाषनगर, जलालनगर बाहर चुंगी, ख्वाजा फिरोज, अहमदपुर नियाजपुर, अहमदपुरा, हयातपुरा, लोधीपुर, लालपुर, काशीराम कॉलोनी, अजीजगंज, ककरा और युनुसखेल समेत प्रभावित मोहल्लों में जलभराव को पूरी तरह खत्म करने के निर्देश दिए। उन्होंने साफ-सफाई के साथ चूना, ब्लीचिंग पाउडर छिड़काव, एंटीलार्वा और फॉगिंग का अभियान एक सप्ताह तक लगातार चलाने का आदेश दिया। नगर आयुक्त ने दलेलगंज वार्ड स्थित नगर निगम रैन बसेरा का भी निरीक्षण किया, जहां बाढ़ प्रभावित लोग शरण लिए हुए हैं। उन्होंने वहां ठहरे लोगों से बातचीत कर उनकी समस्याएं जानीं और अधिकारियों को निर्देशित किया कि रैन बसेरा में ठहरे लोगों को सभी आवश्यक सुविधाएं, स्वच्छ जलापूर्ति और प्रकाश व्यवस्था उपलब्ध कराई जाए।

दिल्ली से नकली नोट लाने वाला युवक गिरफ्तार

» कांट पुलिस की बड़ी कार्रवाई, 69 हजार 500 रुपये के जाली नोट बरामद

विश्ववार्ता संवाददाता

शाहजहांपुर। थाना कांट पुलिस ने नकली नोटों का कारोबार करने वाले युवक को गिरफ्तार कर बड़ी सफलता हासिल की है। ददरौल मोड़ के पास पकड़े गए आरोपी के पास से 500 रुपये के 129 और 200 रुपये के 25 नोट बरामद किए गए हैं। इन जाली नोटों की कुल कीमत 69,500 रुपये बताई जा रही है। गिरफ्तार युवक की पहचान ग्राम

ऊनकला, थाना निगोही निवासी साहिल हसन उर्फ़ सन्ने (35) के रूप में हुई है।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे अदालत में पेश किया। पुलिस पूछताछ में साहिल ने चौंकाने वाला खुलासा किया। उसने बताया कि वह दिल्ली में जींस कटिंग का काम करता है। इसी दौरान उसकी पहचान कासगंज निवासी फाजिल नामक युवक से हुई। फाजिल ही उसे नकली नोट सप्लाई करता था। सौदे के तहत साहिल ने 50 हजार रुपये देकर एक लाख रुपये के जाली नोट खरीदे थे। इनमें से 30,500 रुपये के नकली नोट वह पहले ही बाजार में खपा चुका था। शेष नोटों को शाहजहांपुर के कांट क्षेत्र में चलाने आया था, तभी पुलिस ने उसे दबोच लिया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि नकली नोटों के इस गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश की जा रही है। जल्द ही पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश कर लिया जाएगा।

बांके बिहारी मंदिर में पितरों की शांति के लिए हुआ सुंदरकांड पाठ

बरेली। तृिपक्ष के उपलक्ष में श्री बांके बिहारी मंदिर में संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महिला संकीर्तन मंडल ने भगवान राम और उनके अनन्य भक्त हनुमान जी का गुणगान किया। ऐसा माना जाता है की श्राद्ध पक्ष के दौरान पितरों का स्मरण करते हुए प्रभु का गुणगान करने पर स्वर्ग सिधार गए परिवार जनों की आत्मा को परम शांति प्राप्त होती है। सुंदरकांड पाठ के बाद सामूहिक आरती की गई। प्रभु का गुणगान करने वालों में सीमा गुलाटी, मुक्ता अग्रवाल, रजनी, नीलम गाबा, निशु, समिति के अध्यक्ष विनोद ग्रोवर, विजय बंसल, विजय गुप्ता, अश्विनी अरोड़ा, रमेश खंडेलवाल, संजीव गुलाटी, दीपा अरोड़ा के साथ ही बड़ी संख्या में भक्तजन शामिल रहे।

बिहार के राज्यपाल आरिफ खान का बरेली दौरा

विश्ववार्ता संवाददाता

बरेली। बिहार के राज्यपाल ने आरिफ मोहम्मद खान ने कहा कि राहुल गांधी के 'संविधान खतरे में' वाले बयान पर सीधी प्रतिक्रिया नहीं दी लेकिन उन्होंने सीधे राहुल गांधी का नाम लिए बिना कहा, लोकतंत्र में हर किसी को अपनी राय रखने का अधिकार है। लेकिन लोकतंत्र लोकलाज और आत्मनियंत्रण से चलता है। ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए जिससे जनता के मन में लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति संदेह पैदा हो। यह लोकतंत्र को कमजोर करता है। राज्यपाल ने आरिफ मोहम्मद बरेली में पत्रकारों से बात कर रहे थे।

जम्मू कश्मीर में अशोक स्तंभ पर हुए हमले ने आतंकी हमले पर कहा कि जो गुलबर्गा में हुआ उसी तरह का ये काम है। उन्होंने कहा कि जो लोग दशकों से घुसपैठ करते चले आ रहे है। अब वो अराजकता पैदा करना चाहते हैं। लेकिन इनमें से कोई भी बचेगा नहीं। साथ ही उन्होंने कहा कि इसलिए सतर्कता बनी रहनी चाहिए। जम्मू कश्मीर में अशोक स्तंभ को तोड़ने के मामले में आगे कहा कि बहुत ही खतरनाक और निंदनीय है। मैं इसे इस तरह देखता हूं। आज जब कश्मीर के हालात सामान्य होते जा रहे हैं। कुछ लोगों में एक निराशा भावना की पैदा हो गई है। वह लोग जो दशकों से घुसपैठ करते और कश्मीर में अराजकता पैदा करना चाहते हैं। अब वह बिल्कुल आखिर में जब आदमी हताश हो जाता है तो उस तरह के काम जो गुलबर्गा में हुआ। इस तरह का काम ये है। जिससे इस बात का पता चलता है पहले जिस तरह ऑपरेशन करते थे कहीं भी। अब वो नहीं कर पा रहे। अब वह टारगेट करके कुछ जगहों को अब उन्हें मालूम है कि इसके परिणाम क्या होते हैं बचता कोई नहीं है। जो भी इन घटनाओं में अब वह कोई बच नहीं पा रहे है। आसानी से भाग भी नहीं पा रहे हैं। लेकिन इससे पता चलता है हम अपनी सतर्कता में किसी प्रकार भी कमी नहीं ला सकते सतर्कता बनी रहनी चाहिए ताकि तरीके की घटनाएं उनके लिए करना असंभव हो जाए।

राज्यपाल ने कहा, ₹बिहार के चुनाव तो अपने समय पर ही होंगे और मुझे पूरा विश्वास है कि बहुत सुचारू और शांतिपूर्ण तरीके से होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए।उन्होंने कहा, ₹मैं किसी एक नेता या गठबंधन पर टिप्पणी नहीं कर रहा। बात यह है कि लोकतंत्र मर्यादा और लोकलाज से चलता है। अगर मर्यादा टूटती है तो लोकतंत्र कमजोर होता है। मैं तो यही कहूंगा कि जनता को खुद नोटिस लेना चाहिए और

तीन रोज़ा उर्स-ए-हुजूर फातेह अजमेर का कुल शरीफ़ के साथ समापन

दरगाह पर जायरीनों का तांता

विश्ववार्ता संवाददाता

बरेली। परतापुर चौधरी मदार चौक स्थित दरगाह सय्यद मरग़ूब आलम जाफ़री में चल रहा तीन रोज़ा उर्स-ए-हुजूर फातेह अजमेर मंगलवार को कुल शरीफ़ की रस्म के साथ सम्पन्न हो गया। तीन दिनों तक चले इस उर्स के दौरान दरगाह परिसर इबादत, दुआ और मोहब्बत की रौशनियों से जगमगाता रहा।

तीन रोज़ा उर्स-ए-हुजूर फातेह अजमेर का समापन अमन और मोहब्बत के पैग़ाम के साथ हुआ। पूरे उर्स में इंसानियत और भाईचारे की मिसाल देखने को मिली। यह आयोजन न सिर्फ़ धार्मिक महत्व रखता है बल्कि समाज को जोड़ने और गंगा-जमुनी तहज़ीब को मज़बूत करने का माध्यम भी है। दूर-दराज़ से आए जायरीनों की भीड़ ने गंगा-जमुनी तहज़ीब की मिसाल पेश की।

उर्स के तीसरे और आखिरी दिन की शुरुआत नमाज-ए-फजर के बाद कुरान-ए-पाक की तिलावत से हुई। नातख्वां हज़रात ने बारगाह में नातों का नजराना पेश किया। दरगाह परिसर में कुरान की तिलावत और नात की आवाज़ से एक रूहानी माहौल बना रहा।

प्रोग्राम की सदारत सज्जादानशीन सय्यद जिल्ले महमूद जाफ़री ने की। उन्होंने कहा कि उर्स-ए-हुजूर फातेह अजमेर का आयोजन केवल एक धार्मिक रस्म नहीं, बल्कि इंसानियत, मोहब्बत और भाईचारे का पैग़ाम है। उन्होंने जायरीनों को इल्म, अमल और इख़लाक़ की राह पर चलने का संदेश दिया।

सुबह से ही दरगाह पर जायरीनों का तांता लगा रहा। लोग अपनी मन्नतें लेकर आए और चादर पेशी, गुल पेशी का सिलसिला पूरे दिन चलता रहा। पुरुष, महिलाएं और बच्चे सभी दरगाह शरीफ़ पर हाज़िरी देने पहुंचे।

कार्यक्रम में उलेमा-ए-किराम ने शिरकत करते हुए सय्यद मुक़तीदा हुसैन जाफ़री मदारी ने तकरीर में सीरत-ए-मुस्तफ़ा पर रोशनी डाली। उन्होंने कहा कि आज के दौर में पैग़ंबर-ए-इस्लाम की सीरत से रहनुमाई हासिल करना बेहद ज़रूरी है। उनके बताए रास्ते पर चलकर इंसानियत को सही मायनों में जिया जा सकता है। मौलाना मो. शफ़ीक़ुल क़ादरी ने अपने खिताब में इल्म की अहमियत पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि इल्म इंसान को अंधेरे से उजाले की तरफ ले जाता है। इल्म के बिना न तो दुनिया की तरक्की मुमकिन है और न ही आखिरत की कामयाबी। उन्होंने नौजवानों से अपील की कि वे दीन और दुनियावी दोनों तरह का इल्म हासिल करें।

प्रबंधक डॉ. सय्यद इंतख़ाब आलम जाफ़री ने इल्म को ज़िंदगी का हुनर बताया। उन्होंने कहा कि जो लोग इल्म को अपनाते हैं वही समाज और मुल्क की तरक्की का कारण बनते हैं। दोपहर 3 बजकर 17 मिनट पर कुल शरीफ़ की रस्म अदा की गई। इस मौके पर पूरा दरगाह परिसर दुआओं की रूहानियत में डूब गया। हाफ़िज़ जिया-उल-मदार ने दुआ की निज़ामत की। सज्जादानशीन सय्यद जिल्ले महमूद जाफ़री और सय्यद जावेद आलम जामरी ने मुल्क की शांति, अमन और तरक्की, समाज में मोहब्बत-ए-इंसानियत की दुआएं मांगी गईं। उर्स-ए-हुजूर फातेह अजमेर में हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदाय के लोगों ने शिरकत की। कई सामाजिक संगठनों ने भी दरगाह पहुंचकर चादर पेश की और आपसी भाईचारे का संदेश दिया।

उर्स पर समाजवादी पार्टी ने चादरपोशी की

बरेली। दरगाह हुजूर फतेह के आखिरी तीसरे दिन उर्स के अवसर पर समाजवादी पार्टी की ओर से चादरपोशी की गई। दरगाह प्रबंधन डॉ. सैयद इंतखाब आलम जाफरी, प्रबंधक सैयद जिल्ले महमूद जाफरी, जावेद आलम व साकार आलम ने चादर पेश कर अमन-चैन की दुआ मांगी।

इस मौके पर सपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता नेहा यादव ने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से इंसानियत, मोहब्बत और एकता का संदेश दिया जाता है। उन्होंने कहा कि देश की तरक्की आपसी भाईचारे और शांति पर निर्भर करती है, और सभी को मिलजुलकर सद्भाव बनाए रखना चाहिए। उर्स जैसे आयोजनों में की जाने वाली चादरपोशी समाज के हर वर्ग को जोड़ने का कार्य करती है और सामूहिक एकता का प्रतीक बनती है। इस अवसर पर रहे मयंक शुक्ला, खालिद खान, चंद्रशेखर चंदू यादव, कुलदीप यादव, राशिद मेवाती आदि लोग मौजूद रहे।

विकसित भारत प्रबुद्धजनों व जिले के विभिन्न वर्गों के साथ विचार-विमर्श कर 2047 के विजन डॉक्यूमेंट के लिए संकलित किए सुझाव

सभी नागरिकों की सहभागिता से तैयार किया जा रहा है विकसित उत्तर प्रदेश@2047 का रोडमैप

» प्रत्येक परिवार से एक सुझाव जरूरी, नागरिकों की सहभागिता से बनेगा विकसित उत्तर प्रदेश

नागरिक अपने सुझाव 5 अक्टूबर तक ऑनलाइन samarthuttarpradesh.up.gov.in पोर्टल पर भेजें, विजन डॉक्यूमेंट में होगा समावेश

विश्ववार्ता संवाददाता

बरेली। पूर्व आईपीएस प्रशांत कुमार, प्रमुख सचिव सहकारिता विभाग /नोडल अधिकारी सौरभ बाबू, पूर्व आईएएस रामाशंकर मौर्य, आईवीआरआई के पूर्व निदेशक अशोक कुमार वर्मा, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय के पूर्व परीक्षा नियंत्रक अधिकारी अशोक कुमार अरविन्द, आईवीआरआई के निदेशक डॉ. त्रिवेणी दत्त आदि प्रबुद्धजनों की उपस्थिति में विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश, आत्मनिर्भर भारत-आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश, शताब्दी संकल्प@2047 एवं समृद्धि का शताब्दी वर्ष विषय पर प्रगतिशील कृषकों, कृषि छात्रों, कृषि वैज्ञानिकों, एफपीओ के सदस्यों व किसान भाईयों के साथ भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान स्थित सभागार में संवाद स्थापित किया गया।

इस अवसर पर पूर्व आईपीएस प्रशांत कुमार ने अपने सम्बोधन में कहा कि देश को 2047 तक विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा करने का उद्देश्य है जो सबसे बड़े प्रदेश उत्तर प्रदेश के बिना संभव नहीं है। हमारे प्रदेश का सहयोग राष्ट्रीय विकास में लगातार बढ़ा है। शासन और मुख्यमंत्री के भागीरथ प्रयास से सभी सेक्टरों में सर्वांगीण विकास हुआ है। 2017 में हम व्यापार करने की सहायक परिस्थितियों में 14वें स्थान पर थे, अब हम दूसरे स्थान पर हैं। ऐसा प्रदेश जहां ज्यादा से ज्यादा लोग खेती पर निर्भर करते हैं वहां बिना किसानों का सहयोग लिये विकास संभव नहीं है। समय के साथ टेक्नोलॉजी को अपनाना मानव विकास का मूल मंत्र है। विकास और निवेश के लिये सामाजिक सुरक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। बेहतर कानून व्यवस्था और एक अच्छा माहौल व्यापारी, किसानों, महिलाओं सबके लिये आवश्यक है। आप जिस भी कार्य में हैं नवाचारों को अपनाएं और राष्ट्रीय इकोनॉमी में अपना योगदान दें। पुलिस व्यवस्था में भी बहुत नवाचार किये गये हैं, अब किसी घटना की जानकारी होने पर 112 की गाड़ी 08 मिनट में पहुँच जाती है। उन्होंने कहा कि सभी प्रबुद्धजन सहयोग व सुझाव दें, सर्वश्रेष्ठ सुझावों को पुरस्कृत भी किया जाएगा। यह भी एक नवाचार है आपके सुझाव से विकसित उ०प्र० बनेगा।

प्रमुख सचिव सहकारिता विभाग/नोडल अधिकारी सौरभ बाबू ने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि क्षेत्र की विकास दर को बढ़ाते हुए ही हम देश की अर्थव्यवस्था को गति दें पायेंगे। पिछले आठ वर्षों में हमारे प्रदेश की जीडीपी 25 प्रतिशत तक बढ़ी है। प्रतिव्यक्ति आय भी बढ़ी है, निर्यात में भी प्रगति हुई है। विगत पाँच वर्षों में उत्तर प्रदेश राजस्व देने में बढ़ोत्तरी की है। 6 ट्रिलियन इकोनॉमी उप्र को होनी चाहिये, जिससे हम देश को विकसित बनाने में सहयोग प्रदान कर सकें। कृषि के अंतर्गत गेहूं, धान, गन्ना, मिलेट्स, दुग्ध, एथेनॉल उत्पादन बढ़ा है। ऐसी नीति बनायी जाएगी कि प्रोडेक्शन के साथ प्रोडेक्टिविटी भी बढ़े। अण्डा, मत्स्य, दुग्ध उत्पादन में भी शीर्ष पर पहुंचने, इसके लिए आपके सुझाव की आवश्यकता है।

इस अवसर पर आईवीआरआई के पूर्व निदेशक अशोक कुमार वर्मा ने कहा कि 2047 में आप प्रदेश को कहाँ देखना चाहते हैं इसके लिये आप उक्त क्यूआर कोड के माध्यम से पोर्टल पर अपना सुझाव विभिन्न सेक्टर में दे सकते हैं। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि मेरा सुझाव है कि पशुओं ने लिये बीमा कवर की सुविधा दी जाए, पशुओं की नस्ल में सुधार व दुग्ध बढ़ोत्तरी को दिशा में कार्य किया जाये। किसानों के उत्पाद बिक्री की व्यापक व्यवस्था की जाये, जिससे उन्हें वाजिब दाम मिल सकें। प्रोसेसिंग प्लांट ग्राम व ब्लाक स्तर पर लगाए जाएं। साफ-सुथरे व्यापार पर भी ध्यान दिया जाए। किसानों को विभिन्न विषयों पर शिक्षित करने हेतु कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन किया जाये। योजनाओं का अनुपालन और मॉनिटरिंग भली प्रकार हो इस पर भी ध्यान दिया जाये। आईवीआरआई के वर्तमान निदेशक डॉ. त्रिवेणी दत्त ने कहा कि आईवीआरआई देश की धरोहर है, जिसे हमने 135 वर्षों से संभाल कर रखा है। आईवीआरआई ने 50 वैक्सीन पालतू एवं गैर पालतू पशुओं हेतु तैयार की हैं। पशुओं सम्बन्धी चार बीमारियों का उन्मूलन किया जा चुका है। आईवीआरआई द्वारा जो लम्पी स्क्रीन डिजीज हेतु वैक्सीन बनायी गयी है उसका प्रयोग सर्वप्रथम मुख्यमंत्री ने गोरखपुर से आरम्भ कराया। वर्तमान में 7700 मॉडल गौशालाओं में 17 लाख गौवंश संरक्षित हैं, सहभागिता योजना के अंतर्गत भी गौवंश पालन हेतु दिये जा रहे हैं।

एक नजर

महिला थाने के सामने दो वाहनों की टक्कर में खांडसारी निरीक्षक घायल, चालक फरार

लखीमपुर खीरी। लखीमपुर खीरी में महिला थाना गेट के सामने मंगलवार सुबह 11 बजे एक तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार खांडसारी निरीक्षक रविंद्र कुमार को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद निरीक्षक सड़क पर गिर गए। मौके पर मौजूद महिला थाना पुलिस और स्थानीय लोगों ने घायल को तुरंत उठाया।महिला थाना प्रभारी शिल्पी शुक्ला के अनुसार, एंबुलेंस की प्रतीक्षा न करते हुए घायल को थाने की सरकारी गाड़ी से जिला अस्पताल भेजा गया। हादसे के बाद कार चालक वाहन छोड़कर फरार हो गया। पुलिस ने कार का नंबर नोट कर लिया है। आरोपी की पहचान के लिए आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि कार मोड पर तेज रफ्तार में थी। अचानक सामने से आकर बाइक से टकरा गई। हादसे के बाद महिला थाने के सामने भीड़ जमा हो गई। पुलिस ने यातायात सुचारू कराया और घटनास्थल से बाइक को हटवाया। घायल निरीक्षक का अस्पताल में इलाज जारी है।

दहेज के लिए विवाहिता को बोला तीन तलाक

बाराबंकी। निकाह के दस साल बाद दहेज की मांग पूरी न होने पर एक विवाहिता को मारपीट कर घर से निकाल दिया गया। पीड़िता का आरोप है कि पति ने उसे तीन तलाक बोला और जेठ-जेठानी के साथ मिलकर शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। यही नहीं, धोखे से दो बार गर्भपात भी कराया गया। रामनगर कस्बा निवासी मन्तशा बानो की शादी 2015 में सीतापुर जिले के मोतीपुर निवासी जैनुल पुत्र मन्ना से हुई थी। पीड़िता का आरोप है कि निकाह के समय दिया गया दहेज ससुराल पक्ष को पसंद नहीं आया, जिसके चलते आए दिन उसे प्रताड़ित किया जाने लगा। बाद में तीन लाख रुपये नगद और सोने की चेन की मांग की गई। मांग पूरी न होने पर पति जैनुल, जेठ फारूख और जेठानी शायरा उसे मारते-पीटते और भूखे रखते थे। पीड़िता के अनुसार 7 जुलाई को पति ने तीन तलाक कहकर उसे घर से निकाल दिया। मामले की शिकायत स्थानीय पुलिस से करने पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद पीड़िता ने एसपी से गुहार लगाई। एसपी के आदेश पर रामनगर पुलिस ने आरोपी पति, जेठ और जेठानी के खिलाफ दहेज प्रताड़ना सहित अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

संजय सेतु के ज्वाइंटर फिर उखड़े, घंटों जाम में फंसे वाहन

रामनगर (बाराबंकी)। सरयू नदी पर बने संजय सेतु की स्थिति लगातार खराब होती जा रही है। बीते सप्ताह मरम्मत कार्य होने के बावजूद मंगलवार को एक बार फिर ज्वाइंटर उखड़ गए। गहरे गड्ढों के चलते वाहनों के फंसने का खतरा बढ़ गया और पुल पर कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया। वाहन चालक जोखिम उठाकर धीरे-धीरे किनारे से निकलते रहे। छोटे वाहन तो किसी तरह निकल गए, लेकिन भारी वाहनों के चलते घंटों अफरातफरी बनी रही। सूचना पर थाना प्रभारी रामनगर अनिल कुमार पांडे, इंस्पेक्टर सुभाष चंद्र यादव और उपनिरीक्षक वीरपाल सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और कड़ी मशक्कत से जाम खुलवाकर यातायात बहाल कराया। स्थानीय लोगों ने बताया कि संजय सेतु के ज्वाइंटर और अप्रोच लंबे समय से जर्जर हैं। समय रहते सही तरीके से मरम्मत न कराए जाने पर बड़ी दुर्घटना हो सकती है। लोगों ने शासन और विभाग से पुल की मजबूती को लेकर ठोस कदम उठाने की मांग की है।

चकमार्ग पर कब्जे का खेल! तहसीलदार पर घूस लेकर वाद खारिज करने का आरोप

बाराबंकी। तहसील रामसनेहीघाट क्षेत्र के ग्राम उमरापुर तालुक में चकमार्ग पर अवैध कब्जे को लेकर बड़ा आरोप सामने आया है। ग्रामसभा की भूमि (गाटा संख्या 58, रकबा 0.111 हे.) पर पूर्व राजस्व निरीक्षक जयप्रकाश पाण्डेय द्वारा पक्का मकान बनाकर कब्जा करने की शिकायत ग्रामीणों ने की थी। ग्रामीण सुनील कुमार द्वारा कई बार अधिकारियों से गुहार के बाद भी जब रास्ता खाली नहीं हुआ, तो उन्होंने हाईकोर्ट लखनऊ खंडपीठ में जनहित याचिका दायर की। अदालत के आदेश पर राजस्व व पुलिस की टीम ने पैमाइश की और मौके पर चकमार्ग पर पक्का मकान पाया गया। लेखपाल ने इस आधार पर तहसीलदार रामसनेहीघाट की अदालत में धारा 67 का वाद भी दायर किया। आरोप है कि तहसीलदार ने दबंग पक्ष से मोटी रिश्वत लेकर वाद को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि चकमार्ग रिक्त है और वहां इंटरलॉकिंग लगी है। इस कार्रवाई से गांव में आक्रोश व्याप्त है। प्रार्थी एडवोकेट राकेश कुमार अवस्थी ने मुख्यमंत्री से भ्रष्टाचार में लिप्त तहसीलदार और अवैध कब्जेदार के खिलाफ सख्त कार्रवाई, एफआईआर दर्ज कराने तथा कब्जा हटवाने की मांग की है।

प्रधान और पंचायत सहायक पर अवैध वसूली का आरोप, ग्रामीणों में आक्रोश

- चेतावनी, कार्रवाई न हुई तो 17 को डीएम आवास पर घेराव
- भाकियू राष्ट्रवादी ने किया प्रदर्शन, एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

मकान योजना के नाम पर 1000-2000 रुपये ऐंठने की शिकायत

विश्ववार्ता संवाददाता

दरियाबाद (बाराबंकी)। विकासखंड दरियाबाद के ग्राम बीरापुर, गौरा कुमियान और चकम्मरपुर चंदौली में ग्राम प्रधान रामगोपाल श्रीवास्तव और पंचायत सहायक नरेंद्र रावत पर ग्रामीणों ने अवैध वसूली का गंभीर आरोप लगाया है। ग्रामीणों का कहना है कि मकान योजना के नाम पर उनसे 1000 से लेकर 2000 तक वसूले गए।

ग्रामीणों का आरोप है कि योजना की धनराशि प्रधान ने हजम कर ली और फर्जी फोटोग्राफर के सहारे यह वसूली कराई गई। मामला गरमाने पर प्रधान ने कुछ ग्रामीणों को फोन कर समझौते की पेशकश की, जिसकी रिकॉर्डिंग गांव की एक महिला के पास मौजूद बताई जा रही है।

इस मामले को लेकर भारतीय किसान यूनियन राष्ट्रवादी अराज नैतिक पार्टी के अध्यक्ष विधि चंद के नेतृत्व में किसानों ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया और एसडीएम अनुराग सिंह को ज्ञापन सौंपकर कार्रवाई की मांग की। एसडीएम अनुराग सिंह ने जांच के लिए एक हफ्ते का समय मांगा है और कार्रवाई का आश्वासन दिया है। वहीं, किसान यूनियन अध्यक्ष विधि चंद ने साफ चेतावनी दी है कि यदि समय सीमा में कार्रवाई नहीं हुई तो 17 तारीख को डीएम आवास का घेराव कर प्रदर्शन किया जाएगा।

मस्जिदों से एलान कर पंजाब बाढ़ पीड़ितों को भेजी राहत सामग्री

विश्ववार्ता ब्यूरो

मितौली खीरी। पंजाब के बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए आगे आये मुस्लिम समाज के लोग। कस्बे की मस्जिदों से एलान कर पंजाब में बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए चंदा इकठ्ठा किया गया। इसके अलावा लोगों ने राशन कपड़ा व अन्य राहत सामग्री भी पंजाब के बाढ़ पीड़ितों को भेजी है। मंगलवार को कस्बे की नूरी जामा व कादरी जामा मस्जिद के इमामों के एलान के बाद कस्बे से राहत सामग्री इकट्ठा कर पंजाब को भेजी गई।

मंगलवार को नूरी जामा मस्जिद के ईमाम मौलाना इरफान कादरी व कादरी जमा मस्जिद के इमाम मौलाना शान मोहम्मद ने मस्जिदों से एलान किया। पंजाब में बाढ़ पीड़ितों के लिए हर संभव मदद के लिए एलान किया। उन्होंने कहा घरों से जो भी हो सके मदद कीजिये। पंजाब में आई त्रासदी को लेकर चंदा लेने आई टीम को लोगो ने अपने घरों से राशन कपड़ा सहित आर्थिक सहायता इकट्ठा कर पंजाब के लिए रवाना कर दी है। वहीं इसके अलावा क्षेत्र की बीरमपुर, खंजननगर कस्ता आदि की मस्जिदों से राहत सामग्री भेजी गई।

इस मौके पर समाजसेवी महबूब हसन, समाज सेवी अखिलेश मिश्र, बब्बू रस्तोगी, फारूक किराना, कल्लू टेलर, जीशान, आमिर, इमरान खान सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

किसानों की सात सूत्रीय मांगें मुख्यमंत्री को सौंपा ज्ञापन

- खाद-बीज समय से उपलब्ध कराने और नलकूप मरम्मत की गुहार

विश्ववार्ता संवाददाता

मसौली (बाराबंकी)। भारतीय किसान संघ पदाधिकारियों ने मंगलवार को किसानों की समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री को संबोधित 7 सूत्रीय मांगपत्र खंड विकास अधिकारी संदीप कुमार श्रीवास्तव को सौंपा। ब्लाक अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार और मंत्री उत्तम वर्मा की अगुवाई में दिए गए ज्ञापन में कहा गया है कि किसानों को समय से गुणवत्तापूर्ण खाद, बीज और रासायनिक दवाएं उपलब्ध कराई जाएं।

मिलावटखोरी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई हो। इसके साथ ही खेतों की सिंचाई के लिए राजकीय नलकूपों की समय से मरम्मत कराने और नहरों व नालियों की सफाई मनरेगा योजना से कराने की मांग की गई। किसानों ने दिन में सुचारु रूप से बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया।

जीत के बाद भी नहीं मिला कब्जा, ग्रामीण तहसील में चक्कर लगाने को मजबूर

- एसडीएम बोले, पुलिस बल संग राजस्व टीम मौके पर भेजी जाएगी : एसडीएम

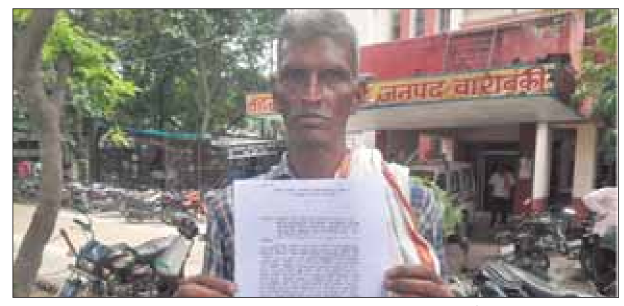

विश्ववार्ता संवाददाता

हैदरगढ़ (बाराबंकी)। तहसील क्षेत्र के कैथी मुस्तफाबाद गांव निवासी एक ग्रामीण न्यायालय से केस जीतने के बाद भी जमीन पर कब्जा न मिलने से परेशान है। पीड़ित ने उपजिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर कब्जा दिलाने की मांग की है।

ग्रामीण राजेंद्र कुमार पुत्र रामऔतार ने बताया कि उन्होंने 2014 में गांव के संतोष पुत्र रामदुलारे से एक विश्वा जमीन खरीदी थी। बैनामा के बाद विक्रेता के बड़े भाई ने आपत्ति दर्ज कर न्यायालय में केस कर दिया। कई साल की कानूनी लड़ाई के बाद न्यायालय ने राजेंद्र के पक्ष में फैसला सुनाया और दाखिल-खारिज भी उनके नाम हो गया। पीड़ित का आरोप है कि न्यायालय से डिग्री मिलने और राजस्व अभिलेख दर्ज होने के बावजूद विपक्षी कब्जा नहीं करने दे रहे हैं। यहां तक कि निर्माण कार्य शुरू करने पर मारपीट और विवाद की धमकी देते हैं। राजेंद्र का कहना है कि जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देने के बाद लेखपाल ने नापजोख की, लेकिन विपक्षी राजस्व नाप को झूठा बता रहे हैं। इस संबंध में एसडीएम हैदरगढ़ राजेश विश्वकर्मा ने कहा कि प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ है।

टिकैतनगर में खाद्य लाइसेंस व पंजीकरण कैम्प, 146 आवेदन मिले

बाराबंकी। सहायक आयुक्त खाद्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह के निर्देशन में तहसील सिरौलीगौसपुर के नगर पंचायत टिकैतनगर स्थित स्वामी विवेकानन्द सभागार में खाद्य लाइसेंस, पंजीकरण कैम्प मंगलवार को आयोजित किया गया। कैम्प में खाद्य पंजीकरण के 142 व लाइसेंस के 4 आवेदन किये गए। कार्यक्रम में नगर पंचायत चेयरमैन जगदीश प्रसाद गुप्ता, व्यापारी नेता कृपा शंकर गुप्ता, अखिलेश चन्द्र जैन, अखण्ड प्रताप सिंह, सोनी जैन व प्रसून शर्मा सहित अन्य लोग मौजूद रहे। सितंबर माह में खाद्य सुरक्षा टीम द्वारा अब तक दूध, पनीर, जैम, जेली, अचार, चॉकलेट आदि के 90 नमूने एकत्र किए गए हैं। इस दौरान व्यापारियों व उपभोक्ताओं को जागरूक करते हुए मिलावटी व खुले खाद्य पदार्थों से बचने, अखबारी कागज का प्रयोग न करने और स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की अपील की गई।

मधवाजलालपुर में मलेरिया की आशंका, स्वास्थ्य विभाग की टीम ने की जांच

- डेंगू-मलेरिया की पुष्टि नहीं, दवाइयां बांटकर लोगों को किया जागरूक

26 बुखार पीड़ितों की जांच, एंटी लार्वा छिड़काव से गांव को कराया सुरक्षित

विश्ववार्ता संवाददाता

सूरतगंज (बाराबंकी)। क्षेत्र के मधवाजलालपुर गांव में मलेरिया के मरीज की सूचना पर मंगलवार को स्वास्थ्य विभाग की टीम पहुंची। टीम ने बुखार से पीड़ित ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया और दवाइयां वितरित कीं। साथ ही पूरे गांव में एंटी लार्वा का छिड़काव कराया गया।

जानकारी के मुताबिक गांव निवासी शिवा अवस्थी (18) को तेज बुखार आने पर परिजन उसे जिला अस्पताल ले गए। जांच में मलेरिया की पुष्टि हुई, जिसके बाद सीएचसी अधीक्षक डॉ. राजर्षि त्रिपाठी के निर्देश पर डॉ. जितेंद्र के नेतृत्व में टीम गांव भेजी गई। टीम ने मौके पर बुखार से पीड़ित 26 लोगों का चेकअप किया। जांच में किसी भी मरीज में मलेरिया या डेंगू के लक्षण नहीं पाए गए। अधीक्षक डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि एहतियात के तौर पर दवाइयां बांटी गईं और गांव में एंटी लार्वा का छिड़काव कराया गया है। फिलहाल हालात नियंत्रण में हैं।

किसान के खाते से उड़े एक लाख, तीन बार में निकाली गई रकम

मसौली (बाराबंकी)। बैंक खातों और एटीएम से होने वाली धोखाधड़ी की घटनाओं पर रोक नहीं लग पा रही है। थाना सफदरगंज क्षेत्र के कस्बा रसौली निवासी एक किसान के खाते से एक ही दिन में तीन बार में एक लाख रुपये गायब हो गए। किसान मोहम्मद इमरान पुत्र निजामुद्दीन का खाता बैंक ऑफ बड़ौदा की बाराबंकी शाखा में है। गत 5 सितंबर को बारह रबी उल अव्वल की छुट्टी के दिन उनके खाते से मोबाइल नंबर 8777609496 के माध्यम से तीन ट्रांजैक्शन में 50 हजार, 48 हजार और 2 हजार रुपये निकल गए। जब इमरान के मोबाइल पर मैसेज आया तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। पीड़ित ने तत्काल बैंक प्रबंधक और सफदरगंज पुलिस को सूचना दी। किसान का कहना है कि उन्होंने कभी भी किसी को अपने खाते से संबंधित जानकारी नहीं दी और न ही किसी संदिग्ध कॉल का जवाब दिया। मामले में पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। इमरान ने इस धोखाधड़ी की शिकायत पुलिस अधीक्षक और मुख्यमंत्री पोर्टल पर भी दर्ज कराई है।

14वां सामूहिक विवाह व निकाह की तैयारियां तेज, किसानों ने ठोकी ताल

बीकेयू हैदरगढ़ की बैठक में दहेजमुक्त समाज का संकल्प

- एसडीएम के आदेश के बाद भी कार्यवाई नहीं कर रही पुलिस : यूनियन

विश्ववार्ता संवाददाता

हैदरगढ़ (बाराबंकी)। भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) की ब्लॉक इकाई हैदरगढ़ की मासिक बैठक मंगलवार को पुरानी तहसील स्थित शिव मंदिर प्रांगण में हुई। बैठक में 14वें सामूहिक विवाह एवं निकाह समारोह की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा हुई। किसानों ने समाज को दहेजमुक्त शादी की ओर ले जाने का संकल्प लिया। बैठक की अध्यक्षता ब्लॉक अध्यक्ष डॉ. हरीराम पाल ने की, जबकि संचालन महासचिव राजेश कुमार यादव ने किया। इस दौरान जिला उपाध्यक्ष महेंद्र प्रताप सिंह व तहसील संगठन मंत्री सुरेंद्र प्रताप सिंह विशेष रूप से मौजूद रहे।

बैठक में 15 तारीख को होने वाले जिलेव्यापी रक्तदान शिविर में किसानों से बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील भी की गई। साथ ही सुबेहा थाने की ढिलाई पर किसानों ने कड़ा रोष जताया। कहा कि गुलामा बाद निवासी ओम नारायण के जमीन विवाद पर एसडीएम का आदेश थाना स्तर पर पहुंचने के बाद भी पुलिस कार्रवाई नहीं कर रही है। यूनियन ने चेतावनी दी कि यदि समस्या का समाधान नहीं हुआ तो सत्याग्रह आंदोलन छेड़ा जाएगा। बैठक में रामनिवास वर्मा, गया प्रसाद, रामनरेश, कमलेश, श्रीराम, रामचंद्र, माता बदल, हरदयाल साहब समेत सैकड़ों किसान उपस्थित रहे।

फर्जी हस्ताक्षर से निकाले गए 25 लाख होंगे वापस

जांच में दोषी पाए गए प्रधानाध्यापक निलंबित, धन वापसी की प्रक्रिया शुरू

- रुपए नहीं लौटाए तो होगा मुकदमा दर्ज, जिम्मेदारी तय
- विद्यालय निर्माण की राह फिर खुलने की उम्मीद

विश्ववार्ता संवाददाता

फतेहपुर (बाराबंकी)। शिक्षा क्षेत्र फतेहपुर के ग्राम गौरा सैलक में प्राथमिक विद्यालय के निर्माण कार्य के लिए आवंटित करीब 25 लाख रुपये की पहली किस्त में गड़बड़ी का मामला सामने आया है। जांच में दोषी पाए जाने पर प्रधानाध्यापक विद्या सागर को तत्काल निलंबित कर दिया गया है।

आरोप है कि विद्यालय निर्माण हेतु शासन से पीएफएमएस खाते में भेजी गई राशि को प्रधानाध्यापक ने फर्जी हस्ताक्षर करवाकर विभिन्न फर्मों के खातों में ट्रांसफर कर दिया। इस संबंध में विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष रामू ने लिखित शिकायत दर्ज कर कार्रवाई की मांग की थी। खंड शिक्षा अधिकारी की जांच रिपोर्ट के आधार पर बीएसए ने निलंबन की कार्रवाई की। अब पूरे 25 लाख रुपये को बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से विद्यालय की एसएमसी समिति के खाते में वापस लाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। खंड शिक्षा अधिकारी फतेहपुर, आराधना अवस्थी ने बताया कि यदि निर्धारित समय में धनराशि वापस नहीं की गई तो मुकदमा भी दर्ज कराया जाएगा। धनराशि वापस आने के बाद समिति की देखरेख में विद्यालय निर्माण कार्य को फिर से शुरू कराया जाएगा।

मगरमच्छ ने युवक को मार डाला, कमर को जबड़े में दबाकर खींचा

विश्ववार्ता ब्यूरो

निघासन खीरी। लखीमपुर खीरी में मगरमच्छ में युवक को मार डाला। युवक अपने दोस्त के साथ खेत से घर लौट रहा था। तभी, नाले से अचानक मगरमच्छ निकला और उसने युवक पर हमला कर दिया। मदद के लिए उसने आवाज लगाई तो दोस्त पीछे पलटा। आसपास काम कर रहे लोग भी दौड़े, लेकिन तब तक मगरमच्छ युवक को मार चुका था। हमले के बाद मगरमच्छ दोबारा नाले में चला गया। ग्राम प्रधान का कहना है कि नाले में करीब 4 मगरमच्छ हैं, लेकिन वन विभाग कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है।

पूरा मामला मझगई थाना क्षेत्र के मुर्गहा गांव का है। मुर्गहा गांव का रहने वाला श्रीवास्तव (21) पुत्र बद्री प्रसाद सोमवार की शाम को अपने खेत से काम करके लौट रहा था। उसके साथ में एक दोस्त मंगल भी था जो उससे 10 मीटर आगे चल रहा था। गांव के करीब ही

मृतक की फाइल फोटो

सुतिया नाला पार करते समय किनारे पर बैठे मगरमच्छ ने पीछे से उस पर हमला कर दिया। जबड़े से कमर के हिस्से को दबा लिया और गहरे पानी में खींच ले गया। चिल्लाने पर उसका साथी मंगल बचाने के लिए भागा। उसने मदद के लिए आवाज लगाई। आसपास के खेतों से लौट रहे लोग भी मौके पर पहुंचे। लेकिन तब तक श्रीवास्तव की मौत हो चुकी थी। मगरमच्छ ने शरीर का निचला हिस्सा खा डाला। हमले के बाद मगरमच्छ वापस नाले में चला गया।

मवेशियों के लिए चारा लेने गया था

मृतक श्रीवास्तव के चचेरे भाई रवि ने बताया कि उनका भाई दोपहर में तीन बजे मवेशियों के लिए खेत से चारा लेने गया था। देर शाम वापस लौटते समय नाले को पार करते समय एक मगरमच्छ ने उनके भाई पर हमला कर दिया। आसपास मौजूद लोगों ने उनके भाई को बचाने की कोशिश की, लेकिन मगरमच्छ के हमले से उनके भाई की मौत हो गई। मृतक के परिवार में उसके पिता की पहले ही मौत हो चुकी है। घर में उसकी बुजुर्ग मां सुमन उसके भाई रमेश, गुरु और कमल बचे हैं। ग्राम प्रधान के मुताबिक परिवार के पास एक एकड़ जमीन है। परिवार मेहनत मजदूरी करके जीवन-यापन कर रहा है।

पांच हजार रुपए की मदद दी गई

मझगई वन रेंज के रेंजर अंकित सिंह ने बताया कि मगरमच्छ के हमले से एक युवक की मौत हुई है। सूचना पर रात में ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची थी। परिवार को तत्काल 5000 रुपए की आर्थिक मदद दी गई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है, शासन से मिलने वाली आर्थिक सहायता परिवार को दिलाई जाएगी। ग्राम प्रधान अवध राम ने बताया कि नाले में करीब 04 मगरमच्छ हैं। वन विभाग को सूचना दी जाती है, लेकिन वन विभाग उनको नहीं पकड़ता है। अगर वन विभाग समय रहते इन मगरमच्छों को पकड़ लेता तो शायद युवक की जान नहीं जाती। इस हमले से गांव में दहशत का माहौल है। वन विभाग ने लोगों से अलर्ट रहने की अपील की है।

एक नजर

राजेश कुमार यादव बने प्रदेश उपाध्यक्ष

बाराबंकी। अखिल भारतीय अधीनस्थ न्यायालय कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष पद पर राजेश कुमार यादव को नियुक्त किया गया है। इस संबंध में सूचना संघ के प्रदेश अध्यक्ष विपिन कुमार सिंह ने पत्र जारी कर यह जानकारी दी है। राजेश कुमार यादव जिले में सिविल जज (सीनियर डिवीजन) न्यायालय में पेशकार के पद पर कार्यरत हैं। उनकी नियुक्ति पर साथियों और कार्यकर्ताओं ने हर्ष जताते हुए उन्हें बधाई दी।

दहेज में दो लाख और बाइक की मांग

हैदरगढ़ (बाराबंकी)। तिवारी का पुरवा निवासी विवाहिता ने ससुरालियों पर दहेज के लिए उत्पीड़न, जेवरात छीने जाने और मासूम बच्ची सहित घर से निकाल देने का गंभीर आरोप लगाया है। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर कोतवाली पुलिस ने पीड़िता की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी अनुसार रेनू पाल पुत्री राम अवध पाल का विवाह 9 फरवरी 2021 को लखनऊ जनपद के मोहनलालगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत बैरीसालपुर निवासी अनूप पाल से हुआ था। विवाह में यथासंभव दान-दहेज दिया गया, लेकिन ससुराल पक्ष लगातार दो लाख रुपये नकद और मोटरसाइकिल की मांग करता रहा।

मगरमच्छ के हमले में लापता का मिला शव

लखीमपुर खीरी। लखीमपुर खीरी के फरधान थाना क्षेत्र में एक दर्दनाक घटना सामने आई है। कोरैया जंगल निवासी विक्रम (पुत्र कंधई) का शव सिकंदरपुर के रपटा पुल के पास से बरामद हुआ है। विक्रम पेशे से बढ़ई थे। मृतक के भांजे विपिन सिंह ने बताया कि विक्रम 5 सितंबर को सुंदरवाल देवरिया में अपने भतीजे के जन्मदिन समारोह में शामिल हुए थे। 7 सितंबर की सुबह वह साइकिल से वापस लौट रहे थे।

रपटा पुल पर से गुजरते समय मगरमच्छ ने उन पर हमला कर दिया। घटना के समय पुल पर तेज धार और बाढ़ का पानी बह रहा था। मगरमच्छ उन्हें खींचकर पानी में ले गया। घटनास्थल पर ग्रामीणों और गोताखोरों ने खोजबीन की। 9 सितंबर मंगलवार को दोपहर 12 बजे उनका अधखाया शव मिला। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया गया है।

शताब्दी संकल्प @2047 : शिक्षा-कृषि जगत से गूंजे सुझाव | साझा प्रयास ही बनाएंगे सपनों का उत्तर प्रदेश

विकसित उप्र की राह में...प्रबुद्धजनों, छात्रों और किसानों ने रखे विचार

विश्ववार्ता ब्यूरो अनूप कुमार वर्मा

लखीमपुर खीरी। 'विकसित उत्तर प्रदेश' के शताब्दी संकल्प @2047 को लेकर सोमवार को जिले में प्रबुद्धजन विशेषज्ञ टीम का संवाद जारी रहा। टीम ने युवराज दत्त महाविद्यालय में छात्रों, शिक्षकों व शिक्षाविदों से सीधी बातचीत की। इसके बाद वि.खं. कुंभी (गोला) स्थित कृषि विज्ञान केंद्र जमुनाबाद में कृषि शिक्षाविदों, शोधार्थियों, कृषि वैज्ञानिकों और किसानों से सुझाव सुने।कार्यक्रम की शुरुआत सीडीओ अभिषेक कुमार, सेवानिवृत्त आईएएस कुमदलता श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त आईएफएस अजय कुमार श्रीवास्तव, सेवानिवृत संयुक्त निदेशक यूपीसी कॉरपोरेशन डॉ. रामशब्द जैसवारा और

सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता पीडब्ल्यूडी सलिल यादव और प्राचार्य, वाईडी कॉलेज डॉ हेमंत पाल ने दीप प्रज्वलित कर की। इस दौरान पीडी एसएन चौरसिया, डीडीओ गजेंद्र प्रताप सिंह, डीडी कृषि गिरीश चंद्र सहित बड़ी संख्या में अधिकारी मौजूद रहे।

शिक्षा व कृषि जगत से जुड़े प्रबुद्धजनों ने खुले मंच पर रखे विचार

शताब्दी संकल्प @2047 कार्यशाला में वाईडी कॉलेज के छात्रों, शिक्षकों, शिक्षाविदों, कृषि शिक्षाविदों और शोधार्थियों ने खुले मंच पर अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर शासन से नामित प्रबुद्ध जन विशेषज्ञ टीम के सभी सदस्यों ने क्रमवार सभा को संबोधित किया। इसी क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र जमुनाबाद में आयोजित कार्यशाला में चंद्रशेखर आजाद कृषि महाविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों, कृषि वैज्ञानिकों और किसानों ने भी अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

शिक्षा से लेकर खेती तक... विकास की राह पर नई सोच

इकोनॉमिक्स विभाग के छात्र राज मिश्रा और छात्रा साक्षी श्रीवास्तव ने कहा कि पारंपरिक कोर्स के साथ-साथ टेक्निकल स्किल भी सिखाई जाए। उनका मानना है कि यह कदम युवाओं को रोजगार पाने में बड़ी मदद देगा। किसान त्रिलोचन सिंह ने कहा कि किसानों को छोटी मशीनों और प्लांट से उन्नत किस्म के बीज तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जाए। इससे न केवल लागत घटेगी बल्कि उत्पादकता भी कई गुना बढ़ेगी।

शताब्दी संकल्प @2047 कार्यशाला में सेवानिवृत्त

आईएएस कुमदलता श्रीवास्तव ने कहा कि विकसित उत्तर प्रदेश का सपना तभी पूरा होगा, जब शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और बुनियादी ढांचे पर सबके विचार सामने आएँ। शासन नागरिकों से सीधे सुझाव मांग रहा है और हर सुझाव विकास में मील का पत्थर साबित होगा। वहीं, सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता पीडब्ल्यूडी सलिल यादव ने कहा कि "विकसित भारत-विकसित उप्र का सपना केवल सरकार का नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश का साझा लक्ष्य है। 'विकसित उत्तर प्रदेश' की परिकल्पना हर प्रदेशवासी के सहयोग से ही साकार होगी।

सीडीओ ने को QR कोड स्कैन कर सुझाव देने की अपील- सीडीओ अभिषेक कुमार ने कार्यशाला की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस पहल का मकसद जनता और सरकार के बीच सीधा संवाद स्थापित करना है। उन्होंने छात्रों और नागरिकों से QR कोड स्कैन कर अपने बहुमूल्य सुझाव साझा करने की अपील की।

सीडीओ संग गोला पहुँची प्रबुद्धजन विशेषज्ञ टीम, पर्यटन व विकास संभावनाओं पर चर्चा- शताब्दी संकल्प @2047 संवाद यात्रा के तहत सोमवार को सीडीओ अभिषेक कुमार प्रबुद्धजन विशेषज्ञ टीम को लेकर गोला गोकर्णनाथ पहुँचे।

संपादकीय

बाढ़ की विभीषिका से बेहाल जिंदगी

उत्तर भारत इस समय बाढ़ की विभीषिका से जूझ रहा है।पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और उत्तराखंड के साथ बिहार तक इंद्रदेव के प्रकोप ने खेत-खलिहान डुबो दिए हैं। पंजाब के 23 जिलों के करीब दो हजार गांव पानी में डूबे हैं। अब तक 46 लोगों की मौत हो चुकी है। पंजाब पिछले 4 दशकों की सबसे भीषण बाढ़ से गुजर रहा है। क्योंकि रावी, ब्यास तथा सतलुज नदियों सहित सब नदी-नाले उफान पर हैं। लगभग 2000 गांव बाढ़ की चपेट में आने से 1,74,454 हैक्टेयर फसल तबाह हो चुकी है। मौसम विभाग की ताजा चेतावनियां बताती हैं कि आने वाले दिनों में हालात और बिगड़ सकते हैं। हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में सतलुज नदी पर बने भाखड़ा डैम तथा हिमाचल के ही कांगड़ा में ब्यास नदी पर बने पौंग डैम का संचालन 'भाखड़ा-ब्यास मैनेजमैंट बोर्ड' करता है, जबकि थीन डैम (रणजीत सागर डैम जम्मू-कश्मीर तथा पंजाब की सीमा पर स्थित है। भारी वर्षा होने पर नियंत्रित रूप से पानी छोड़ने पर भी यहां के निचले इलाकों में बाढ़ आ गई है। राहत और बचाव कार्य जारी हैं, लेकिन सवाल उठता है कि हर साल होने वाली इस त्रासदी से आखिर कब स्थायी सबक लिया जाएगा। क्योंकि पूर्व में भी देश में ऐसी भयानक बाढ़ें आने के बाद से ही इस पर काबू पाने के लिए चिंतन किया जाता रहा है कि सैलाब को लेकर कौन से उपाय किए जाएं परंतु पानी उतरने के बाद सब भुला दिया जाता है। राजधानी दिल्ली एन.सी.आर. में यमुना का पानी खतरे का निशान पार कर जाने के कारण लोगों के घरों में जा घुसा और अनेक स्थानों पर तो लोग अपने मकानों की पहली मंजिल पर कैद होने को मजबूर हो गए और लगभग समूचे उत्तर भारत में लाखों की संख्या में लोगों को अपने घर-बार छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ा। उत्तर प्रदेश के नोएडा, लखनऊ, मथुरा, आगरा शहर के कई घाट और श्मशानघाट पानी में डूब गए। आगरा में यमुना का पानी ताजमहल की सीमा तक पहुंच गया। कई स्थानों पर हजारों फार्म हाऊसों में पानी भर गया। हरियाणा के झज्जर, हिसार, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, पंचकूला, भिवानी, अम्बाला आदि में जल-थल हो गया और कई जगह मकानों में 2 से 4 फुट तक पानी भर गया। हिमाचल प्रदेश में भी जान-माल की अपूर्णीय क्षति के अलावा डेढ़ हजार के लगभग सड़कें बंद हैं और भूस्खलन, बादल फटने आदि से अनेक लोगों की जान जा चुकी है। मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तराखंड भी इस आपदा से मुक्त नहीं हैं। उत्तर भारत का यह संकट केवल भारी बारिश की कहानी नहीं है, बल्कि हमारी नीतिगत और प्रशासनिक कमियों का आईना भी है। मानसून हर साल आता है, कभी कमजोर तो कभी प्रचंड। लेकिन जब बाढ़ जैसी आपदा हर साल जनजीवन को तहस-नहस करती है , तो यह मान लेना होगा कि समस्या सिर्फ बादलों से नहीं, बल्कि हमारी तैयारियों की कमी से भी है। पंजाब में प्रधानमंत्री का दौरा इस बात का संकेत है कि आपदा बड़ी है, लेकिन केवल दौरे और मुआवजे की घोषणा से किसानों और गांवों का दर्द नहीं मिटेगा। जरुरत है ठोस, दीर्घकालिक योजना की। सर्वाधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि इस समय जबकि बाढ़ से बड़ी संख्या में जान-माल की क्षति हुई है, इंसानों और बड़ी संख्या में मवेशियों के मारे जाने तथा हजारों एकड़ भूमि पर खड़ी फसलें नष्ट होने, सड़कें टूटने और पुलों के बह जाने आदि के कारण समूचे उत्तर भारत में बाढ़ का केवल किसी एक राज्य पर ही नहीं बल्कि सारे देश पर आर्थिक तथा अन्य पहलुओं से क्या प्रभाव पड़ेगा और इसे कैसे लोगों की मदद कर कम किया जा सकता है। बाढ़ से जहां लोगों के लिए समस्याएं पैदा होती हैं, वहीं बाढ़ के गंदे पानी से न सिर्फ गंदगी और संक्रमण फैलता है, बल्कि कई गंभीर जल जनित बीमारियां भी तेजी से पनपने लगती हैं। सबसे अधिक खतरा हैजा, पीलिया, मलेरिया, डेंगू, टायफाइड, उल्टी, दस्त तथा त्वचा आदि के रोगों का होता है। डाक्टरों के अनुसार बाढ़ के बाद फैलने वाली बीमारियों के लक्षण अलग-अलग हो सकते हैं। हैपेटाइटिस- ए और पीलिया जैसी बीमारियों में त्वचा और आंखों का पीला पड़ना तथा थकान और मितली की शिकायत हो सकती है। मलेरिया और डेंगू में तेज बुखार, सिरदर्द, शरीर दर्द और मांसपेशियों में ऐंठन हो सकती है। डेंगू में प्लेटलैट्स तेजी से कम होने लगते हैं जिससे पीड़ित व्यक्ति के प्राणों को खतरा भी हो सकता है।

कटाक्ष
हसन जैदी

2029 तक चलने वाला मिथ्या प्रचार है वोटों की चोरी

डॉ. हरिकृष्ण बड़ोदिया

अब जब बिहार में वोट अधिकार यात्रा समाप्त हो गई तब इंडी गठबंधन खेमा खासकर राहुल और तेजस्वी इस बात का मूल्यांकन जरूर कर रहे होंगे कि इस यात्रा में जनता का कितना समर्थन मिला और वह वोटों में तब्दील हो पाएगा या नहीं। पूरे अभियान में महत्वपूर्ण यह रहा कि दोनों नेताओं की जोड़ी लगातार उन बातों पर ही केंद्रित रही जिनका संबंध सीधे-सीधे मोदी और केवल मोदी से है। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि यह यात्रा बाय हुक और कुक मोदी को सत्ता से हटाने पर ही केंद्रित की गई। यात्रा के प्रारंभ में भले ही एसआईआर का विरोध तीव्र था किंतु यात्रा के लगभग आधे हिस्से में बिहार की सड़कों पर केवल एक नारा गूंजा कि वोट चोर गद्दी छोड़ जबकि इस नारे का सीधा संबंध बिहार की राजनीति और विधानसभा चुनाव से कतई नहीं है। 2014 के बाद के जितने चुनाव चाहे वह लोकसभा के हों या विधानसभा के हों भाजपा ने मोदी के नाम और उनकी उपलब्धियां पर ही लड़े यही कारण है कि सत्ता विरोधी विपक्षी खेमा यह अच्छी तरह जानता है कि नवंबर में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव भी मोदी के नाम और उपलब्धियों पर ही लड़े जाएंगे और इसलिए उनको टारगेट कर जनमानस के मन में मोदी के प्रति अविश्वास जगा कर ही कुछ हासिल किया जा सकता है। लेकिन यह एक भ्रम मात्र है कि मोदी के विरुद्ध नारे लगाकर, अपशब्दों का उपयोग कर, मोदी को गाली देकर या फिर भाषाई संस्कार त्याग कर या मोदी को नीचा दिखाकर कोई उपलब्धि हासिल की जा सकती है। पिछले दिनों बिहार की सड़कों पर जिस तरह भाषाई मर्यादा तोड़ी गई जिस तरह गालियां बकी गईं उनसे राहुल और तेजस्वी की छवि मोदी की तुलना में ऊंची हुई होगी ऐसा सोचना बेवकूफी के सिवाय कुछ नहीं है। हालांकि तेजस्वी ने अपने बयानों में राहुल की तुलना में ज्यादा संयम बरता लेकिन वोट चोर गद्दी छोड़ के नारे को उन्होंने भी गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाया। राहुल के बयानों पर नजर डालें तो स्पष्ट होता है कि उन्हें मोदी से दुश्मनी की हद तक नफरत है जो राजनीतिक संघर्ष की स्थितियों की चरम सीमा कहीं जा सकती है और यह आज से नहीं बल्कि जब से मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री बने कमोबेश तब से ही है। हां उसकी तीव्रता में वृद्धि 2019 के बाद ही हुई है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में हर एक नेता की राजनीति का रास्ता चुनावों से होकर ही गुजरता है और इसमें सफलता या असफलता नेताओं की विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। 2024 के चुनाव ने स्पष्ट किया कि मोदी की विश्वसनीयता अभी भी बनी हुई है भले ही लोकसभा में उनकी सीटें कम आई हैं। विपक्ष इसी बात से परेशान है कि लगातार तीन चुनावों में मिली हार उसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह अंकित कर रही है। 2014 के चुनाव में कांग्रेस को लगता था कि यूपीए के 10 सालों के शासन की एंटी इनकंबेंसी के चलते जनता ने बदलाव का प्रयोग किया है जो 2019 में पूरी तरह से पलट जाएगा। लेकिन 2019 में जब मोदी 2014 की तुलना में ज्यादा ताकतवर होकर सत्ता में वापस आए तब विपक्ष ने ईवीएम में हेरा फेरी का 2024 के चुनाव तक पूरे 5 साल ढोल पीटा। लेकिन चुनाव आयोग की ईवीएम हैक करके दिखाने की चुनौती और सुप्रीम कोर्ट के निर्णय ने स्पष्ट कर दिया कि ईवीएम से किसी तरह की हेरा फेरी संभव नहीं है। विपक्ष समझ गया कि यह मुद्दा आगे और चलने वाला नहीं है जिसको लेकर सड़कों पर उतरा जाता। ऐसे में बिहार चुनावों के पहले वोट चोरी की उपकल्पना तैयार की गई जिसे जनता में प्रचारित करने के लिए 1300 किलोमीटर की वोट अधिकार यात्रा आयोजित की गई। 2019 में जिस तरह राफेल डील पर मोदी को चौकीदार चोर है कहा था उसी तरह विपक्ष एक बार फिर मोदी को वोटों की चोरी का आरोप लगाकर घेर रहा है। निश्चित ही यह मिथ्या प्रचार 2029 तक चलने वाला है। परिणाम क्या होगा यह तो भविष्य के गर्भ में छिपा है लेकिन इतना तय है कि देश की जनता ऐसे खोखले नारों से प्रभावित होने वाली नहीं है। पिछले एक महीने के घटनाक्रम ने जिसमें राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत पर टैरिफ बार शुरू किया, जिस तरह ट्रंप ने बार-बार ऑपरेशन सिंदूर में युद्ध विराम समझौते का श्रेय लेने की कोशिश की उसको स्थितप्रज्ञ मोदी ने बिना वाद विवाद में पड़े जो मौन जवाब दिया वह मोदी की कूटनीतिक रणनीति का शानदार उदाहरण है। यही नहीं शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) सम्मेलन में शिरकत कर मोदी ने जिस तरह ट्रंप को रूस, चीन और भारत के नए वर्ल्ड ऑर्डर के अभ्युदय की योजना दिखाई उसने शक्तिशाली अमेरिका को दोबारा सोचने पर मजबूर किया यही कारण है कि ट्रंप ने सुर बदलकर कहा कि मैं हमेशा मोदी का दोस्त रहूंगा वे एक महान प्रधानमंत्री हैं। यह मोदी की बहुत बड़ी कामयाबी मानी जाएगी जिसका सकारात्मक प्रभाव भारत की चुनावी राजनीति और मतदाताओं पर पड़ना तय है जो आने वाले चुनाव में भाजपा और उसके गठबंधन एनडीए को लाभदायक सिद्ध होगा। मोदी के विरुद्ध भारत में जितना दुष्प्रचार किया जा रहा है उसके उलट अमेरिका में ट्रंप की भारत नीति का विरोध हो रहा है। यही नहीं अमेरिकी प्रोफेसर टेरिल जोंस ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री मोदी रूस और यूक्रेन युद्ध को समाप्त कर सकते हैं हालांकि उन्होंने इस पर अभी तक उतना ध्यान नहीं दिया। यदि मोदी यह भूमिका निभाते हैं तो वे न केवल सफल होंगे बल्कि वे ही शांति का नोबेल पुरस्कार के हकदार होंगे। राहुल गांधी ने अपनी वोट अधिकार यात्रा में जिस तरह अशोभनीय भाषा का उपयोग कर मोदी को नीचा दिखाने का प्रयत्न किया है वह कतई उनके पक्ष में माहौल नहीं बना सकता। ऐसे में जबकि भारत दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था बन गई है राहुल यदि ट्रंप की नकल करते हुए इसे डेड इकोनामी कहें तो इससे नुकसान किसे होगा समझा जा सकता है। तो वहीं दूसरी ओर राहुल जिस तरह चुनाव आयोग के अधिकारियों को धमकाते हुए कहते हैं कि हम इन्हें छोड़ेंगे नहीं भले ही यह रिटायर्ड ही क्यों ना हो जाएं उनकी छवि को कुंठाग्रस्त और बदले की सियासत वाली बनाती है। उनके जितने भी दावे हैं वह सब उन्हें असफल नेता निरूपित करते हैं। वे 2019 के बाद यह बताने में नाकाम रहे कि भारत की जनता कांग्रेस को क्यों जिताए, वह यह बताने में नाकाम रहे कि उनकी पार्टी के सिद्धांत भाजपा के सिद्धांत से श्रेष्ठ हैं, वह यह बताने में भी नाकाम रहे कि यदि वह सत्ता में आएंगे तो देश को किस तरह का शासन प्रशासन देंगे और जनहित के कौन से काम उनकी प्राथमिकताएं बनेंगी। अब तक उन्होंने जो प्रचार किया वह केवल मोदी की आलोचना और झूठे आरोपों के इर्द-गिर्द ही घूमता रहा। वे अब तक यह बताते ही घूमते रहे कि भारत का लोकतंत्र खतरे में है, संविधान खतरे में है, चुनाव में वोटो की चोरी की जा रही है जो गुजरात से शुरू होकर राष्ट्रीय स्तर पर 2014 से अब तक की जा रही है जिसकी वजह से मोदी जीत रहे हैं। मोदी सरकार भ्रष्ट है, चीन ने भारत की जमीन पर कब्जा कर लिया है इत्यादि किंतु उनके पास इन सब बातों के कोई ठोस प्रमाण नहीं हैं और वोट चोरी के जो प्रमाण वे बता रहे हैं उन पर उन्हें खुद विश्वास नहीं है। यदि उन्हें इन पर विश्वास होता तो निश्चित ही वे चुनाव आयोग की मांग के अनुसार हलफनामे पर हस्ताक्षर कर आयोग को जांच के लिए मजबूर कर देते। सच्चाई तो यह है कि कांग्रेस के प्रचार के कुछ कदम तो ठीक उसी तरफ इशारा करते हैं जिनकी वजह से पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश में सरकारें गिर गईं। आशंका तो यह व्यक्त की जा रही है कि राहुल गांधी भारत विरोधी विदेशी गैंग के इशारे पर ही इस तरह का प्रचार कर रहे हैं जिनका मकसद भारत को अस्थिर कर सत्ता परिवर्तन है। कांग्रेस चुनाव आयोग को इसलिए कटघरे में खड़ा कर रही है क्योंकि वह देश से बोगस और विदेशी घुसपैठियों के मतदाता सूची से नाम हटा रहा है जो विपक्ष के पक्ष में मतदान करते हैं। यही नहीं कांग्रेस अब तक यह प्रचारित करने का प्रयत्न करती रही है कि भारत में जितनी भी संस्थाएं हैं मोदी की कठपुतली हैं। वह चाहे सुप्रीम कोर्ट हो, प्रवर्तन निदेशालय हो या सीबीआई और चुनाव आयोग हो सबका दुरुपयोग किया जा रहा है। इस तरह इन संस्थाओं को बदनाम कर वे अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा पूरी करना चाहते हैं लेकिन इसकी संभावना लगभग शून्य है कि भारत की जनता उनके इस तरह के दुष्प्रचार पर सहमत होकर उनके पक्ष में अपनी मुहर लगा देगी।

अपनी राय हमें इस मेल पर भेंजे- vishwavarta.response@gmail.com

मैं ठीक हूँ का मुखौटा और भीतर का शून्य

प्रो. आरके जैन

जब अंधेरा अपने चरम पर पहुंचता है, तो वह न केवल आंखों को, बल्कि आत्मा को भी निगल लेता है। वह क्षण, जब मन की चीखें बाहरी दुनिया तक नहीं पहुंचतीं, जब मुस्कान के पीछे छिपा दर्द किसी को दिखाई नहीं देता, और जब इंसान अपनी सांसों से ही हार मान लेता है, यही वह पल है जो विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस हमें झकझोरता है, जागने को विवश करता है। आत्महत्या कोई क्षणिक निर्णय नहीं, बल्कि वर्षों की उपेक्षा, अनसुनी पीड़ा और टूटे सपनों से रिसता हुआ धीमा जहर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, हर साल लगभग 7,00,000 जिंदगियां आत्महत्या के कारण खामोश हो जाती हैं, हर 40 सेकंड में एक जीवन रेत की तरह मुट्ठी से फिसल जाता है। भारत में, नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) 2022 के आंकड़े बताते हैं कि 1,70,000 से अधिक लोग इस अंधेरे में खो गए, जिनमें युवा और मध्यम आयु वर्ग सबसे अधिक प्रभावित रहे। ये आंकड़े महज संख्याएं नहीं, बल्कि अनकहे दर्द, अनसुनी कहानियों और अनदेखे आंसुओं की मूक गवाही हैं। हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहां तकनीक ने हमें जोड़ा तो है, पर आत्मीयता की डोर को कमजोर कर दिया है। सोशल मीडिया पर हजारों दोस्तों की भीड़ हो सकती है, लेकिन दिल की गहराइयों को सुनने वाला एक भी साथी मुश्किल से मिलता है। मानसिक स्वास्थ्य आज भी हमारे समाज में एक अनदेखा, अनछुआ विषय है। अवसाद को कमजोरी, चिंता को अतिशयोक्ति और उदासी को क्षणिक मूड समझकर टाल दिया जाता है। लेकिन ये भावनाएं, अगर समय पर न सुनी जाएं, तो एक ऐसी खाई बन जाती हैं, जहां से वापसी की राह धुंध में खो जाती है। डब्ल्यूएचओ की एक रिपोर्ट चेतावनी देती है कि 75% लोग, जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं, विशेष रूप से निम्न और मध्यम आय वाले देशों में, उन्हें उचित चिकित्सा या सहायता नहीं मिलती। भारत में यह संकट और गहरा है, जहां प्रति 1,00,000 लोगों पर केवल 0.3 मनोचिकित्सक उपलब्ध हैं। यह कमी केवल आंकड़ों की नहीं, बल्कि हमारी संवेदनशीलता और प्राथमिकताओं की कमी को भी उजागर करती है। आत्महत्या की ओर बढ़ता हर कदम एक अनुत्तरित सवाल छोड़ जाता है, क्या हम वाकई अपने आसपास के लोगों को देख पाते हैं? क्या उनकी चुप्पी की गहराई को समझ पाते हैं? समाज में सफलता की चमक को तो हम तालियों से नवाजते हैं, पर असफलता की ठोकर से टूटे मन की पुकार को अनसुना कर देते हैं। हम बच्चों से ऊंचे अंक मांगते हैं, पर उनकी मानसिक थकान को नजरअंदाज करते हैं। रिश्तों की छोटी-छोटी दरारों को हम मामूली समझ लेते हैं, जो धीरे-धीरे आत्मा को चूर-चूर कर देती हैं। एक अध्ययन बताता है कि भारत में 40% से अधिक आत्महत्या के मामलों में पारिवारिक समस्याएं, आर्थिक तंगी और सामाजिक दबाव जड़ में हैं। ये आंकड़े सिर्फ संख्याएं नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक ढांचे की खामियों की मूक गवाही हैं। जीवन की कीमत सिर्फ सांसों से नहीं, बल्कि उन संवेदनाओं से मापी जाती है जो हर धड़कन में बसती हैं। हर मुस्कान के पीछे छिपा दर्द, हर चुप्पी में दबी पुकार—इन्हें सुनना ही सच्ची मानवता है। "मैं ठीक हूँ" का जवाब हमेशा सच नहीं होता; यह अक्सर एक मुखौटा है, जो टूटे मन को छिपाता है। हमें सीखना होगा कि इस मुखौटे के पीछे की सच्चाई को कैसे पढ़ा जाए। मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियाँ कोई कमजोरी नहीं, बल्कि इंसान होने का एक स्वाभाविक हिस्सा हैं। विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस, जो हर साल 10 सितंबर को मनाया जाता है, हमें यही संदेश देता है—जागरूकता ही नहीं, बल्कि करुणा और संवेदनशीलता के साथ एक-दूसरे का साथ देना। एक साधारण सवाल, "तुम सचमुच कैसे हो?" किसी की जिंदगी को अंधेरे से उजाले की ओर ले जा सकता है। आत्महत्या रोकथाम केवल चिकित्सा या परामर्श तक सीमित नहीं, बल्कि यह हर उस इंसान की जिम्मेदारी है जो किसी की जिंदगी का हिस्सा है। एक सच्चा दोस्त जो बिना आलोचना के सुने, एक परिवार जो बिना शर्त प्यार दे, एक सहकर्मी जो प्रतिस्पर्धा में भी इंसानियत न भूले—ये छोटे-छोटे कदम किसी के जीवन में उजाला ला सकते हैं। इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर सुसाइड प्रिवेंशन (आईएएसपी) बताता है कि सामुदायिक समर्थन और खुला संवाद आत्महत्या रोकथाम में सबसे प्रभावी हथियार हैं। एक अध्ययन के मुताबिक, जिन्हें अपने आसपास भावनात्मक सहारा मिला, उनकी आत्महत्या की प्रवृत्ति 50% तक कम हुई। यह आंकड़ा चीख-चीखकर कहता है कि हमारी एक छोटी-सी कोशिश, किसी को यह यकीन दिलाना कि उसका वजूद अनमोल है, एक जिंदगी को अंधेरे से रोशनी की ओर मोड़ सकती है। आज के दौर में, जब तनाव और अवसाद की छाया तेजी से फैल रही है, मानसिक स्वास्थ्य को शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्व देना अनिवार्य है। स्कूलों में बच्चों को न केवल गणित और विज्ञान, बल्कि अपनी भावनाओं को समझने और व्यक्त करने की कला भी सिखानी होगी। कार्यस्थलों पर मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों और खुली बातचीत को प्रोत्साहन देना होगा। परिवारों में ऐसी सुरक्षित जगह बनानी होगी, जहां हर सदस्य बिना डर के अपनी कमजोरियों को साझा कर सके। भारत में, जहां मानसिक स्वास्थ्य को लेकर सामाजिक कलंक अब भी गहरा है, यह बदलाव और भी जरूरी है। नेशनल मेंटल हेल्थ सर्वे 2021 के अनुसार, 19.73 करोड़ से अधिक भारतीय मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं, लेकिन केवल 10% को ही उचित सहायता मिलती है। यह खाई हमें चेताती है कि हमारी प्राथमिकताएं कहीं भटक रही हैं। विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस हमें याद दिलाता है कि हर जिंदगी अनमोल है। हर वह व्यक्ति, जो इस दुनिया को छोड़ गया, उसके सपने, उसकी हंसी, उसके अनकहे शब्द हमारे बीच जीवित रह सकते थे, अगर हमने समय पर उनकी मूक पुकार सुन ली होती। आत्महत्या की खबरें महज सुर्खियां नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक जवाबदेही की चेतावनी हैं। हमें एक ऐसा समाज गढ़ना होगा, जहां उदासी को छिपाने की जरूरत न पड़े, जहां आंसुओं को कमजोरी न समझा जाए, और जहां अवसाद से जूझना हार नहीं, बल्कि इंसान होने का प्रमाण माना जाए।

कविता

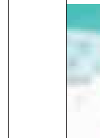
गरिमा सक्सेना

गुड़िया

आज सुबह से
गुड़िया का मुखड़ा
उदास है
गुड़िया, गुड़िया को सीने से
लिपटायी है
भींच रही मुट्ठी अंदर से
घबरायी है
स्मृतियों ने
पहन लिया
डर का लिबास है
छुवन-छुवन का अंतर
उसको समझ आ रहा
बार-बार उनका घर आना
नहीं भा रहा
डर से दूर
कहाँ जाये
डर आसपास है
सोच रही है मम्मी को
सबकुछ बतला दूँ
एक चोट भीतर है
उसको भी दिखला दूँ
पर क्या बोले
इस घर में वह
बड़ा खास है

लाइलाज कैंसर को मात मिलेगी, इंटरोमिक्स कैंसर वैक्सीन शीघ्र बाजार में

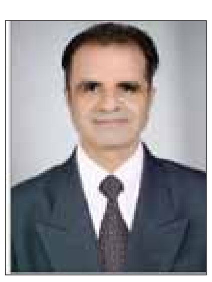
किशन भावनानी

विश्व स्वास्थ्य जगत में कैंसर एक ऐसा सार्वभौमिक संकट रहा है जिसने अनेक बार वैज्ञानिकों को अचम्भित किया है। बढ़ते कैंसर के मामलों और उसके आर्थिक व सामाजिक प्रभावों की चुनौतियों ने एक से अधिक बार चिकित्सा अनुसंधान को अग्रसर किया है।कैंसर आज के समय में इंसानों को तेजी से अपनी चपेट में ले रहा है, पहले यह बड़े उम्र के लोगों में ज्यादा होता था,लेकिन आज कम उम्र के लोग भी इसकी चपेट में हैं, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि अगर सरल शब्दों में कहा जाए तो स्त्री से लेकर पुरुष तक हर कोई कैंसर से परेशान है,इसके अलावा इसके इलाज में काफी खर्च आता है जो आम इंसान कभी-कभी उतना दे नहीं पाता और इसके चलते हर साल बड़ी संख्या में इससे लोगों की मौत हो जाती है, अब इसी बीमारी को काउंटर करने के लिए रूस ने वैक्सीन का निर्माण किया है,यह वैक्सीन अगर इंसानों पर पूरी तरह सफल होती है, तो यह मानव सभ्यता के सबसे महान खोजों में से एक होने वाली है, 8 सितंबर 25 को देर रात्रि आई जानकारी के अनुसार,अभी तक एम- आरएनए बेस्ड वैक्सीन 'एंटरोमिक्स' ने प्री-क्लिनिकल ट्रायल्स में 100 प्रतिशत तक प्रभावशील और सुरक्षित दिखी है, इस वैक्सीन को रूस के नेशनल मेडिकल रिसर्च रेडियोलॉजी सेंटर और रूस के ही एकेडमी ऑफ साइंस के एंगेलहार्ट इंस्टीट्यूट ऑफ मॉलिक्यूलर बायोलॉजी ने साथ मिलकर तैयार किया है।समाचारों में अक्सर₹नई वैक्सीन₹,₹नया इलाज₹ ₹क्रांतिकारी शोध₹ जैसी बातें सामने आती हैं परंतु सच्चाई अक्सर संतोषजनक नहीं होती। इसलिए रूस की वैज्ञानिक टीम द्वारा प्रकाशित हालिया रिपोर्ट, जिसमें दावा है कि "इंटरोमिक्स" नामक एम-आरएनए कैंसर वैक्सीन ग्लोबली प्रीक्लिनिकल से लेकर क्लिनिकल ट्रायल्स में 100 पर्सेंट सफल रही है,वास्तव में एक व्यापक और सावधानी पूर्वक मूल्यांकन मांगती है।चूँकि एक नई उम्मीद ₹इंटरोमिक्स" कैंसर वैक्सीनः- कैंसर को वैक्सीन से हराने की पहल, वैश्विक शोध जगत में इस खोज को एक संभावित गेम-चेंजर माना जा रहा है।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से इसआर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,कैंसर के इलाज में रूस की क्रांतिकारी खोज-₹नई वैक्सीन₹ ₹नया इलाज₹,₹क्रांतिकारी शोध₹- "इंटरोमिक्स" कैंसर वैक्सीन। साथियों बात अगर हम शोध का दायरा और वैक्सीन का निर्माण व ट्रायल के प्रारंभिक नतीजों की करें तो,रूसी नेशनल मेडिकल रिसर्च रेडियोलॉजिकल सेंटर एवं एंगेल्हार्डट इंस्टिट्यूट ऑफ़ मोलेक्युलर बायोलॉजी (रूसी विज्ञान अकादमी) द्वारा मिलकर विकसित की गई "इंटरोमिक्स " वैक्सीन का आधार वही एम-आरएनए तकनीक है जो कोविड-19 वैक्सीन में प्रयोग हुई थी। इसकी खासियत है,यह व्यक्तिगत ट्यूमर जीनोमिक प्रोफ़िलिंग पर आधारित,पूर्णतया कस्टमाइज़्ड थेरेपी है। इसका मतलब है कि प्रत्येक मरीज के ट्यूमर की जीन-म्युटेशनल विश्लेषण के आधार पर वैक्सीन तैयार की जाती है ताकि शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली कैंसर कोशिकाओं को पहचान कर उन्हें लक्ष्य कर सके। यह प्रयास केवल वर्गगत प्रतिरक्षा (स्टैंडर्ड कैंसर वैक्सीन) से हटकर, सटीक, तेज और प्रभावी चिकित्सा का नेतृत्व करता है। ट्रायल के प्रारंभिक नतीजे--फेज-1 क्लिनिकल ट्रायल, जिसमें लगभग 48 स्वैच्छिक प्रतिभागियों को शामिल किया गया था,में मरीजों में ट्यूमर में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई और कोई गंभीर साइड-इफेक्ट्स नहीं दर्ज हुए। यह दुर्लभ उपलब्धि है, क्योंकि कैंसर उपचार में अक्सर कष्टप्रद स्वास्थ्य प्रभाव आते हैं,विशेषकर कीमोथेरेपी, रेडिएशन या सर्जरी में। ट्रायल में प्राप्त परिणामों के आधार पर दावा किया जा रहा है कि वैक्सीन सुरक्षित और अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई है। साथियों बात अगर हम कोलोरेक्टल कैंसर पर पहली सफलता व दावे और दूसरी परीक्षण पोकियाँ की करें तो हम देखेंगे कि इंटरोमिक्स की पहली

लक्षित उपयोगिता कोलोरेक्टल कैंसर (बड़ी आंत का कैंसर) पर केंद्रित रही। इस कैंसर का वैश्विक स्तर पर प्रसार और मृत्यु दर काफ़ी उच्च है।प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार,इंटरोमिक्स ने कोलोरेक्टल कैंसर से ग्रसित रोगियों में ट्यूमर सिकुड़ने और वृद्धि में बाधा डालने में सफलता हासिल की है।दावे और दूसरी परीक्षण पोकियाँ-रूसी एजेंसी एफएमबीए (फेडरल मेडिकल एंड बायोलॉजिकल एजेंसी) ने घोषणा की है कि कई वर्षों की अनुसंधान अवधि और कम से कम तीन साल के अनिवार्य प्रीक्लिनिकल अध्ययनों के बाद अब यह वैक्सीन ₹उपयोग के लिए तैयार₹ है,लेकिन "आधिकारिक अप्रूवल" अभी अग्रसर है।रिपोर्ट अनुसार, ट्यूमर की वृद्धि दर में 60 पर्सेंट से 80 पर्सेंट तक की गिरावट दिखाई गई और जीवनकाल में सुधार भी हुआ। साथियों बात अगर हम अगली चुनौतियोंः ग्लोबल ज़रूरतों और अवरोधों पर नजर डालकर समझने की करें तो, वैश्विक शोध जगत में इस खोज को एक संभावित गेम-चेंजर माना जा रहा है। अगर अगले चरण के ट्रायल—फेज -2, फेज-3,में यह वैक्सीन सुरक्षित और प्रभावी साबित होती है, तो यह कैंसर उपचार के आसपास के परिदृश्य को बदलने का दम रखती है। हालांकि, वैज्ञानिक विश्व में सामान्यतः ₹फेज-1 की सफलता₹ अंतिम मंज़िल नहीं होती। फेज-2 और फेज-3 के बड़े, व्यापक ट्रायल्स, दीर्घकालिक प्रभाव, उत्पादन- लागत, वितरण व्यवस्था और नियामकीय मंज़ूरी जैसीचुनौतियाँ अभी बाकी हैं।फिर भी, आज 8 सितंबर 2025 की तारीख में, वैश्विक स्वास्थ्य और कैंसर अनुसंधान की दुनिया में रूस की यह खोज निश्चित रूप से एक उल्लेखनीय और प्रेरणादायी मोड़ बन चुकी है, जो नई उम्मीदों को जन्म देती है।यह व्यक्तिगत, मुँहतोड़ और साइड- इफेक्ट- रहित चिकित्सा का भविष्य का प्रवाह हो सकता है।भारत जैसे देशों में, जहाँ कैंसर की बीमारी आर्थिक बोझ और चिकित्सा पहुँच की चुनौतियों के बीच एक गंभीर समस्या है, ऐसी सफलता आशा की किरण बन सकती है,बशर्ते लागत, इंफ्रास्ट्रक्चर और नियामक अवरोधों का समाधान हो सके।भारत में कैंसर के इलाज पर अनुमानतः 29,000 करोड़ रूपए सालाना खर्च होता है, जिससे अनेक परिवार आर्थिक रूप से बुरी तरह प्रभावित होते हैं।बच्चों, वृद्धों और समाज पर प्रभाव- कैंसर कोई उम्र-विशिष्ट बीमारी नहीं है,यह बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक किसी को भी प्रभावित कर सकता है। कई बार इस बीमारी से युवा जीवन की संभावना छिन जाती है, या जो लोग बच जाते हैं, उन्हें सारा जीवन आर्थिक और मानसिक संघर्ष करना पड़ता है। अगर इंटरोमिक्स जैसी वैक्सीन हर उम्र वर्ग में सफल हो जाती है, तो यह मानवीय विकास का सबसे महान योगदानों में से एक बन सकती है। साथियों बात अगर हम वैश्विक परिप्रेक्ष्यः इतिहास में सामने आई अन्य कोशिशें तथा डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों की करें तो,पहले भी कुछ देशों और संस्थानों ने कैंसर वैक्सीन विकास की पहल की,जैसे अमेरिका कीऑनकफज (विटेस्पेन) नामक वैक्सीन, जिसे रूस ने भी अप्रूवल दिया था (2008 में शुरुआती-स्टेज किडनी कैंसर के लिए)। लेकिन इसके बावजूद वैश्विक स्तरपर यह वैक्सीन व्यावसायिक रूप से सफल नहीं हो सकीइसलिए इंटरोमिक्स की सफलता सिर्फ एक वैज्ञानिक अध्याय नहीं, बल्कि एक व्यापक वैश्विक चुनौती और संभावनाओं का भाग हो सकती है। यदि व्यापक परीक्षणों और वैश्विक मान्यता में यह सफल हो जाती है, तो चिकित्सा जगत की चुनौतियाँ और उपचार दृष्टिकोण दोनों परिवर्तित हो सकते हैं।वैश्विक दृष्टिकोण से,विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, प्रत्येक वर्ष लगभग 2 करोड़ नए कैंसर के मामलों का सामना विश्व करता है, और करीब 1 करोड़ कैंसर के कारण मर जाते हैं। अतःअगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किरूस का लाइलाज़ बीमारी कैंसर को वैक्सीन से हराने की क्रांतिकारी खोज़ -₹नई वैक्सीन₹,₹नया इलाज₹, ₹क्रांतिकारी शोध₹इंटरोमिक्स कैंसर वैक्सीनएक नई उम्मीद ₹इंटरोमिक्स" कैंसर वैक्सीनः- वैश्विक शोध जगत में इस खोज को एक संभावित गेम-चेंजर माना जा रहा है।

एक नजर

ट्रांसफार्मर से भड़की चिंगारी से फल की दुकान स्वाहा

सीतापुर। खैराबाद कस्बे में मंगलवार सुबह नया बाजार तिराहे के निकट लगे विद्युत ट्रांसफार्मर में स्पार्किंग से उठी चिंगारी से पास में स्थित फल विक्रेता की दुकान लगी आग से दुकान जलकर राख हो गई। दुकान जलती देख बाजार में मौजूद लोग किसी तरीके से बाल्टियों में पानी भरकर आग बुझाने रहे और बड़ी मशक्कत के बाद आग की लपटों पर काबू पाया जा सका। दुकानदार इसरार पुत्र मोहम्मद वली निवासी मोहल्ला कटरा ने बताया कि वह इस स्थान पर कई दशकों से फल का ठेला लगाते रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनकी दुकान में हर तरीके के फल सभी रखे हुए थे कई फलों की कैरेट भी लगी हुई थी। घटनाक्रम इतनी जल्दी से हुआ कि कुछ भी बचाया नहीं जा सका। उन्होंने बताया कि दुकान में 8 हजार रुपये के फल रखे हुए थे। आग की चपेट में आकर ठेला भी जलकर राख हो गया। अवर अभियंता अमित कुमार यादव ने बताया कि कई बार दुकानदारों को मना किया गया है कि जहां पर बिजली विभाग के ट्रांसफार्मर रखे हुए है उसके नीचे दुकान न लगाएं बावजूद इसके दुकानदार मानते नहीं हैं।

नमाज पढ़ने गया किशोर संदिग्ध परिस्थितियों में लापता

लहरपुर, सीतापुर। नगर में नमाज पढ़ने गया एक 15 वर्षीय किशोर संदिग्ध परिस्थितियों में लापता, पुलिस ने दर्ज किया अपराध। प्राप्त जानकारी के अनुसार नगर के मोहल्ला लोखरियापुर निवासी सुबराती ने कोतवाली पुलिस को प्रार्थनापत्र लेकर आरोप लगाया है कि उनका 15 वर्षीय पुत्र वासिफ सोमवार सुबह घर से मोहल्ले की मस्जिद में नमाज पढ़ने गया था और वह नमाज पढ़कर घर वापस नहीं आया काफी तलाश करने के बाद उसका कुछ भी पता नहीं चल सका। घटना के संबंध में कोतवाली प्रभारी विजयेंद्र सिंह ने बताया कि पीड़ित पिता की तहरीर पर अपराध दर्ज कर लापता किशोर की तलाश की जा रही है।

किसानों की समस्याओं को लेकर एडीओ को ज्ञापन सौंपा

सिधौली/सीतापुर। भारतीय किसान संघ कार्यकर्ताओं ने किसानों की विभिन्न समस्याओं को लेकर एडीओ को ज्ञापन सौंपा। भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष अवधेश त्रिपाठी के नेतृत्व में मुख्यमंत्री को सम्बोधित एक ज्ञापन ब्लाक मुख्यालय पहुंचकर एडीओ आइएसबी प्रेम नरायन को सौंपा ज्ञापन में मांग की गई कि खाद,बीज व कृषि रसायनों के मिलावटखोरों पर कड़ी कार्रवाई की जाए,खराब राजकीय नलकूप ठीक करवाकर सिंचाई के समुचित प्रबंध किए जाए,रबी फसलों की सिंचाई के लिए विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए,नहरों व नलकूपों की नालियों की सफाई मनरेगा से सिंचाई पूर्व कराने की व्यवस्था कराने सहित अन्य मांगें की गई इस दौरान अम्बिका सिंह,देवी प्रसाद,नौमीलाल,रामनरेश,अमरेश,अमन सिंह व सुरेंद्र मिश्र सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

पदाधिकारियों की नियुक्त को लेकर बैठक

लहरपुर,सीतापुर। नगर के मोहल्ला बसैहियाटोला टोला स्थित मोहम्मदी मस्जिद में जमीयत उलेमा ए हिंद लहरपुर यूनिट की एक बैठक पदाधिकारियों की नियुक्त को लेकर मंगलवार को संपन्न हुई। बैठक का संचालन मुफ्ती हिलाल अहमद कासमी ने किया और बैठक की अध्यक्षता मुफ्ती अब्दुर रहमान उपाध्यक्ष जमीअत ए उलेमा हिंद,मध्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश ने की। बैठक की शुरुआत तिलावत ए कुरान से कारी खुबैब अहमद कासमी ने की। बैठक में सर्वसम्मति से मुफ्ती तारिक रफी कासमी को नगर क्षेत्र के हल्का नंबर 3 का अध्यक्ष चुना गया। इस मौके पर मौलाना उवेस नदवी, मौलाना सुहेल नदवी, मौलाना उसामा, मौलाना अब्दुल जलील कासमी को नगर के हल्का नंबर 3 को उपाध्यक्ष चुना गया व जनरल सेक्रेटरी मुफ्ती अफजल क़ासमी को चुना गया, सेक्रेटरी के लिए मौलाना नोमान, मुफ्ती सद्दाम, मौलाना ओवैस, मौलाना रियाजुद्दीन के नाम मुंतखब किए गए। कोषाध्यक्ष पद के लिए मौलाना इब्राहिम क़ासमी और उप कोषाध्यक्ष मोहम्मद मेहताब को चुना गया। मीडिया इंचार्ज मौलाना सिराज खान को बनाया गया है और जिला माअशरा (सामाजिक कार्य) के लिए कनवीनर मुफ्ती खुबेब क़ासमी को बनाया गया। जमीयत बुथ क्लब के लिए मोहम्मद ताहिर, निजामुद्दीन, झम्मू पठान मुंतखब (चुने) गये।

दुर्घटना की आशंका

थानगांव सीतापुर। इलाके में एक सनसनीखेज दुर्घटना की आशंका जताई जा रही है। मंगलवार की सुबह थाना क्षेत्र के चहलारी घाट पुल पर एक जोड़ी चप्पल कपड़ा बैग व उसमें रखा सामान बरामद हुआ है जिससे क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। जानकारी अनुसार थानगांव क्षेत्र के ग्राम मानपुर निवासी रामनरेश पुत्र सियाराम का 36 वर्षीय पुत्र उदयराज परिवार के भरण-पोषण के लिए मजदूरी करने लुधियाना पंजाब जाने की तैयारी करके घर से अपने ममेरे भाई बरुआबेहड निवासी छबीले की बाइक पर सवार होकर उन्हीं के साथ रेउसा बहराइच के मुख्य मार्ग पर स्थित थानगांव थाना क्षेत्र की गोलोक कोडर पुलिस चौकी तक जाकर वहीं उतर गया। ममेरे भाई से आगे भगवान पुर से साधन मिलने की बात कह कर वहीं से वापस घर लौटा दिया। जिसके बाद उदयराज का अचानक फोन बंद हो जाने पर कोई जानकारी नहीं मिल सकी। तभी से परिजन तलाश में लग गए किन्तु कोई सुराग नहीं लगा। आज मंगलवार को स्थानीय पुलिस को तहरीर दे कर गुमशुदगी का केश दर्ज करवाया है। तहरीर उल्लेख के अनुसार परिजनों द्वारा घाघरा नदी में कूद कर जीवन लीला समाप्त करने जैसी अनहोनी की आशंका जताई जा रही है। इस बावत थानाध्यक्ष थानगांव विमल गौतम ने बताया चहलारी घाट पुल से बैग चप्पल कपड़ा मोबाइल बरामद हुआ है। जो कि उदयराज के परिजनों ने अपने ही पुत्र के होने का दावा किया है। उन्होंने बताया घाघरा पानी अधिक है एनडीआरएफ टीम के गोताखोरों के द्वारा युवक की तलाश की जा रही है।

सड़क हादसे में तीन की दर्दनाक मौत

ट्रक ने ट्रैक्टर में मारी टक्कर, मृतकों में भाजपा नेता के बहनोई भी शामिल

विश्ववार्ता संवाददाता

सीतापुर। शहर में हाइवे पर मंगलवार को ट्रक ने ट्रैक्टर ट्रॉली को टक्कर मार दी। जिससे ट्रैक्टर सवार तीन लोंग उछलकर सड़क पर गिरे जिन्हें ट्रक ने रौंद दिया। हादसे में तीनों की दर्दनाक मौत हो गई। मरने वालों में ट्रैक्टर मालिक भाजपा नेता के रिश्तेदार और दो मजदूर शामिल हैं।

शहर के नारायणनगर निवासी सुधाकर मिश्र अपने ट्रैक्टर-ट्राली से दो मजदूर रामगोपाल निवासी खैरेपारा थाना रामकोट व रामसहाय निवासी बंदीपुर थाना रामकोट के साथ किसी काम से खैराबाद जा रहे थे। इनका ट्रैक्टर जब शहर कोतवाली क्षेत्र के वैदेही वाटिका के पहले आवास विकसित कालोनी के समीप पहुंचा तभी आ रहे एक तेज़ रफ़्तार ट्रक ने टैक्टर ट्राली को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि ट्रैक्टर पर सवार तीनों लोग सड़क पर आकर गिर पड़े। इसी दौरान टक्कर मारने वाले ट्रक ने उन्हें रौंद दिया जिससे तीनों की मौत दर्दनाक मौत हो गई। मृतकों में सुधाकर मिश्रा भाजपा नेता व जिला पंचायत सदस्य मनोज तिवारी के बहनोई बताए जा रहे हैं। सूचना पाकर एएसपी आलोक सिंह, सीओ सिटी व शहर कोतवाल समेत भारी पुलिस बल मौके पर पहुंच गया। हादसे के बाद हाइवे पर एक तरफ वाहनों की कतारें लग गईं। पुलिस ने हादसा करने वाली ट्रक को अपनी अभिरक्षा में ले लिया है। पुलिस ने तीनों शवों को कब्जे में लेकर उन्हें पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

बाघ देख किसानों की बंध गई घिग्घी

किसानों के शोर मचाने पर तमाम ग्रामीण मौके पर पहुंचे

विश्ववार्ता संवाददाता

महोली (सीतापुर)। बद्वापुर गांव के पूरब मंगलवार को खेतों में चारा काटने जा रहे दो किसानों की हालात बाघ को देखने के बाद खराब हो गई। बाघ को सामने देख किसानों ने बमुश्किल शोर मचाया तो गांव से दर्जनों लोग लाठी-डंडे लेकर मौके पर पहुंच गए। कुछ लोग उस गन्ने के खेत में भी घुसे जिसमें बाघ गया था। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बाघ देखने वाले दोनों किसान काफी देर तक कुछ बोलने की स्थिति में ही नहीं थे। 'विश्ववार्ता' ने रेंजर व डिप्टी रेंजर को कॉल की लेकिन दोनों ने कॉल रिसीव नहीं की।

» देर तक कांपते रहे दोनों किसान, मिले बाघ के पगचिह्न

बद्वापुर निवासी अहिबरन सिंह पुत्र भूप सिंह व ईशपाल सिंह उर्फ भन्नू पुत्र जुगराज सिंह सुबह 9 बजे के करीब चारा काटने खेतों में जा रहे थे। यह लोग जब धनपाल सिंह के खेत के निकट पहुंचे तभी बाघ एक गन्ने के खेत से निकलकर अमरपाल सिंह के गन्ने के खेत में घुस गया। बाघ को देखकर किसानों की घिग्घी बंध गई और डर से कांपने लगे। साहस जुटाकर किसानों ने शोर मचाया तो गांव के अभिषेक सिंह, सोनपाल सिंह, अमित सिंह, उमरपाल सिंह, हेमपाल सिंह व वीरपाल सिंह समेत एक सैकड़ा के करीब लोग लाठी-डंडे व शस्त्र लेकर मौके शोर मचाते हुए मौके पर पहुंचे। इनमें से कुछ ग्रामीण अमरपाल सिंह के गन्ने के खेत में घुसे और बाघ के पगचिह्नों का वीडियो भी बना लिया। सोनपाल सिंह के मुताबिक अहिबरन व भन्नू इतना भयभीत हो गए थे कि वह थर-थर कांप रहे थे और बोल नहीं पा रहे थे। काफी देर बाद दोनों किसान नार्मल स्थिति में हुए तब पूरी घटना गांव वालों को बताई। बता दें कि इसी गांव में दो दिन पूर्व शैलेंद्र सिंह नाम के एक किसान ने खेत की मेड़ पर बाघ को बैठे देखा था। तीन दिनों में दो बार बाघ के देखे जाने से इस गांव के लोग काफी ज्यादा डरे हुए हैं।

प्रांतीय आवाहन पर 16 को शिक्षक संघ देगा ज्ञापन

शिक्षक भवन पर हुई बैठक में शिक्षकों को एकत्रित करने पर जोर

विश्ववार्ता संवाददाता

सीतापुर। जबरदस्ती शिक्षको पर टीईटी थोपने के विरोध में प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक प्रांतीय उपाध्यक्ष व जिलाध्यक्ष रवींद्र दीक्षित के आवाहन पर बिजवार स्थित शिक्षक भवन पर हुई।

रवींद्र दीक्षित ने ब्लॉक अध्यक्ष व मंत्रियों से कहा कि सभी शिक्षकों की सूची बना ली जाए कि कितने टेट पास है और कितने बगैर टेट वाले शिक्षक हैं। 16 सितंबर को बीएसए कार्यालय पर एकत्रित होकर दोपहर दो बजे जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष दिनेश चंद्र शर्मा द्वारा दिए गए निर्देशों को जिला मंत्री हंसराज वर्मा ने सभी पदाधिकारी को बताया कि 16 सितंबर को उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ जिले पर धरना देगा व ज्ञापन देगा। सभी शिक्षक धरने में सम्मिलित हों इसके लिए उचित माध्यम से उनको जानकारी दी जाए। बैठक में नवीन श्रीवास्तव, उमेश सिंह यादव, गिरजेश अवस्थी, ज्ञान वर्मा, दिनेश चंद्र मिश्रा, शिवसागर वर्मा, महेन्द्र पाण्डेय, विनय गिहार, सुनील बाजपेई, अमित त्रिपाठी, जंग बहादुर वर्मा, ज्ञान वर्मा, सिद्धार्थ पटेल, श्रीपाल, प्रदीप मिश्रा, सच्चिदानंद अवस्थी, अश्वनी सिंह एलिया, अजय सिंह, अजय वर्मा, महेश पाल सिंह, सुबोध तिवारी, अजीत सिंह, पंकज शाक्य, शिवेंद्र कुमार, रविन्द्र कुमार, अनवर, सुधीर आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

11 को शिक्षक देंगे जिलाधिकारी को ज्ञापन

सीतापुर। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट से आए फैसले के बाद पूरे मुल्क में शिक्षा की अलख जगाकर राष्ट्र का निर्माण करने वाले शिक्षक समुदाय बुरी तरह आहत हैं। मालूम हो कि सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में नए व पुराने सभी शिक्षकों के लिये टीईटी पास करना अनिवार्य कर दिया है। जिसके बाद पूरे तालीमी महकमे में भूचाल मचा है। शिक्षक संगठन अब इस मुद्दे पर आर-पार की लड़ाई के मूड में दिखने लगे हैं। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष योगेश त्यागी की अगुवाई में प्रदेश के सभी 75 जनपदों में 11 सितम्बर को दोपहर बाद ढाई बजे जिलाधिकारी के माध्यम से केंद्र सरकार के प्रधानमंत्री व शिक्षा मंत्री को सम्बोधित ज्ञापन दिया जायेगा। संगठन के जिलाध्यक्ष मनीष कुमार रस्तोगी और जिला मन्त्री आराध्य शुक्ल ने जिले के सभी शिक्षकों का आवाहन करते हुए अनुरोध किया है कि 11 सितम्बर को लालबाग पार्क सीतापुर में इकट्ठा होकर चट्टानी एकता के साथ जिलाधिकारी कार्यालय पहुंच कर ज्ञापन दिया जाएगा।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों का उमड़ा सैलाब

लहरपुर सीतापुर। क्षेत्र में चल रहे वायरल फीवर, खांसी, जुकाम के कारण प्रतिदिन भारी संख्या में मरीज इलाज हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आ रहे हैं परंतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टरों की भारी कमी के कारण मरीजों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मंगलवार को खांसी जुकाम, त्वचा रोग व वायरल फीवर के 1000 से अधिक मरीजों के पहुंचने और मात्र तीन डॉक्टरों, डॉ गोविंद गुप्ता, डॉ आदित्य प्रताप व डॉ सचिन शास्त्री के द्वारा ही मरीजों को देखे जाने के कारण भारी भीड़ जमा हो गई और पड रही भीषण गर्मी के चलते मरीज परेशान हो उठे, मरीजों की परेशानी को देखते हुए अधीक्षक डॉक्टर अरविंद वाजपेई ने भी मरीजों को देख कर राहत देने का प्रयास किया परंतु सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में दवा काउंटर पर केवल एक ही फार्मासिस्ट दिनेश गुप्ता के होने के कारण मरीजों को दवा लेने में भी भारी परेशानी उठानी पड़ी। ज्ञातव्य है कि इस सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में बाल रोग चिकित्सक, महिला चिकित्सक, हृदय रोग व हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर के ना होने के कारण अधिकांश मरीजों को जिला अस्पताल रेफर करना पड़ता है। दिलचस्प बात यह है कि इस स्वास्थ्य केंद्र में दस बेड के पोषण पुनर्वास केंद्र मिनी एनआरसी की स्थापना विगत अप्रैल माह में की गई थी परंतु पांच माह बीत जाने के बाद भी अभी तक बालरोग विशेषज्ञ की नियुक्त नहीं की गई है जिसके चलते इस पुनर्वास केंद्र में भर्ती होने वाले कुपोषित बच्चों को विशेषज्ञ डॉक्टर का लाभ नहीं मिल पा रहा है। मरीजों की भारी संख्या और डॉक्टरों की कमी को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अधीक्षक डॉक्टर अरविंद वाजपेई ने बताया कि, आजकल 800 नए मरीज और चार सौ पुराने मरीज प्रतिदिन आ रहे हैं जिन्हें समुचित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टरों की कमी को लेकर उच्च अधिकारियों को अवगत कराया गया है।

राष्ट्रीय लोक अदालत के लिए प्रचार वाहन रैली का आयोजन

लहरपुर सीतापुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के द्वारा आगामी 13 सितंबर शनिवार को होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत हेतु प्रचार वाहन रैली का किया गया आयोजन। प्राप्त जानकारी के अनुसार मंगलवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डालसा) के तत्वावधान में सालसा द्वारा आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 13 सितम्बर के सफल आयोजन एवं व्यापक जन-जागरूकता हेतु एक प्रचार वाहन रैली का आयोजन किया गया। प्रचार वाहन के लहरपुर पहुंचने पर लोगों को लोक अदालत की उपयोगिता, लाभ एवं प्रक्रिया संबंधी जानकारी दी गई। इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी विशाल गुप्ता, तहसीलदार मनीष त्रिपाठी, खंड विकास अधिकारी शैलेंद्र कुमार आदि ने लोगों से राष्ट्रीय लोक अदालत में अपने वादों का निस्तारण करवाने की अपील की।

एटीएम में प्लास्टिक प्लेट लगा निकाले थे रुपये

इस्टाग्राम पर रील देखकर सीखा एटीएम से रुपये निकालने का तरीका

विश्ववार्ता संवाददाता

सीतापुर। एसओजी व कोतवाली देहात पुलिस टीम ने एटीएम से धोखाधड़ी कर रुपये निकालकर चोरी की घटना में दर्ज मुकदमे में प्रकाश में आए शातिर अभियुक्त अमित कुमार मिश्र पुत्र अयोध्या प्रसाद निवासी ग्राम इमलिया थाना कोतवाली देहात जनपद बलरामपुर व अजय कुमार पांडेय पुत्र स्व. इंद्रमणि पांडेय निवासी नंदनगर बाभनपुरवा थाना गैसडी जनपद बलरामपुर को आनंदनगर क्रॉसिंग से पहले रेलवे स्टेशन सदर जाने वाले मार्ग से गिरफ्तार कर लिया। जिसके पास से चोरी से संबंधित तीन हजार 650 रुपये व घटना में प्रयुक्त एक प्लास्टिक की काली प्लेट बरामद हुई है।

सीओ सदर नेहा त्रिपाठी ने बताया कि 29 अगस्त को लखीमपुर खीरी रोड पर स्थित एसबीआई बैंक के एटीएम आदर्श नगर नैपालापुर से दो अज्ञात व्यक्तियों द्वारा एटीएम मशीन से छेड़छाड़ करके ग्राहको के रुपये एटीएम से निकाल लेने का मुकदमा कोतवाली देहात में दर्ज हुआ था। अभियुक्तों ने पुलिस पूछताछ में बताया कि इन लोगों ने इंस्टाग्राम पर रील के माध्यम से एटीएम में प्लास्टिक की प्लेट लगाकर रुपये निकालने का तरीका देख जिसे सीखकर दोनो ने विभिन्न जनपदों में एटीएम की रेकी कर रुपये निकाले चुके हैं। 29 अगस्त को 6 से 8 बजे सुबह के मध्य उक्त एटीएम में जाने वाले ग्राहकों की रेकी करके एटीएम मशीन में रुपये निकालने वाले शटर प्लेट में प्लास्टिक की शटर प्लेट लगाकर ग्राहकों के रुपयों को धोखाधड़ी करके निकाले गये थे। इसके अलावा अतिरिक्त अभियुक्तों ने देहरादून में भी इसी प्रकार की घटना को अंजाम देना स्वीकार किया है। पुलिस ने सम्बंधित धाराओं के तहत दोनों को जेल भेजने की कार्यवाही की है।

» एसओजी व कोतवाली देहात पुलिस ने दो जालसाजों को किया गिरफ्तार

कार बैक करने में गाड़ियां भिड़ने पर चले लाठी-डंडे

तालगांव, सीतापुर। कोतवाली इलाके से मोहरैया कला गांव में बीती की रात 9:00 बजे कार बैक करने में गाड़ियों की भिड़ंत में पूर्व प्रधान पुत्र सतीश सिंह पुत्र निर्मल सिंह व वर्तमान प्रधान पुत्र मोहम्मद नूर मोहम्मद पुत्र सलाम के मध्य उपजे विवाद में जमकर चले लाठी डंडो में पूर्व प्रधान के पक्ष के अजीत सिंह, वीरेंद्र सिंह, सतीश सिंह सत्येन्द्र सिंह सहित चार लोग गंभीर रूप से घायल हुए जिसमे वीरेंद्र की हालत नाजुक होने के चलते लखनऊ रेफर किया गया है वहीं वर्तमान प्रधान के पक्ष के हीरालाल पुत्र कन्हैया रैदास को बहु छोटे आई हैं जिसका इलाज चल रहा है मामले को लेकर पुलिस ने सघनता से जांच पड़ताल शुरू कर दिया है। जानकारी के अनुसार वर्तमान प्रधान पुत्र मोहम्मद नूर गांव में ही एक महिला का इलाज कराकर घर छोड़ने के बाद अपनी चार पहिया कार को बैक कर रहा था तभी पीछे से आ रहे पुर्व प्रधान सतीश सिंह उर्फ लालू की गाड़ी में टच होने पर सतीश सिंह उग्र होगये और वर्तमान प्रधान पुत्र मोहम्मद नूर को मारने के लिए दौड़ाया तो विवाद के बीच मे गांव के निवासी हीरा लाल के से मारपीट होने लगी तभी दोनों पक्ष के अन्य लोग भी आ धमके और जमकर लाठी डंडे चलने लगे जिसमे पूर्व प्रधान पुत्र के पक्ष के अजीत, वीरेंद्र, सतीश,सत्येन्द्र घायल होगये दूसरी तरफ वर्तमान प्रधान पक्ष के हीरा लाल रैदास को चोटें आई जिसमे वीरेंद्र की हालत नाजुक देखते हुए लखनऊ ट्रामा सेंटर रेफर किया गया है। इस सम्बंध में कोतवाल दीपक कुमार राय ने बताया मामला जानकारी में शिकायती पत्र नही प्राप्त हुवा हैं फिर हर पहलू की जांच की जा रही है।

अमन की दुआओं के साथ संपन्न हुआ शेख सादउद्दीन का सालाना उर्स

बड़े मखदूम साहब के जीवन को समझने के लिए दिल की आंखों को खोलना होगा डॉ . जीशान मिस्बाही

विश्ववार्ता संवाददाता

सीतापुर। खैराबाद स्थित दरगाह आलिया सादिया हजरत बड़े मखदूम साहब का सालाना उर्स मंगलवार को कुल शरीफ के साथ सम्पन्न हुआ। शाम 5 बजे के करीब मुल्क में अमन और तरक्की के साथ ही भाईचारे की अल्लाह पाक से दुआ मांगी गई तो हजारों लोंगों ने आमीन कहकर अपना समर्थन जताया। बड़ी संख्या में अकीदतमंदों ने हज़रत बड़े मखदूम साहब की मजार पर चादर और फूल पेश कर जियारत की।

तीन दिवसीय 525 वें उर्स के दूसरे दिन रात में एक जलसे को संबोधित करते हुए मदरसा जामिया आरिफिया सैय्यद सरावा इलाहाबाद से आए मौलाना डॉक्टर जीशान मिस्बाही ने कहा हमें अपने बुजुर्गों की तालीमात पर अमल करना चाहिए। हजरत बड़े मखदूम साहब की जिंदगी को देखें और पढ़ें कि अल्लाह और उसके रसूल को किस दर्जे तक चाहा था जो आज उन्हें यह स्थान हासिल हुआ है।

ज्ञात हो कि मौलाना जीशान मिस्बाही ने हजरत बड़े मखदूम साहब पर पीएचडी करके अपना एक स्थान बनाया है। श्री मिस्बाही ने आगे कहा कि बड़े मखदूम साहब की जिंदगी को समझने के लिए दिल की आंखों को खोलना होगा और उनसे जुड़े हुए लोगों से सच्ची मोहब्बत करके उनके हालात को जानना होगा। अल्लाह ने नबियों और रसूलों को दुनिया में भेजा कि मेरे पैगाम को आम करो, नबियों के बाद औलिया अल्लाह ने इस काम को अंजाम देने के लिए अपनी पूरी जिंदगी उसी में लगा दी। जलसे की अध्यक्षता सज्जादा नशीन शोएब मियां ने की तथा विशेष रूप से जामिया आरिफिया के सरपरस्त मौलाना शेख अबू मोहम्मद एहसान उल्लाह सफ़वी मौजूद थे। संचालन का कार्य आपके सुपुत्र मौलाना हसन साकिब उस्मानी ने किया तथा जलसे का आरंभ सज्जादा नशीन के छोटे सुपुत्र हाफिज अरसलान हसनी ने तिलावत कुरान पाक से किया।

इसके बाद दरगाह हजरत छोटे मखदूम साहब से गागर शरीफ सज्जादा नशीन शोएब मियां,सैय्यद मदनी मियां,सैय्यद फुरकान वहीद हाशमी, सैय्यद ज़िया अलवी, सैय्यद शोएब बकाई की मौजूदगी में उठाया गया, गागर का रास्ते में कई जगहों पर स्वागत भी किया गया। इसी क्रम में हजरत मखदूम बंदगी शाह के आस्ताने पर चादर पोशी दरगाह मतवल्ली इकराम हुसैन की सरपरस्ती में की गई। इसके बाद पूरी। रात महफिले समा हुई इस मौक़े पर सज्जादा नशीन शोएब मियां, सैय्यद आतिफ मियां दानिशी, सैय्यद ज़िया अलवी,सैय्यद लईक अहमद किरमानी, सैय्यद हिलाल मुजीबी, सैय्यद लारैब अलवी, सैय्यद मुजफ्फर अली, मौलाना हसन साकिब उस्मानी, हाफिज अरसलान हसनी, डॉक्टर कामिल सिद्दीकी, हाजी सैय्यद इश्तियाक अली वारसी,सैय्यद शुजा रिज़वी, सैय्यद तौहीद रिज़वी,इमरान सिद्दीकी, कारी इस्लाम अहमद आरफी, डॉक्टर सैय्यद रेहान रिज़वी आदि मौजूद रहे।

विपक्षी दबंग का पैतृक भूमि पर अवैध कब्जा रोकने की मांग, उपजिलाधिकारी व मुख्यमंत्री ने लगायी गुहार

मिश्रिख सीतापुर। दबंगों द्वारा अवैध कब्जा किए जाने पर रोक लगाने के लिए रजनीश पुत्र स्वर्गीय मथुरा निवासी ग्राम इस्माइलपुर थाना रामपुर जनपद सीतापुर ने उप जिला अधिकारी मिश्रिख सीतापुर सहित मुख्यमंत्री व उच्च अधिकारियों को प्रार्थना पत्र देकर गुहार लगाई है उन्होंने बताया कि विपक्षी राम भोली पत्नी चंद्रभाल रमेश पुत्र मनोहर लाल ,अजय पाल पुत्र विशुन दयाल निवासी मलह पुर ने जो मेरी पैतृक स्थित भूमि ग्राम जरिगवा में नहर के किनारे खेत में तीन दुकान 20 वर्षों से बनी हुई हैं जिस पर विपक्षी गणों की नियत खराब होने के चलते विपक्षी अजय पाल द्वारा अन्य दो विपक्षियों को बहला फुसलाकर जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं विपक्षिगण 15 अगस्त को कब्जा करने की नीयत से आए और जान माल की धमकी आमद फौजदारी हो गए विपक्षी अजय पाल अपराधी किस्म का व्यक्ति है जो आए दिन वादी से कहीं ना कहीं विवाद करता रहता है फर्जी मुकदमे में फंसा ने की धमकी दे रहे हैं जिससे मुझे जान माल का खतरा भी है पीड़ित ने जमीन पर हो रहे अवैध कब्जे को रोकने की मांग की है। पीड़ित ने यह भी बताया की अजय पाल पर कई मुकदमे दर्ज हैं अपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है।

कार्यशाला सीतापुर में समृद्धि के शताब्दी संकल्प पर मंथन, प्रबुद्धजनों ने रखे सुझाव, कृषि से उद्योग तक विचारों का संगम, प्रबुद्ध समिति की हुई कार्यशाला

क्यूआर कोड स्कैन कर बताइए अपना सुझाव, सीधे पहुँचेगा सरकार तक : नोडल अधिकारी

विश्ववार्ता संवाददाता

सीतापुर। प्रमुख सचिव, राजस्व, आवास एवं शहरी नियोजन विभाग, उत्तर प्रदेश शासन एवं जनपद के नोडल अधिकारी पी. गुरूप्रसाद की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में शताब्दी संकल्प 2047 कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में शासन से नामित प्रबुद्धजन सेवानिवृत्त आईएएस प्रवीर कुमार, सेवानिवृत्त आईएफएस महेन्द्र प्रताप सिंह, सेवानिवृत्त कुलपति गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर विजय कुष्ण सिंह, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक अतुल सिंह, सेवानिवृत्त प्रमुख अभियन्ता, सिंचाई विभाग विनोद कुमार निरंजन, सेवानिवृत्त आईएएस एवं नीति आयोग के पूर्व सदस्य अनिल कुमार श्रीवास्तव शामिल हुए। कार्यशाला के दौरान अर्थशक्ति, सृजनशक्ति और जीवनशक्ति विषयों के सभी आयामों पर विस्तृत विचार विमर्श कर सतत, एवं समावेशी विकास हेतु सभी प्रतिभागियों के विचारों का संकलन किया गया। प्रधानमंत्री के विकसित भारत 2047 के लक्ष्य के अन्तर्गत वर्ष 2047 तक देश की अर्थव्यवस्था को 30 ट्रिलियन डालर तक पहुचाने में जनपद सीतापुर की अहम भूमिका रहेगी।

उद्यमियों द्वारा उद्योगों के विकास के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत किये गए। स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने अपनी सफलता की कहानी बतायी। किसानों ने आय बढ़ाने के सम्बन्ध में चर्चा की। आईएमए के प्रतिनिधियों, विभिन्न संस्थाओं के संचालकों आदि द्वारा भी अपने सुझाव प्रस्तुत किये गए। प्लाईवुड उद्यमी मोहित अग्रवाल ने प्लाईवुड उद्योग में उपलब्धियों के विषय में बताया साथ ही उद्योग के विस्तारीकरण के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये। सरकार की निवेश को प्रोत्साहन की नीति के चलते जनपद में ग्रीनलैम प्लाईवुड द्वारा 15 सौ करोड़ का निवेश किया जा रहा है। मधु इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड के कुलदीप ने सरकार की एक जनपद एक उत्पाद योजना से दरी उद्योग को हुए लाभ के विषय में बताया। बिसवां शुगर मिल के जीएम आर. सी. सिंघल ने गन्ना मूल्य भुगतान, गन्ना उत्पादन एवं एथेनॉल उत्पादन की क्षमता में वृद्धि के विषय में जानकारी दी। पिछले आठ वर्षों में गन्ना उत्पादन प्रति हेक्टेयर 709 कुंतल से बढ़कर 815 कुंतल हो गया है, जो लगभग 13 प्रतिशत की वृद्धि है। गन्ना उत्पादन क्षेत्रफल भी 170139 हेक्टेयर से 229374 हेक्टेयर हो गया है तथा 350 किलो लीटर एथेनॉल उत्पादन किया गया है।

सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की जनपद की वृद्धि दर प्रदेश की जीडीपी वृद्धि दर से अधिक है। वर्ष 2017 - 18 की तुलना में जनपद सीतापुर का वृद्धि प्रतिशत 79.46 रहा जबकि उक्त अवधि में प्रदेश का वृद्धि प्रतिशत 57.15 है। उत्पादन में ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त करते हुए जनपद का गेहूं उत्पादन 30.5 प्रतिशत से बढ़कर 43.35 प्रतिशत हुआ। चावल उत्पादन 22.5 प्रतिशत से बढ़कर 30.50 प्रतिशत हुआ। कुल बागवानी 12.8 प्रतिशत से बढ़कर 16.3 प्रतिशत हुआ, आलू 32 प्रतिशत से बढ़कर 40.7 प्रतिशत, केला 10.4 प्रतिशत से बढकर 18.8 प्रतिशत, सब्जी15.6 प्रतिशत से बढ़कर 19.3 प्रतिशत हो गयी। दुग्ध उत्पादन में सीतापुर में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि के साथ ही अंडा उत्पादन में सीतापुर में 32.42 प्रतिशत से बढ़कर 48.56 प्रतिशत हुआ है। मत्स्य उत्पादन दोगुना हो गया तथा सीतापुर में हिस्सा 7.1 प्रतिशत से बढ़कर 9.2 प्रतिशत हो गया। पर्यटन विकास हेतु कुल 26 योजनाए संचालित हैं जिनकी लागत लगभग 89 करोड है, जिनमे से आठ योजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं।

कार्यशाला के दौरान प्रमुख सचिव, पी. गुरूप्रसाद ने कहा कि सीतापुर में विकास की अपार संभावनाएं हैं। प्रदेश सरकार द्वारा राज्य राजधानी क्षेत्र बनाते हुए इसमें जनपद सीतापुर को सम्मिलित किया गया है, जो इसके विकास को नए आयाम देगा। उन्होंने प्रेरित किया कि जिन क्षेत्रों में जिले की प्रगति प्रदेश की औसत प्रगति से कम है, उनमें विशेष सुधार की आवश्यकता हैं। उन्होने कहा नगरीकरण की दर में सुधार हेतु प्रयास किये जाने चाहिए, साथ ही सेवा क्षेत्र, साक्षरता दर, हाऊसिंग क्षेत्र आदि में सुधार हेतु कार्य किये जाने की आवश्यकता है। नैमिष क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं, जिसके लिए उचित रणनीति बनाया जाना अत्यंत आवश्यक है।

सेवानिवृत्त आई.ए.एस. प्रवीर कुमार ने प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री की इस संकल्पना के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी को प्रेरित किया कि विकसित भारत एवं विकसित उत्तर प्रदेश हेतु सभी अपना योगदान दें। उन्होंने बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित वन्दे मातरम गीत की पंक्तियों "सुजलाम सुफलाम, मलयज शीतलाम शस्य श्यामलाम" के विषय में बताते हुए कहा कि यही आज भी हमारी प्राथमिकता के बिन्दु हैं। हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर विरासत दें, यही इस कार्यशाला का उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि क्यू आर कोड और विशेष पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन सुझाव दे सकते हैं । उत्कृष्ट सुझावों को पुरस्कृत भी किया जाएगा। कार्यशाला के दौरान प्रबुद्धजनों से लेकर उद्यमियों, व्यापारियों, महिलाओं, किसानों, आई.एम.ए. के प्रतिनिधियों और शिक्षकों आदि ने विचार साझा किए।

कार्यशाला में जिलाधिकारी श्री अभिषेक आनंद ने पिछले 8 वर्षो में जनपद एवं प्रदेश की उपलब्धियों के विषय में जानकारी दी गयी तथा विजन 2047 के विषय में भी बताया। साथ ही प्रदेश सरकार की उपलब्धियों के सम्बन्ध में डाक्यूमेंट्री फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत विकसित उत्तर प्रदेश के स्वप्न को साकार करने में सभी के सुझाव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विकसित प्रदेश की संकल्पना को सभी के सम्मिलित प्रयास से ही साकार किया जा सकता है। उन्होने सभी से अपेक्षा की कि अपने सुझाव निर्धारित क्यूआर एवं निर्धारित पोर्टल के माध्यम से साझा कर सकते है। कार्यशाला के दौरान मुख्य विकास अधिकारी प्रणता ऐश्वर्या ने जनपद की उपलब्धियां प्रस्तुत की।

इस दौरान अपर जिलाधिकारी नीतीश कुमार सिंह, जिला विकास अधिकारी संतोष नारायण गुप्ता सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

ढाबे के पास गड्ढे में दो दर्जन मवेशी मृत पड़े मिले

विश्ववार्ता संवाददाता

नवाबगंज उन्नाव। अजगैन कोतवाली के अजगैन मोहन रोड पर एक ढाबे के पास गड्ढे में दो दर्जन मवेशी मृत पड़े मील है। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी का पोस्टमार्टम करा कर पास के जंगल मे दफन करवा दिया है।

मंगलवार की सुबह जब ग्रामीण शौच के लिए निकले तो अजगैन मोहन रोड पर स्थित एक ढाबे के निकट गड्ढे में पन्द्रह भैंस के बच्चे मृत पड़े देखा। इसकी खबर लगते ही मजमा लग गया। ग्रामीणों की सूचना पर मौके पर पहुंचे सीओ अरविंद चौरसिया और कोतवाली निरीक्षक सुरेश सिंह ने तहकीकात कर मृत मवेशियों को जेसीबी की मदद से बाहर निकलवाया। और पशु चिकित्सा टीम की बुलाकर सभी मृत मवेशियों के बच्चों का पोस्टमार्टम करवाया। इस संदर्भ में हसनगंज क्षेत्राधिकारी अरविन्द चौरसिया व कोतवाली निरीक्षक सुरेश सिंह से बात करने पर बताया मौके पर किसी वाहन के टायरों के कोई निशान नही मीले है। किसी व्यापारी द्वारा मवेशियों को ले जाया जा रहा होगा। इस दौरान मवेशियों के बच्चों की मौत हो गई होगी। तो रात को यहां डाल दिया गया है। चमरौली पशु चिकित्साधिकारी डॉक्टर सईद अहमद के नेतृत्व में टीम द्वारा सभी मृत मवेशियों के पोस्टमार्टम किया गया है। और पास के जंगल मे दफना दिया गया है। मकूर निवासी रंजीत सिंह द्वारा दी गई तहरीर पर पशु क्रूरता अधिनियम के। अंतर्गत अज्ञात लोगो के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत किया गया है। और जांच की जा रही है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में डिलीवरी प्वाइंट की स्थापना की गई

विश्ववार्ता संवाददाता

बांगरमऊ उन्नाव। गर्भवती महिलाओं के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवा एवं समय से सुरक्षित प्रसव कराने हेतु ब्लॉक क्षेत्र के ग्राम गौरिया कला स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में डिलीवरी प्वाइंट की स्थापना की गई है। सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में डिलीवरी प्वाइंट स्थापित होने से ग्रामीणों में खुशी की लहर दौड़ गई है।

स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर मुकेश कुमार द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार जिला अधिकारी एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी के निर्देशानुसार आज मंगलवार को ग्राम गौरिया कला स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सकों, नर्सों, आशा बहूओं एवं ग्रामीणों की मौजूदगी में सुरक्षित प्रसव हेतु डिलीवरी प्वाइंट का शुभारंभ किया गया। उन्होंने बताया कि डिलीवरी प्वाइंट स्थापित होने से गर्भवती महिलाओं को प्रसव के समय काफी सुविधा मिलेगी। उन्होंने बताया कि अभी तक प्रसव के समय गर्भवती महिलाओं को लम्बी दूरी तय कर बांगरमऊ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचने में काफी समय लगता था।

इस दौरान गर्भवती महिलाओं को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता था। लेकिन अब 30 मिनट के अंदर गर्भवती महिलाएं प्रसव हेतु डिलीवरी प्वाइंट पहुंच जाएंगी। उद्घाटन अवसर पर चिकित्सा इंचार्ज डॉक्टर विनेश, एएनएम मोनी, संगिनी रेखा गुप्ता के अलावा क्षेत्र की समस्त आशा बहुएं एवं ग्रामीण मौजूद रहे।

नगर पालिका के बाबू ने लगाई फांसी सुसाइड नोट में लिखी दर्दनाक दास्तान

विश्ववार्ता संवाददाता

उन्नाव। शहर में सनसनीखेज घटना सामने आई है। नगर पालिका उन्नाव में कार्यरत बाबू सतीश प्रजापति ने अपने ही घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। मृतक सतीश प्रजापति वर्तमान समय में पीताम्बर नगर भाग -2 (कोयला वाली गली) में अपने परिवार के साथ निवास कर रहे थे। बताया जा रहा है कि उन्होंने आत्महत्या से पूर्व एक सुसाइड नोट भी छोड़ा है, जिसमें अपनी मौत का कारण विस्तार से लिखा है। हालांकि पुलिस ने अभी तक उस सुसाइड नोट की पूरी जानकारी सार्वजनिक नहीं की है।

वहीं मृतक द्वारा लिखे गए सुसाइड नोट में पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रवीण मिश्रा भानु, ईओ नगर पालिका संजय

गौतम सहित दो कार्यरत एवं एक सेवानिवृत कर्मचारियों पर लगाया गया आरोप। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है और सुसाइड नोट की लिखावट की भी पुष्टि की जाएगी। अचानक उठाए गए इस कदम से पूरा क्षेत्र स्तब्ध है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। फिलहाल पुलिस घटना के हर पहलू की छानबीन कर रही है। आत्महत्या के वास्तविक कारण का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट और सुसाइड नोट की जांच के बाद ही हो सकेगा।

एक नजर

चौ. खजान सिंह महाविद्यालय में हुआ टेबलेट वितरण

उन्नाव। चौधरी खजान सिंह महाविद्यालय लोक नगर उन्नाव में सरकार द्वारा संचालित विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अन्तर्गत नि:शुल्क टेबलेट वितरण किया गया। टेबलेट वितरण का कार्यक्रम चौधरी खजान सिंह महाविधालय लोक नगर उन्नाव के सभागार में सदर विधायक पंकज गुप्ता के द्वारा किया गया। विधायक के द्वारा छात्र और छात्राओं को टेबलेट देते हुए बताया और कहा कि हमें तकनीकी शक्तियों का प्रयोग अपने ज्ञान को पाने तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिये करना चाहिये। महाविद्यालय निदेशक रविराज ने छात्र/छात्राओं को भाजपा सरकार की योजना के द्वारा मिले टेबलेट का प्रयोग सावधानी पूर्वक करने को कहा। उक्त कार्यक्रम में प्रबंधक डॉक्टर मुकेश कुमार यादव, निदेशक रविराज, प्राचार्या प्रोफेसर डॉक्टर सुधा सिंह महाविधालय के प्रवक्तागण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन लेफ्टिनेंट अतुल शुक्ल में किया।

बदलते मौसम की वजह लग रही अस्पतालो मे लंबी लाइन

हिलौली उन्नाव। बारिश और धूप के बदलते मौसम ने लोगों की सेहत को प्रभावित किया है। हिलौली स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में सोमवार को 500 से अधिक मरीज पहुंचे। मरीजों की कतार लिए लम्बी से लम्बी देखी गई। अधिकतर मरीज सर्दी, जुकाम और वायरल बुखार की शिकायत लेकर आए। कई मरीजों में तेज बुखार के साथ कमजोरी की समस्या भी देखी गई। डॉक्टरों के अनुसार मौसम में अचानक बदलाव से वायरल बुखार तेजी से फैल रहा है। पीएचसी प्रभारी डॉक्टर दीपक ने बताया कि बारिश के बाद अचानक तेज धूप से वायरल संक्रमण बढ़ा है। उन्होंने लोगों को साफ पानी का उपयोग करने की सलाह दी। दूषित भोजन से बचने और पौष्टिक आहार लेने को कहा। घरों के आसपास पानी न जमा होने दे। स्वास्थ्य विभाग ने लोगों से बीमारी के शुरुआती लक्षण दिखते ही डॉक्टर से संपर्क करने की अपील की है। अस्पताल प्रशासन बढ़ती भीड़ को देखते हुए अतिरिक्त व्यवस्था कर रहा है। मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए सतर्कता और सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है।

आकाशीय बिजली से किसान की मौत

कानपुर। बिल्हौर तहसील के शिवराजपुर थाना क्षेत्र के सकरवा गांव में एक किसान की मौत हो गई। धान के खेत में काम करते समय आकाशीय बिजली गिरने से महेश यादव की जान चली गई। महेश यादव अपने खेत में काम कर रहे थे। अचानक आसमान से बिजली गिरी और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही ग्रामीण घटनास्थल पर पहुंच गए। ग्रामीणों ने इस घटना की जानकारी उप जिलाधिकारी बिल्हौर संजीव दीक्षित को दी।

30 किसानों को वितरित किए गए किसान दुर्घटना बीमा योजना राशि के चेक

कानपुर। बिल्हौर ब्लॉक सभागार में किसान दुर्घटना बीमा योजना राशि वितरण का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 30 किसान लाभार्थियों को बीमा राशि के चेक दिए गए। इस योजना का उद्देश्य किसानों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

कार्यक्रम में सुनीता मान, नेवादा हसीना बानो और हरनू कठेरिया प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। बीमा योजना के लाभार्थियों में मेवालाल, गुलजारी, सुल्तान राम, भरोसे, जगजीवन और संजय कलेक्टर शामिल हैं। अधिकारियों ने सभी लाभार्थियों को चेक सौंपे। किसान दुर्घटना बीमा योजना किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच है। इस योजना से लाभान्वित होने के बाद किसानों में प्रसन्नता देखी गई। यह योजना अन्नदाताओं की सुरक्षा के लिए चलाई जा रही है।

गंगा नदी का जल स्तर बढ़ने से बची खुची फसलें न गृहस्थी बर्बाद होने का खतरा रहा मंडरा

विश्ववार्ता संवाददाता

अचलगंज उन्नाव। गंगा नदी में आई बाढ़ के पानी से अभी कटरी वासी ऊबर भी न पाए थे कि गंगा नदी का जलस्तर फिर बढ़ने लगा है। जिससे बची खुची फसलें व गृहस्थी फिर बर्बाद होने का खतरा मंडराने लगा है। संपर्क मार्गो पर पानी आ जाने से आवागमन प्रभावित हो रहा है।

गंगा के जल स्तर में तीसरी बार बढ़ने से विकासखंड सिकंदरपुर कर्ण के छड़ौवा खेड़ा, खन्ना पुरवा, टेढ़वा, पंचम पुरवा समेत दर्जन भर गावो में मंगलवार को बाढ का पानी फिर बढ़ने लगा है जो हरी भरी फसलों को रौंदते हुए गांव की गलियों तक पहुंच गया है। इससे लोगों को आवागमन में दिक्कत हो रही है। बलाई पंचम पुर छड़ौवा खेड़ा सड़क

मार्ग पर दो से तीन फीट तक पानी भर गया इससे कटरी क्षेत्र के कई गांवों के लोगों का आवागमन प्रभावित बना है। सबसे अधिक समस्या जानवरों के चारे पानी की है। अधिक दिनों से जल का ठहराव होने से घास व अन्य हरे चारे सड़ने लगे है। कटरी क्षेत्र में इन दिनों भिंडी, लौकी, तरोई, कद्दू आदि बड़ी मात्रा में खेती की जारही है। बलाई प्रधान रामसिंह व क्षेत्रीय लेखपाल ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पहुंच कर नुकसान का आंकलन किया। खेतों में पानी भरने से खरीफ की फसलों को भारी नुकसान हो रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि इसी रफ़्तार से पानी बढ़ता रहा तो एक दो दिन में गांव खाली करना पड़ेगा।

भूसे के ढेर में वृद्धा का शव मिलने से गांव में सनसनी फैली

» वृद्धा हरियाणा में रहकर मेहनत मजदूरी करती थी

विश्ववार्ता संवाददाता

बांगरमऊ उन्नाव। बेहटामुजावर थाना क्षेत्र के गांव बेलन्द खेड़ा मे वृद्धा का शव भूसे के ढेर के अंदर दबा पाया गया है। भूसे के ढेर में वृद्धा का शव मिलने से गांव में सनसनी फैल गई। बीते सोमवार को देर शाम अपने मवेशियों को चारा करने गोड़े पर गई थी। तभी से वह लापता थी। वृद्धा की अचानक मौत से परिजनों में चीख-पुकार मची हुई है।

ग्राम शादीपुर के मजरा बेलंद खेड़ा निवासी सीताराम की पत्नी रज्जो 50 वर्ष बीते सोमवार को देर शाम अपने जानवरों को चारा करने घर से करीब 200 मीटर दूर स्थित गोड़े मे गई थी। देर तक वापस घर नहीं लौटने पर परिजनों द्वारा वृद्धा की इधर-उधर खोज की गई। किंतु रात के समय उसका कोई पता नहीं चल सका। खोजबीन के दौरान मंगलवार की सुबह गोडे में एकत्रित भूसे के ढेर में वृद्धा की धोती दिखाई दी। तब परिजनों ने उसे मृत अवस्था में भूसे के बाहर निकाला। वृद्धा की अचानक मौत से परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु जिला अस्पताल भेज दिया। वृद्धा अपनी बहू के साथ गांव में रहती थी। जबकि उसका पति सीताराम अपने बेटे के साथ हरियाणा में रहकर मेहनत मजदूरी कर रहा है। घटना की सूचना मृतका के पति और बेटे को दे दी गई है। थानेदार मुन्ना कुमार ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद ही मौत का कारण पता चल सकेगा।

नोड्स स्वास्थ्य क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि फेफड़ों की जांच के लिए क्रांतिकारी

» आईआईटी कानपुर ने तैयार किया खास उपकरण रोगियों के लिए

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। दिन पर दिन वातावरण में बढ़ रहे प्रदूषण के कारण फेफड़ों की समस्या आम होती जा रही हैं, लेकिन फेफड़ों की बीमारियों की पहचान अब घर बैठे ही संभव हो सकेगी। आईआईटी कानपुर की इनक्यूबेटर स्टार्टअप वेदांत्रिक कंपनी ने ऐसा विशेष डिवाइस विकसित किया है, जो चंद मिनटों में फेफड़ों की स्थिति और उसमें मौजूद कमियों की जानकारी दे देगा। कंपनी के परीक्षित हुड्डा ने बताया कि ये डिवाइस रोगियों के लिए क्रांतिकारी साबित हो सकती है, क्योंकि इसके जरिए बिना अस्पताल गए ही शुरुआती स्तर पर बीमारी का पता लगाया जा सकेगा।

परीक्षित हुड्डा ने बताया कि डिवाइस का नाम नोड्स रखा गया है। टीएफटी और पीएफटी टेस्ट कराने से जिन बीमारियों का पता चलता था, उनका पता अब ये डिवाइस ही बता देगी। ये दोनों टेस्ट सामान्यतः अस्पतालों में कराए जाते हैं और मरीज को लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, लेकिन अब यह टेस्ट इस डिवाइस से कुछ सरल स्टेप्स के जरिए ही हो जाएगे। परीक्षित हुड्डा ने बताया कि नोड्स डिवाइस के माध्यम से न केवल टेस्ट होंगे बल्कि मरीज अपनी स्थिति के अनुसार एक्सरसाइज और नेबुलाइजेशन की सुविधा भी ले सकेंगे। इससे सांस से जुड़ी बीमारियों जैसे अस्थमा, क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज, एलर्जी और अन्य फेफड़ों की समस्याओं की समय रहते पहचान और प्रबंधन आसान हो जाएगा।

बंदरों का फैला आतंक, 5 साल के बच्चे सहित तीन को किया घायल

कानपुर। नरवल थाना क्षेत्र में बंदरों का आतंक लोगों के लिए परेशानी का सबब बन गया है। मंगलवार सुबह नरवल कस्बा निवासी दीपक अग्निहोत्री पर काले मुंह वाले बंदरों के झुंड ने हमला कर दिया। बंदरों ने उनकी कमर से नीचे का हिस्सा नोच डाला।

पीड़ित के अनुसार, क्षेत्र में काले मुंह और लाल मुंह वाले बंदरों का आतंक है। पिछले दो दिनों में एक 5 वर्षीय बच्चे और एक महिला को भी बंदरों ने घायल किया है। ग्रामीणों का कहना है कि उन्होंने कई बार शिकायत दर्ज कराई है। लेकिन प्रशासन की ओर से इन जानवरों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है। इस कारण लोग लगातार इनका शिकार हो रहे हैं। घायल दीपक अग्निहोत्री को सरसौल स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।

प्रेम प्रसंग में दसवीं के छात्र ने फांसी लगाकर जान दी

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। एक 10वीं के छात्र ने सुसाइड कर लिया। उसने चादर से फंदा बनाया फिर उस पर लटक कर जान दे दी। हॉस्टल का कमरा अंदर से बंद था। एक दिन तक कमरे में उसका शव लटकता रहा। उसके कमरे से बाहर न निकलने पर हॉस्टल स्टाफ ने कई बार आवाज दी। फोन किया, घंटी जा रही थी लेकिन फोन नहीं उठा। जब खिड़की से झांका गया तो छात्र फंदे से लटका मिला। पुलिस को सूचना दी गई तो पुलिस ने दरवाजा तोड़कर उसकी लाश बाहर निकाली। कमरे से एक सुसाइड नोट मिला, जिसमें लिखा था कि मैं अपने मन से आत्महत्या कर रहा हूं, मम्मी, भैया और पापा का ध्यान रखना।

छात्र ने मरने से पहले अपनी मां से फोन पर बात की थी। इसके बाद इंस्टाग्राम आईडी पर एक पोस्ट भी की थी। कानपुर देहात, भोगनीपुर पुखरायां के रहने वाले करन सिंह की गांव में प्लॉस्टिक के सामान की दुकान है। परिवार में पत्नी ऊषा देवी, बड़ा बेटा हर्षित, छोटा सृजन व बेटी प्रिंसी हैं।

मृतक सृजन के बड़े भाई हर्षित ने बताया, 4 महीने पहले सृजन कानपुर

» तुमसे दूर जाने का इरादा तो नहीं था,पर इतनी जल्दी भूल जाओगे हमे अंदाजा नही था

आया था। काकादेव के हितकारी नगर स्थित कटियार हॉस्टल में हाईस्कूल की पढ़ाई कर रहा था। सृजन की मां से फोन पर बात हुई थी। तब उसकी बात से ऐसा कुछ नहीं लगा। वो बहुत खुश था। मेहनत से पढ़ाई करता था। हमे यकीन नहीं हो रहा है कि वो हमारी बीच नहीं है। मुझसे अक्सर फोन पर बातें करता था। हास्टल संचालक अतिन कटियार ने बताया कि वह पीईटी की परीक्षा देने के लिए कानपुर से बाहर गए हुए थे। सृजन सिंगल रुम में रहता था। सृजन ने कमरे में चादर से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। जब पूरे दिन वह कमरे से बाहर नहीं आया। जिस पर हॉस्टल कर्मचारियों ने कमरे में झांक कर देखा तो सृजन का शव फंदे से लटकता मिला।

घटना की जानकारी पर रावतपुर पुलिस मौके पर पहुंची। दरवाजा तोड़ कर शव को बाहर निकाल कर परिजनों को सूचना दी गई। परिजनों ने बेटे के किसी भी प्रकार के तनाव में रहने पर इनकार किया।

हॉस्टल में रहने वाले दोस्तों ने बताया कि मरने से पहले सृजन ने सोशल मीडिया पर एक शायरी पोस्ट की थी। जिसमें उसने कहा था कि तुमसे दूर जाने का इरादा तो नहीं था, साथ रहने का वादा नहीं था। तुम याद नहीं करोगे ये हम जानते थे, पर इतनी जल्दी भूल जाओगे हमे अंदाजा नही था।

प्राथमिक शिक्षक संघ ने सरकार व विभाग के खिलाफ आगामी 16 सितंबर के धरना-प्रदर्शन की बनाई रणनीति

विश्ववार्ता संवाददाता

पुरवा उन्नाव। प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी सभी शिक्षकों को टेट अनिवार्य करने के मुद्दे पर विशेष परिचर्चा हुई जिसमें सरकार व विभाग के खिलाफ शिक्षकों में आक्रोश दिखाई दिया। साथ ही आगामी 16 सितम्बर को होने वाले धरना एवं ज्ञापन हेतु रणनीति बनाई गई।

स्थानीय रामापुर स्थित सुंदर लाल महाविद्यालय में उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ पुरवा इकाई की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में बीते दिवस माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा टेट को अनिवार्य करने के आदेश पर विस्तार से परिचर्चा हुई और सभी शिक्षकों व शिक्षिकाओं ने अपने-अपने विचार रखे। बैठक में बताया गया कि वर्ष 2000 के पहले नियुक्त बहुत शिक्षकों की योग्यता केवल इन्टरमीडिएट है, कुछ का स्नातक 45% से कम है, बीएड डिग्रीधारक टेट नहीं हैं, मृतक आश्रितों को नियुक्ति के समय प्रशिक्षण मुक्त रखा गया था, बीपीएड-डीपीएड टेट के लिए अयोग्य बताया गया है, उर्दू शिक्षक टेट के लिए अयोग्य माना गया, उक्त आदेश आरटीई ऐक्ट के खिलाफ है, केंद्र सरकार ने गोपनीय संशोधन वर्ष 2017 में करके टेट अनिवार्य करते हुए अध्यादेश को छिपाए जाने समेत विभिन्न बिंदुओं के संदर्भ में आज शिक्षकों ने अपना विरोध दर्ज कराया। साथ ही माननीय सर्वोच्च न्यायालय में विशेष अपील दाखिल करने पर रणनीति बनाई गई।

संघ के प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर दिनेश चंद्र शर्मा के आवाहन पर आगामी 16 सितम्बर को जिला मुख्यालय पर धरना व ज्ञापन देने की योजना पर विस्तार से चर्चा की। बैठक की अध्यक्षता कर रहे संगठन के जिलामंत्री व ब्लाक अध्यक्ष पुरवा गजेन्द्र वर्मा ने शिक्षकों की समस्याओं को बिंदुवार रखा और संगठन की पूर्ववर्ती उपलब्धियों से सुपरिचित कराया। बैठक को सम्बोधित करते हुए तहसील प्रभारी शिवम चौरसिया ने कहा कि शिक्षक समाज पर आई टेट अनिवार्यता की इस नई विपदा पर सभी को एकजुट व संगठित होकर संघर्ष करना होगा। हमें टेट व नान टेट में नहीं बंटना है। इसके अलावा मंत्री संजय द्विवेदी, कोषाध्यक्ष श्रवण पटेल आदि ने अपनी बात कही। बैठक का संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष विवेक पटेल ने किया। बैठक में ऊषा वर्मा, सुरंगमा, रेखा देवी, सोनम विमल, सुनीता, पूनम चौरसिया, आसन फातिमा, अखिलेश कुमार सिंह, आशीष कुमार, शशिकांत, अजय चौरसिया, अमित कुमार, राम गोपाल समेत आधा सैकड़ा से अधिक शिक्षक-शिक्षिकाएं शामिल हुए।

सफाई कर्मचारी न होने से टूटी नालियों से सड़कों पर बह रहा गंदा पानी

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। शिवराजपुर ब्लॉक स्थित ग्राम पंचायत काकूपुर सीताराम में सफाई व्यवस्था पूरी तरह से ठप पड़ी है। गांव की नालियां टूटी हुई हैं। इनसे गंदा पानी सड़कों पर बह रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि कोई भी सफाई कर्मचारी नालियों की सफाई नहीं करता। गंदगी के कारण आम रास्ते पर चलना मुश्किल हो गया है। स्थानीय निवासियों ने कई बार प्रधान और सचिव को इस

समस्या से अवगत कराया है। गांव के शिवप्रसाद, अमित कुशवाहा, लालू और पंकज ने बताया कि नालियों की सफाई का काम पूरी तरह बंद है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत गलियों और सड़कों को साफ रखने का प्रावधान है। लेकिन प्रधान राजेश दिवाकर और सचिव शिवपाल इस योजना पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। वे न तो सफाई कर्मचारियों को भेज रहे हैं और न ही नालियों का पुनर्निर्माण करवा रहे हैं। गंदगी के कारण गांव में बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। ग्रामीण चाहते हैं कि प्रधान और सचिव इस समस्या का तुरंत समाधान करें।

युवक की मौत पर परिजनो ने पुलिस पर लगाया आरोप

कानपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र में एक युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक अभिषेक 4 सितंबर की रात घर से निकले थे। रात 10 :30 बजे तक वह सीसीटीवी फुटेज में दिखाई दिए। इसके बाद उनका फोन बंद हो गया। परिजनों ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि कुछ लोग अभिषेक को सुनसान गली में ले गए। सीसीटीवी फुटेज में वह संदिग्ध लोगों के साथ दिख रहे थे। परिजनों का आरोप है कि घटना की सूचना मिलने के बाद भी पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। उनका कहना है कि पुलिस अभी तक मुकदमा दर्ज करने को तैयार नहीं है। पुलिस का कहना है कि सबूत लाने के बाद ही मुकदमा दर्ज किया जाएगा। डीसीपी पश्चिम दिनेश त्रिपाठी ने घटना की जानकारी देते हुए बताया कि 6 सितंबर की रात युवक का शव झाड़ियों में मिला था।

एक नजर

दिल्ली से आ रहा युवक हुआ जहर खुरानी का शिकार

बांगरमऊ उन्नाव। दिल्ली से मजदूरी कर लौट रहे मजदूर को शिकार बनाकर जहर खुरानी गिरोह ने नगदी व बैग पार कर दिया परिवहन बस चालक उसे बांगरमऊ छोड़ गया। जिसे बाद में स्थानीय सी एच सी पर उपचारित किया गया। बांगरमऊ के गांव खभोंली निवासी मुस्ताक पुत्र इसरार 42 वर्ष गांव में आयोजित होने वाले मेला कार्यक्रम को देखने के लिए सोमवार को दिल्ली से परिवहन विभाग की बस में बैठकर बांगरमऊ आ रहा था। तभी रास्ते में उसे ज़हर खुरानी गिरोह के सदस्यों ने झांसे में लेकर बिस्कुट खिला दिया। जिसके बाद बेहोशी की हालत में उसका बैग लेकर चंपत हो गए। मंगलवार की सुबह बस चालक ने उसे नगर के नानामऊ तिराहे पर उतार दिया जिसके बाद उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान होश आने पर उसने घटना बताई जिसके बाद हालत में सुधार होने पर वह घर चला गया।

अज्ञात युवक की लाश मिली

कानपुर। भीतरगांव विकासखंड के कुदोली गांव में पांडु नदी के किनारे एक अज्ञात युवक का शव मिला है। ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। साढ़ चौकी इंचार्ज अविनाश सिंह के अनुसार, शव करीब तीन से चार दिन पुराना है। मृतक की उम्र लगभग 35 वर्ष आंकी गई है। युवक ने काली रंग की पैंट और सफेद रंग की टी-शर्ट पहन रखी थी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने मृतक की पहचान के लिए उसकी फोटो सभी थानों में शेयर कर दी है।

ऑटो चालक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

कानपुर। पनकी थाना क्षेत्र के रतनपुर मे एक ऑटो चालक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक की पहचान 46 वर्षीय अभिषेक कुमार त्रिपाठी के रूप में हुई है।

मृतक अभिषेक की पत्नी शकुंतला पड़ोस में गई थी। जब वह वापस लौटी तो उसने देखा कि उसके पति का शव घर के एक कमरे में फंदे से लटक रहा है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। अभिषेक अपनी पत्नी शकुंतला और बेटे अनुज के साथ रहते थे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पनकी थाना प्रभारी मनोज भदौरिया ने बताया कि आत्महत्या के कारणों की जांच की जा रही है।

डीएम की अध्यक्षता में हुई पीसी पीएनडीटी सलाहकार समिति की बैठक

बीघापुर डायग्नोस्टिक सेंटर के चिकित्सक की डिग्री सत्यापन में फर्जी पाए जाने पर डीएम ने जताई नाराजगी, मुकदमा दर्ज कराने के दिया निर्देश

विश्ववार्ता संवाददाता

उन्नाव। मंगलवार को जिलाधिकारी गौरांग राठी जी की अध्यक्षता में पन्ना लाल सभागार में जिला पीसीपीएनडीटी सलाहकार समिति की बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने सील किए गए अल्ट्रासाउंड सेंटर, नवीन आवेदित अल्ट्रासाउंड केंद्रों के पंजीकरण, डॉक्टर कार्य मुक्त/ योजन हेतु आवेदित अल्ट्रासाउंड केंद्रों, अल्ट्रासाउंड मशीनों के परिवर्तन / स्थापना सहित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा कर आवश्यक निर्देश दिए। बीघापुर डायग्नोस्टिक सेंटर के चिकित्सक की डिग्री सत्यापन में फर्जी पाए जाने पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए मुकदमा दर्ज कराने के निर्देश मुख्य चिकित्सा

अधिकारी को दिया।

जिलाधिकारी ने कहा है कि पहले केंद्र संचालक डॉक्टर के खिलाफ नोटिस दे की फर्जी डिग्री क्यों लगाई यदि कोई भी संतोषजनक जवाब नहीं आता है तो केंद्र संचालक और डॉक्टर दोनों के खिलाफ तत्काल प्रभाव से मुकदमा दर्ज कराया जाए। जिलाधिकारी ने कहा की अल्ट्रासाउंड केंद्र के संचालन में डिग्री संबंधी कोई भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिलाधिकारी ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाएगी किसी भी केंद्र पर प्रसव पूर्व भ्रूण लिंग परीक्षण संबंधी कार्य होते ना पाया जाए। नोडल अधिकारी द्वारा गंभीरता के साथ निरीक्षण किया जाए और दोषी केंद्र संचालकों पर मुकदमा दर्ज कराया जाए। जिलाधिकारी ने कहा सत्यापन टीम यह भी निरीक्षण करें कि जो अल्ट्रासाउंड सेंटर सील किये गए हैं। वह चला तो नहीं रहे हैं सीसीटीवी फुटेज व डीबी आर में रिकार्ड देखा जाए।

जिलाधिकारी ने निर्देशित करते हुए कहा कि केंद्र के आसपास की दुकानों पर भी सीसीटीवी फुटेज देखा जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि यह सुनिश्चित करें कि सभी सेंटर पर जो पंजीकृत डॉक्टर है वही अल्ट्रासाउंड कार्य करें कोई भी अनाधिकृत व्यक्ति अल्ट्रासाउंड करते ना पाया जाए। कहा कि जो नए अल्ट्रासाउंड के पंजीकरण के लिए आवेदन कर रहे हैं। उनका भली भांति सत्यापन किया जाए किसी भी स्तर पर लापरवाही ना हो। उन्होंने कहा कि किसी भी केंद्र संचालक द्वारा लापरवाही बरती जाती है, प्रसव पूर्व लिंग परीक्षण किया जाता है तो तत्काल प्रभाव से सील करने की कार्यवाही की जानी चाहिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद के सभी अल्ट्रासाउंड केंद्रों के सत्यापन के लिए मजिस्ट्रेट और जिला स्तरीय अधिकारी भी नामित किए जाएंगे।

बैठक के अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी नोडल अधिकारी पीसीपीएनडीटी सहित अन्य संबंधित अधिकारी और पीसीपीएनडीटी सलाहकार समिति के सदस्य गण मौजूद रहे।

एक नजर

महिलाओं के लिए 10 दिवसीय विशेष जागरूकता अभियान

अमेठी। महिला कल्याण विभाग द्वारा संकल्प (हब फॉर इम्पावरमेंट ऑफ वूमेन) योजना के तहत जनपद में 10 दिवसीय विशेष जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में जिला महिला थाना गौरीगंज में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं और छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में विभागीय कर्मियों ने महिलाओं को विभिन्न योजनाओं और सेवाओं की जानकारी दी। उपस्थित महिलाओं को पंपलेट वितरित कर सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक किया गया। जेंडर स्पेशलिस्ट राकेश कुमार यादव ने महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों की विस्तृत जानकारी दी। वहीं, डीएमसी ऋषि ने महिला कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं और हेल्पलाइन नंबरों के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना और स्पॉन्सरशिप योजना की जानकारी साझा की गई। साथ ही महिलाओं को वन स्टॉप सेंटर की सुविधाओं जैसे—सुरक्षा, परामर्श और आपात सहायता सेवाओं के बारे में बताया गया। हेल्पलाइन नंबर साझा करते हुए बताया कि महिलाएं किसी भी समस्या या संकट की स्थिति में सीधे सहायता प्राप्त कर सकती हैं। इनमें 181 महिला हेल्पलाइन, 1090 वूमेन पावर लाइन, 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन और 112 आपातकालीन सेवा शामिल हैं।कार्यक्रम में छात्राओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही दहेज प्रथा, बाल विवाह, बाल श्रम और लिंग भेदभाव जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूकता फैलाई गई। 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के साथ हिंसा और शोषण की रोकथाम के उपायों पर भी चर्चा की गई। इस अवसर पर महिला थाना प्रभारी कंचन सिंह, डीएमसी ऋषि, जेंडर स्पेशलिस्ट राकेश कुमार यादव, अकाउंटेंट जानवी गुप्ता, इंदु कुमारी, पूनम देवी सहित विभागीय कर्मचारी और लाभार्थी महिलाएं मौजूद रहीं।

श्रमिक की मौत के बाद झाड़ियों में फेंका गया शव

अमेठी। रामगंज थाना क्षेत्र में उस समय सनसनी फैल गई जब एक श्रमिक का शव सड़क किनारे झाड़ियों में पड़ा मिला। मृतक की पहचान राम बहाल (45) निवासी के रूप में हुई है। परिजनों और ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि ट्रैक्टर मालिक और उसके साथियों ने हादसे के बाद शव को झाड़ियों में फेंक दिया और मामले की सूचना तक नहीं दी।जानकारी के अनुसार, राम बहाल मजदूरी का काम करते थे। 4 सितंबर को काम के दौरान वह ट्रैक्टर से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। आनन–फानन में उन्हें दुर्गापुर के एक निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया या इलाज से मना कर दिया। इसके बाद परिजन उन्हें सुल्तानपुर ले जा रहे थे, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। पुलिस जांच में सामने आया कि हादसे के बाद ट्रैक्टर मालिक त्रिलोकीनाथ मिश्रा और उनके साथी मृतक का शव ट्रैक्टर पर लादकर ले गए और सड़क किनारे झाड़ियों में फेंक दिया। मृतक की साइकिल और चप्पल भी मौके पर पड़ी मिली। इस घटना से पूरे क्षेत्र में आक्रोश फैल गया।परिजनों ने आरोप लगाया कि ट्रैक्टर मालिक ने घटना की जानकारी छिपाने की कोशिश की और शव को अकेला छोड़ दिया। उन्होंने मांग की है कि आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए और मृतक परिवार को न्याय दिलाया जाए।रामगंज थाना प्रभारी निरीक्षक कृष्णमोहन सिंह ने बताया कि इस मामले में ट्रैक्टर मालिक त्रिलोकीनाथ मिश्रा समेत चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है और संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। इंस्पेक्टर ने आश्वासन दिया कि जल्द ही सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

किसानों ने 13 ब्लॉकों में मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेज कर जताई समस्याएं

अमेठी। भारतीय किसान संघ ने जिले के सभी 13 ब्लॉकों में मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन ब्लॉक विकास अधिकारियों के माध्यम से भेजा गया। किसान संघ के अनुसार, फसलों की सुरक्षा और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए आवश्यक साधनों में लगातार कमियों के कारण किसान लगातार परेशान हैं।किसानों ने बताया कि खाद, बीज और कृषि रसायनों में मिलावट हो रही है, जिससे फसलें बुरी तरह प्रभावित हो रही हैं। इसके अलावा, छुट्टा पशुओं का आतंक बढ़ता जा रहा है और खेतों को नुकसान पहुंचा रहा है। सिंचाई की व्यवस्थाएं भी अधूरी हैं, कई नलकूप और नहरें खराब स्थिति में हैं। बिजली की बार–बार कटौती से रबी फसलों की सिंचाई प्रभावित हो रही है, जिससे किसान आर्थिक दबाव में हैं।किसान संघ ने ज्ञापन में अपनी प्रमुख मांगें रखीं। उन्होंने समय पर और गुणवत्तापूर्ण खाद–बीज उपलब्ध कराने, खराब नलकूपों और नहरों की मरम्मत करने, मनरेगा के तहत सिंचाई नालियों की नियमित सफाई सुनिश्चित करने और रबी फसलों के लिए दिन में निर्बाध बिजली आपूर्ति करने की मांग की। संघ ने अधिकारियों और कर्मचारियों के नियमित प्रशिक्षण की भी आवश्यकता जताई, ताकि वे किसानों की समस्याओं को गंभीरता से लें और सेवा भाव से कार्य करें।कार्यक्रम में जिला मंत्री ओम प्रकाश मिश्र, रविंद्र प्रताप पाठक, राणा प्रताप सिंह और बृजेश मिश्र समेत कई वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे। उन्होंने किसानों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और उनके जल्द समाधान के लिए प्रयास करने का आश्वासन दिया।किसान संघ ने चेतावनी दी कि यदि इन गंभीर समस्याओं का त्वरित समाधान नहीं किया गया, तो वे प्रदेशव्यापी आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। संघ ने सभी किसानों से एकजुट होकर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने का आह्वान किया। संघ के प्रतिनिधियों का कहना है कि यह ज्ञापन केवल किसानों की समस्याओं को सरकार के समक्ष रखने का प्रयास है, लेकिन यदि गंभीरता दिखाई नहीं गई, तो किसानों की नाराजगी बड़े आंदोलन में बदल सकती है। इस अवसर पर उपस्थित किसानों ने जोर देकर कहा, हम खेती से अपना और देश का पेट भरते हैं, लेकिन हमारी समस्याओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

बोलेरो की टक्कर से बाइक सवार दो सगे भाई गंभीर

अमेठी। जायस कोतवाली क्षेत्र में देर रात एक भीषण सड़क हादसे ने पूरे इलाके को दहला दिया। जगदीशपुर रोड स्थित सेठी तालाब के पास तेज रफ्तार बोलेरो ने सामने से आ रही बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार दो सगे भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद बोलेरो चालक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया।घायल भाइयों की पहचान अखिलेश मौर्य और चंद्रकेश मौर्य, पुत्रगण रामनरेश मौर्य, निवासी बड़ा घोसियाना, के रूप में हुई है। दोनों भाई काम से लौटकर देर रात घर जा रहे थे कि अचानक सामने से आ रही बोलेरो ने अनियंत्रित होकर उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए।स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने एंबुलेंस की मदद से घायलों को जिला अस्पताल भेजा, जहां डॉक्टरों ने उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए एम्स रायबरेली रेफर कर दिया। बताया जा रहा है कि हालत में सुधार न होने पर दोनों को लखनऊ ट्रामा सेंटर भेजा गया। वर्तमान में उनका इलाज ट्रामा सेंटर में चल रहा है।घायलों के परिजन अर्जुन कुमार मौर्य ने बताया कि हादसे के बाद बोलेरो चालक अपना वाहन छोड़कर भाग निकला। हालांकि उसकी पहचान हो चुकी है और पुलिस उसकी तलाश कर रही है।इस हादसे से स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश है। ग्रामीणों का कहना है कि रात में तेज रफ्तार और लापरवाह वाहन चालकों के कारण आए दिन हादसे हो रहे हैं। उन्होंने पुलिस प्रशासन से रात में सड़क पर गश्त बढ़ाने और ऐसे चालकों पर सख्त कार्रवाई की मांग की है।जायस कोतवाली पुलिस ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है और हादसे के लिए जिम्मेदार बोलेरो चालक को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

राहुल गांधी आज से रायबरेली के दो दिवसीय दौरे पर

बिहार के बाद अब यूपी में राजनीतिक सरगर्मियां तेज, वोट अधिकार यात्रा के बाद रायबरेली से यूपी कांग्रेस को नई दिशा देंगे राहुल

» पंचायती चुनाव का आगाज, बूथ कार्यकर्ताओं से संवाद और सरकार–ब्यूरोक्रेसी पर हमले के संकेत

कनक बिहारी/बीपी सिंह

ऊंचाहार, रायबरेली। नेता प्रतिपक्ष (लोकसभा) कांग्रेस सांसद राहुल गांधी इन दिनों वोट चोरी और लोकतांत्रिक अधिकारों के सवाल पर आक्रामक तेवर में हैं। बिहार में अपनी 'वोट अधिकार यात्रा' पूरी करने के बाद अब वह उत्तर प्रदेश के दो दिवसीय दौरे पर अपने संसदीय क्षेत्र रायबरेली पहुंच रहे हैं। उनका यह दौरा भले ही रायबरेली की सीमाओं तक केंद्रित हो, लेकिन राजनीतिक जानकारों का मानना है कि इसके जरिए राहुल गांधी पूरे यूपी की राजनीति में नई गर्माहट और पंचायती चुनाव का आगाज पैदा करने वाले हैं।

राहुल गांधी इस दौरान रायबरेली की तीन विधानसभाओंसदर, हरचंदपुर और ऊंचाहार में कार्यक्रम करेंगे। रायबरेली सदर में वह एक सामाजिक आयोजन में शिरकत करेंगे, जबकि हरचंदपुर और ऊंचाहार विधानसभाओं में बूथ स्तरीय कार्यकर्ताओं को सम्मानित करेंगे। इसके अलावा वह ऊंचाहार स्थित एनटीपीसी अतिथि गृह में पार्टी कार्यकर्ताओं और आम जनता से मुलाकात करेंगे तथा जिले की 'दिशा बैठक' की अध्यक्षता भी करेंगे। दिशा की यह उनकी तीसरी बैठक है। राहुल गांधी की आक्रामकता और हालिया तेवरों को देखते हुए यह कयास लगाए जा रहे हैं कि वह रायबरेली से प्रदेश कांग्रेस को नया संदेश देंगे। उनकी बातों और रुख पर नज़र गड़ाए मीडिया और राजनीतिक हलकों में उत्सुकता है कि बिहार के बाद यूपी में उनके निशाने पर कौन होंगे और वह किन मुद्दों को धार देंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि जिस तरह राहुल गांधी ने हाल में चुनाव आयोग और उसके अधिकारियों को कठघरे में खड़ा किया है, उसी अंदाज़ में वह उत्तर प्रदेश सरकार और प्रशासनिक तंत्र को भी जनता से जुड़े मसलों पर घेर सकते हैं। यही वजह है कि आम जनमानस भी उनके दौरे को लेकर उत्साहित है और संभावित सियासी असर पर चर्चाएं तेज हैं। इस दौरे के तहत ऊंचाहार विधान सभा में कार्यक्रम की जिम्मेदारी पूर्व विधायक कुंवर अजय पाल सिंह संभाल रहे हैं, जबकि हरचंदपुर में कार्यक्रम का संयोजन कांग्रेस नेता पूर्वमंत्री पंजाबी सिंह कर रहे हैं। राहुल के इस दो दिवसीय दौरे को कांग्रेसजन आगामी पंचायत चुनाव और 2027 विधानसभा चुनावों की तैयारी का आगाज़ मान रहे हैं।

ऊंचाहार के पूर्व विधायक एवं अजयपाल सिंह ने कहा कि राहुल गांधी का यह दौरा न सिर्फ कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने वाला है, बल्कि यूपी कांग्रेस की रणनीति दिशा तय करने वाला भी साबित हो सकता है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता हरिचन्द्र बहादुर सिंह ने बताया कि नेता लोक सभा, सांसद राहुल गांधी के दो दिवसीय दौरे को लेकर जिले भर के कांग्रेसियों के अलावा आस पास के जिले के कांग्रेसियों में खुशी की लहर है।

राहुल का दो दिवसीय दौरा व बैठकों से संगठन को मिलेगी नई ऊर्जा : पंकज तिवारी

रायबरेली। सांसद राहुल गांधी अपने निर्धारित दो दिवसीय दौरे पर आज 10 सितम्बर को 10 बजे रायबरेली आ रहे हैं और 11 सितम्बर को दूसरे दिन पुन: दिल्ली रवाना हो जाएंगे। कांग्रेस के जिलाध्यक्ष पंकज तिवारी एडवोकेट ने बताया कि सांसद राहुल गांधी आज 10 सितम्बर को प्रात: 10 बजे बटोही रिसॉर्ट डिडौली पहुंचेंगे जहां बूथ कार्यकर्ताओं से वे सीधे संवाद करेंगे। इसके पश्चात पूर्वाहन 11:30 बजे शहर के प्रतिष्ठित होटल शांति ग्रांट में कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करेंगे। कार्यकर्ता श्री त्रिपाठी के अनुसार अपराहन 1 बजे गोरा बाजार चौराहा स्थित नवनिर्मित सम्राट अशोक स्तम्भ का उद्घाटन करेंगे। तत्पश्चात अपराहन 2:30 बजे मुलिहामऊ गांव में अमर शहीद बीरा पासी वन ग्राम में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेंगे। अपराहन 3:30 बजे बटोही, ऊंचाहार में वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से सीधी मुलाकात करेंगे। इसके उपरांत वे ऊंचाहार में रात्रि विश्राम करेंगे दूसरे दिन 11 सितम्बर को प्रात: 6 बजे एनटीपीसी ऊंचाहार में डेलीगेशन एवं आम जनप्रतिनिधियों से भेंट करेंगे। मध्याहन 12 बजे बचत भवन रायबरेली के सभागार में दिशा (जिला सतर्कता एवं अनुश्रवण समिति) की बैठक में भाग लेंगे। उसके पश्चात वे लखनऊ होकर दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगे। सांसद राहुल गांधी की रायबरेली यात्रा को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह देखा जा रहा है तथा संगठन द्वारा तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

उपेक्षा से त्रस्त ग्रामीणों का फूटा गुस्सा, अमृत सरोवर पर किया प्रदर्शन

अतिक्रमण, जलभराव और अधूरा अमृत सरोवर बना राहगीरों की परेशानी का सबब

» गल्थरेश्वर धाम मार्ग की बदहाली पर ग्रामीणों का धरना

» डीह से डेला मार्ग का उच्चीकरण और अतिक्रमण हटाने की उठी मांग

विश्ववार्ता संवाददाता

डीह, रायबरेली। जिले के प्राचीन प्रसिद्ध शिव मंदिर गल्थरेश्वर धाम जाने वाले मार्ग की बदहाली से क्षुब्ध होकर ग्रामीणों ने मंगलवार को अमृत सरोवर परिसर में जोरदार प्रदर्शन किया। ग्रामीणों का आरोप है कि डीह कस्बे से डेला गांव को जोड़ने वाला यह मार्ग बार-बार विधायक निधि से पीडब्ल्यूडी द्वारा बनवाया गया, लेकिन सड़क किनारे मकान मालिकों द्वारा अवैध निर्माण, कब्जे, अतिक्रमण कर मकान और चबूतरे बना लेने से नालियां बंद हो गई हैं। नतीजतन बारिश के समय जलभराव हो जाता है और सड़क पर गड्ढे व कीचड़ जमने से श्रद्धालुओं व राहगीरों का चलना दूभर हो गया है।

यह मार्ग न केवल गल्थरेश्वर धाम के हजारों श्रद्धालुओं की आवाजाही का प्रमुख रास्ता है बल्कि रायबरेली जाने वाले लोगों के लिए शॉर्टकट भी है, जिससे उन्हें छह से सात किलोमीटर का फेरा नहीं लगाना पड़ता। बावजूद इसके प्रशासनिक लापरवाही ने इस मार्ग को दलदल और संकट का रास्ता बना दिया है। ग्रामीणों ने बताया कि कई बार व्यापार मंडल और स्थानीय लोगों ने इस मार्ग के उच्चीकरण और नाली निर्माण की मांग अधिकारियों से की, लेकिन सुनवाई नहीं हुई। इसी उपेक्षा से आक्रोशित होकर मंगलवार को अनिल सिंह चौहान के नेतृत्व में सैकड़ों ग्रामीणों ने अमृत सरोवर परिसर में धरना दिया। उन्होंने जिलाधिकारी हर्षिता माथुर से मांग की कि तत्काल अतिक्रमण हटवाकर सड़क का उच्चीकरण कराया जाए, दोनों किनारों पर नालियों का निर्माण हो, मंदिर स्थित अमृत सरोवर का सौंदर्यीकरण और शेष कार्य पूर्ण कराया जाए तथा पीएचसी के पास फैले कूड़े को हटवाकर कूड़ाघर की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि समस्याओं का समाधान शीघ्र न हुआ तो वे जिला मुख्यालय पर व्यापक धरना-प्रदर्शन को बाध्य होंगे। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि फूलचंद्र अग्रहरि ने कहा कि नालियों और कूड़े की सफाई कराई गई है, किंतु सड़क पीडब्ल्यूडी के अधीन है, जिसका उच्चीकरण ग्राम पंचायत के वश में नहीं है। वहीं अमृत सरोवर का बजट अभी प्राप्त न होने से कार्य अधूरा है, बजट मिलते ही इसे पूरा कराया जाएगा।

सहकारिता महाअभियान में 45 हज़ार सदस्य जोड़ने का लक्ष्य

विश्ववार्ता संवाददाता

रायबरेली। क्या रायबरेली सहकारी समितियाँ सरकार द्वारा चलाए जा रहे एम-पैक्स सदस्यता महाअभियान 2025 में तय लक्ष्य से अधिक सदस्य जोड़ पाएंगी? इसी सवाल के इर्द-गिर्द मंगलवार को जिला सहकारी बैंक सभागार में कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें बताया गया कि जिले की 186 एम-पैक्स समितियों को 45 हज़ार नए सदस्य जोड़ने का लक्ष्य मिला है।

» रायबरेली सहकारी बैंक की कार्यशाला में तय हुई रणनीति

अध्यक्ष विवेक विक्रम सिंह ने कहा कि समितियाँ जितनी अधिक सदस्य बनाएंगी, उतने अधिक किसानों को ऋण और योजनाओं का लाभ मिलेगा। सहकारिता आंदोलन को मजबूत बनाने और अल्पकालिक ऋण 3 प्रतिशत ब्याज दर पर उपलब्ध कराने की योजनाओं पर जोर दिया गया। कार्यशाला में भाजपा जिलाध्यक्ष बुद्धीलाल पासी, बैंक उपाध्यक्ष सुशील कुमार शर्मा, सचिव बृजेश विश्वकर्मा समेत जनपद और तहसीलों के पदाधिकारी, पैक्स सचिव व बैंक कर्मी उपस्थित रहे।

आर्थिक मदद के आश्वासन के बाद हुआ मृतकों के शव का अंतिम संस्कार

लालगंज,रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के चचिहा मोड़ निवासी राजमिस्त्री रमेश उर्फ गुड्डू और चचिहा निवासी रामू लोध के परिवारीजनों ने भवन स्वामी से आर्थिक मदद के आश्वासन के बाद मंगलवार की शाम शवों का अंतिम संस्कार किया। दरअसल रविवार की शाम रायबरेली रोड स्थित फायर स्टेशन के पास दीपेमऊ निवासी योगेश यादव के निर्माणाधीन भवन का छज्जे का लिंटर टूटने से रमेश, रामू लोध और रज्जब अली की गिरकर मौत हो गई थी। सोमवार को पोस्टमार्टम के बाद शव घर पहुंचे तो परिजन आर्थिक सहायता की मांग को लेकर अड़ गए और अंतिम संस्कार से इंकार कर दिया। मामले को लेकर सोमवार और मंगलवार दोनों ही दिन मृतकों के परिजनों व भवन स्वामी के बीच वार्ता चलती रही लेकिन समाधान नहीं निकल पा रहा था।

नोडल अधिकारी एवं प्रबुद्धजनों ने छात्रों समेत उद्यमियों व मीडिया बंधुओं के साथ किया संवाद

नागरिकों की सहभागिता से तैयार हो रहा है विकसित उत्तर प्रदेश @2047 का रोडमैप

विश्ववार्ता संवाददाता

अमेठी। 'समर्थ उत्तर प्रदेश-विकसित उत्तर प्रदेश @2047' अभियान के तहत आज दूसरे दिन शासन द्वारा नामित नोडल अधिकारी/महानिदेशक युवा कल्याण एवं प्रांतीय रक्षक दल विभाग उत्तर प्रदेश चैत्रा बी. तथा प्रबुद्धजन सेवानिवृत आईएएस संतोष कुमार राय, सेवानिवृत्त आईएफएस आशुबोध कुमार पंत, सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ अंगद सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ नवनीत कुमार मिश्रा, सेवानिवृत्त अधीक्षण अभियंता रजनीश प्रकाश चौधरी ने जिलाधिकारी संजय चौहान, मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल के साथ छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, राष्ट्रीय/राज्य पुरस्कार प्राप्त महानुभावों एवं अपनी विद्या में ख्याति प्राप्त अन्य बुद्धिजीवियों, व्यवसाईयों, उद्यमियों तथा मीडिया बंधुओं के साथ संवाद कर 2047 तक उत्तर प्रदेश को विकसित राज्य बनाने को लेकर चर्चा की गई तथा उनके द्वारा दिए गए सुझाव भी संकलित किए गए। विकसित उत्तर प्रदेश विजन की तीन प्रमुख थीमों अर्थ शक्ति, सृजन शक्ति और जीवन शक्ति से जुड़े 12 प्रमुख सेक्टर पर चर्चा हुई।

नामित प्रबुद्ध जनों ने बताया कि सभी विषयों पर प्राप्त सुझावों के आधार पर राज्य के विकास की दीर्घकालिक रणनीति तय की जाएगी। सर्वप्रथम नोडल अधिकारी व प्रबुद्ध जनों ने प्रथम सत्र 10:00 बजे से आरआरपीजी कॉलेज अमेठी में आयोजित सत्र में प्रतिभाग किया, यहां पर उन्होंने शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं से शिक्षा के क्षेत्र में चर्चा किया। इसके उपरांत कलेक्ट्रेट सभागार में उद्यमियों तथा व्यापारियों के साथ बैठक की गई जिसमें जनपद में निवेश एवं रोजगार पर विस्तृत चर्चा की गई ।

नोडल अधिकारी ने कहा कि किसी भी उद्यमी को उद्योग स्थापना में किसी भी प्रकार की समस्या न होने पाए इसका विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने उद्यमियो से सुधार के बाबत सुझाव मांगा। इसके उपरांत नोडल अधिकारी व प्रबुद्ध जनों ने जनपद के मीडिया प्रतिनिधियों के साथ वार्ता किया तथा उनके द्वारा 2047 तक विकसित उत्तर प्रदेश के संबंध में दिए गए सुझावों को संकलित किया। अंत में जिलाधिकारी संजय चौहान ने नोडल अधिकारी व प्रबुद्ध जनों तथा मीडिया प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने ऑनलाइन पोर्टल की प्रक्रिया भी समझाई और बताया कि कोई भी नागरिक 5 अक्टूबर तक सीधे प्रदेश सरकार को अपने सुझाव भेज सकता है।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक, जिला अर्थ व संख्याधिकारी पन्नालाल, जिला सूचना अधिकारी शिवदर्शन यादव, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संजय तिवारी, जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ राजेश द्विवेदी, उपायुक्त उद्योग दिनेश कुमार चौरसिया सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

राज्य सूचना आयुक्त ने आरटीआई प्रकरणों के त्वरित निस्तारण पर दिया जोर

लंबित अपीलों व शिकायतों की समीक्षा, समय–सीमा में निस्तारण न होने पर अर्थदंड व विभागीय कार्रवाई की चेतावनी

» जिला प्रशासन की पारदर्शिता और त्वरित कार्यप्रणाली की आयुक्त ने सराहना की

विश्ववार्ता संवाददाता

रायबरेली। राज्य सूचना आयुक्त उत्तर प्रदेश पदुम नारायण द्विवेदी मंगलवार को रायबरेली प्रवास पर पहुंचे। पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस में उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके उपरांत उन्होंने कलेक्ट्रेट सभागार में जन सूचना से संबंधित लंबित अपीलों और शिकायत प्रकरणों की समीक्षा बैठक की।

समीक्षा के दौरान उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि आरटीआई के माध्यम से प्राप्त सभी शिकायतों का निस्तारण निर्धारित समय-सीमा के भीतर अनिवार्य रूप से किया जाए। उन्होंने चेतावनी दी कि लापरवाही अथवा विलंब की स्थिति में अर्थदंड लगाया जा सकता है तथा विभागीय कार्यवाही की संस्तुति भी की जाएगी। श्री द्विवेदी ने कहा कि जन सूचना अधिनियम का मूल उद्देश्य प्रशासनिक कार्यप्रणाली में पारदर्शिता सुनिश्चित करना है। सरकार की भी यही मंशा है कि प्रशासन और आम जनमानस के बीच विश्वास एवं बेहतर सामंजस्य स्थापित हो। उन्होंने जन सूचना अधिकारियों और प्रथम अपीलीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक प्रकरण का समयबद्ध निस्तारण किया जाए तथा जिन बिंदुओं पर सूचना उपलब्ध नहीं कराई जा सकती, उसके स्पष्ट कारणों का भी उल्लेख किया जाए।

उन्होंने जिला प्रशासन की कार्यशैली की सराहना करते हुए कहा कि यहाँ जन सूचना से जुड़े मामलों का निस्तारण बेहतर ढंग से किया जा रहा है और लंबित प्रकरणों की संख्या भी अन्य जिलों की तुलना में कम है। इस अवसर पर आरटीआई विशेषज्ञ शैलेंद्र सिंह चौहान ने अधिनियम की विभिन्न धाराओं और प्रावधानों की विस्तार से जानकारी दी। बैठक के अंत में जिला प्रशासन की ओर से माननीय राज्य सूचना आयुक्त को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) विशाल यादव, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नवीन चंद्रा सहित जनपद के सभी जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

अवैध कटान में उजागर हुई संलिप्तता पर वन विभाग के बीट प्रभारी पर गिरी गाज

विश्ववार्ता संवाददाता

अमेठी। काफी दिनों से सिंहपुर विकास खंड क्षेत्र में ताबड़तोड़ हो रहे अवैध कटान को लेकर वन विभाग की हो रही किरकिरी पर डी एफ ओ द्वारा विभागीय जांच कराई गई। विभागीय जांच में टिकरी व इन्हौना बीट में तैनात रहे बीट प्रभारी की संलिप्तता उजागर हुई,। जिस पर बीट प्रभारी रामेश्वर यादव के खिलाफ तत्काल प्रभाव से विभागीय कार्यवाही करते हुए उसे रेंज कार्यालय मोहनगंज से संबद्ध कर दिया गया है।

विकासखंड सिंहपुर के टिकरी और इन्हौंना बीट में अवैध लकड़ी कटान के तमाम मामले अखबारों में प्रकाशित हुए थे, जिसका विभाग ने संज्ञान लिया और गंभीरता से जांच कराई। बीती इंचार्ज रामेश्वर यादव की मामले में संलिप्तता मिलने की पुष्टि हुई । इसके अलावा विवादास्पद गतिविधियां भी सामने आई थीं।

» डीएफओ के निर्देश पर कार्यालय से संबद्ध हुआ वन कर्मी

बीट प्रभारी के खिलाफ शुरू हुई विभागीय जांच : रेंज अधिकारी

तिलोई क्षेत्र के रेंज अधिकारी मिर्जा अशरफ वेग ने बताया कि उच्चाधिष्टियों के निर्देश पर प्रकरण की जांच कराई गई ।प्रथम दृष्टया आरोपी बीट प्रभारी की संलिप्तता उजागर होने पर उसके खिलाफ विभागीय कार्यवाही की गई है। आरोप सिद्ध होने पर आगे की कार्यवाही की जा सकेगी।

सम्मान समारोह शिक्षक दिवस पर अभाविप का भव्य शिक्षक सम्मान समारोह, 200 से अधिक शिक्षकों की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ आयोजन

गुरु राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी हैं: अवनीश पटेल

विश्ववार्ता संवाददाता

रायबरेली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद रायबरेली द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर एक भव्य शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें जिले भर के विभिन्न विद्यालयों से 200 से अधिक शिक्षक सम्मिलित हुए।

यह कार्यक्रम शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य इं. अवनीश कुमार पटेल ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी हैं, जो नई पीढ़ी को सही और गलत का बोध कराते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जिस देश में शिक्षक का सम्मान होता है, वहां भविष्य उज्ज्वल होता है।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अभाविप अवध प्रांत के प्रांत शोध प्रमुख जितेंद्र कुमार शुक्ला ने कहा कि विद्यार्थी परिषद में शिक्षक की भूमिका केवल पठन-पाठन तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह युवा पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि समाज में बदलाव लाने की शुरुआत शिक्षा से होती है और इसकी नींव शिक्षक रखते हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेविका अंजली मौर्या ने अपने विचार रखते हुए कहा कि गुरु का स्थान भगवान से भी ऊपर होता है। उन्होंने कहा कि आज के युग में शिक्षक केवल ज्ञान नहीं, बल्कि संस्कार भी देते हैं। वरिष्ठ समाजसेवी मुकेश श्रीवास्तव ने कहा कि अभाविप की यह पहल सराहनीय है, जो शिक्षकों का समाज के प्रति योगदान पहचानकर उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित करती है।

इस समारोह की संपूर्ण योजना की जानकारी रायबरेली जिला प्रमुख डॉ प्रवेश नारायण सिंह ने दी। कार्यक्रम का संचालन विभाग सह संयोजक दिव्यांशु तिवारी ने किया और समापन अवसर पर सभी शिक्षकों व कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट किया।

एक नजर

कोहली-रोहित के रिटायरमेंट के बाद भारत का पहला टूर्नामेंट

टी-20 वर्ल्ड कप 2024 की जीत के साथ भारतीय क्रिकेट के सुनहरे युग का एक बड़ा अध्याय बंद हो गया। विराट कोहली, रोहित शर्मा और रवींद्र जडेजा जैसे दिग्गजों ने इस फॉर्मेट को अलविदा कह दिया। अब एशिया कप में पहली बार टीम इंडिया उनके बिना मैदान पर उतरेगी। शुभमन गिल पर कोहली की जगह रन बनाने का दबाव होगा, कप्तान सूर्यकुमार यादव को रोहित की कप्तानी का वारिस माना जाएगा और ऑलराउंडर अक्षर पटेल को जडेजा की जिम्मेदारी उठानी होगी। दूसरी ओर पाकिस्तान ने भी बाबर आज़म और मोहम्मद रिज़वान को हटाकर नया दौर शुरू किया है। ऐसे में एशिया कप सिर्फ खिताब की लड़ाई नहीं, बल्कि नई पीढ़ी के खिलाड़ियों की परीक्षा साबित होगा। क्या ये नए खिलाड़ी और कप्तान बड़े टूर्नामेंट में दिग्गजों को कामयाबी के साथ रिप्लेस कर पाएंगे। स्टोरी में आगे इसी की पड़ताल करेंगे।

सूर्यकुमार बोले-मैदान पर एग्रेशन के बिना काम नहीं चल सकता

भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने मंगलवार को कहा कि उनकी टीम पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले एशिया कप के मुकाबले में एग्रेशन पर कंट्रोल नहीं करेगी। टीम बुधवार को रात 8 बजे से UAE के खिलाफ ग्रुप-ए का पहला मैच खेलेगी। उसके बाद रविवार (14 सितंबर) को उसका सामना सबसे बड़ी राइवल टीम पाकिस्तान से होगा। सूर्यकुमार मंगलवार को एशिया कप कैप्टन्स मीट में शामिल हुए। उनसे जब पूछा गया था कि पाकिस्तान के खिलाफ मैच में क्या खिलाड़ी आक्रामकता कम करेंगे। उन्होंने कहा, मैदान पर आक्रामकता हमेशा रहती है। अगर आपको जीतना है, तो इसके बिना काम नहीं चल सकता। इसी सवाल पर पाकिस्तान के कप्तान सलमान अली आगा ने कहा, अगर कोई आक्रामक होना चाहता है तो यह उसका फैसला है। जहां तक मेरी टीम का सवाल है, तो मैं कोई दिशा निर्देश किसी को नहीं देता।

एशिया कप से ठीक पहले श्रीलंकाई टीम में बदलाव:

श्रीलंका क्रिकेट (SLC) ने एशिया कप 2025 शुरू होने से ठीक पहले अपनी टीम में बदलाव किया है। बोर्ड ने जनिथ लियानागे को शामिल किया है। अब श्रीलंका की टीम 17 मेंबर्स की हो गई है। बोर्ड ने मंगलवार को सोशल प्लेटफार्म X पोस्ट के जरिए यह जानकारी दी। बोर्ड ने एक बयान में कहा कि सिलेक्शन कमेटी ने जनिथ लियानागे को स्क्वॉड में शामिल किया है।

पाकिस्तानी पेसर उस्मान शिनवारी ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लिया

पाकिस्तान के तेज गेंदबाज उस्मान शिनवारी ने इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। उन्होंने आखिरी इंटरनेशनल मुकाबला 2019 में खेला था। उस्मान ने करियर में तीनों फॉर्मेट में 34 मैच खेले। बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज ने 2013 में श्रीलंका के खिलाफ टी-20 से इंटरनेशनल डेब्यू किया था। उन्होंने बाद में श्रीलंका के खिलाफ ही अपना वनडे और टेस्ट डेब्यू किया। उस्मान ने 17 वनडे और 16 टी-20 मुकाबले खेले। उन्होंने 2019 में श्रीलंका के खिलाफ एकमात्र टेस्ट मैच खेला। उस्मान 2018 में एशिया कप में पाकिस्तानी टीम का भी हिस्सा थे। उनके करियर का बेस्ट परफॉर्मेंस श्रीलंका के खिलाफ वनडे मैच में आया था।

7 फरवरी से शुरू हो सकता है टी-20 वर्ल्डकप 2026

भारत और श्रीलंका में होगा, 8 मार्च को अहमदाबाद में फाइनल की भी संभावना

एजेंसी

नई दिल्ली। 2026 का मेंस टी-20 वर्ल्ड कप 7 फरवरी से शुरू हो सकता है। ESPN की रिपोर्ट अनुसार, इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (ICC) ने मेजबान देश और टूर्नामेंट में हिस्सा लेने वाली टीमों को संभावित तारीखें भेज दी हैं। जिसमें 8 मार्च तक फाइनल कराने की बात भी कही गई है।

अगला टी-20 वर्ल्ड कप डिफेंडिंग चैंपियन भारत और श्रीलंका की मेजबानी में खेला जाएगा। भारत में 2016 और श्रीलंका में 2012 में आखिरी बार टी-20 वर्ल्ड कप हुआ था। दोनों देश अब मिलकर मेजबानी करेंगे।

भारत में 5 और श्रीलंका में 2 वेन्यू पर हो सकते हैं मैच

भारत में 5 और श्रीलंका में 2 वेन्यू पर मुकाबले हो सकते हैं। फाइनल मुकाबला अहमदाबाद या कोलंबो में खेला जा सकता है। अगर पाकिस्तान फाइनल में पहुंचा तो मुकाबला श्रीलंका में ही होगा।

भारत और पाकिस्तान के बीच खराब राजनीतिक संबंधों के कारण दोनों टीमें एक-दूसरे के देश में क्रिकेट नहीं खेलतीं। इस कारण एशिया कप की मेजबानी भले भारत को मिली, लेकिन टूर्नामेंट UAE में खेला जा रहा है।

इसी साल फरवरी में चैंपियंस ट्रॉफी भी पाकिस्तान में खेली गई, लेकिन टीम इंडिया ने फाइनल समेत अपने सभी मैच UAE में ही खेले। इसलिए टी-20 वर्ल्ड कप का फाइनल भी श्रीलंका में हो सकता है।

शेड्यूल फाइनल होना बाकी

ICC ने फिलहाल सभी टीमों को संभावित तारीखें ही भेजी हैं। फाइनल शेड्यूल तय होना बाकी है। टूर्नामेंट में 2024 की तरह ही 20 टीमें हिस्सा लेंगी, जिनके बीच 55 मैच खेले जाएंगे।

टीम इंडिया टी-20 वर्ल्ड कप की डिफेंडिंग चैंपियन है। भारत ने साउथ अफ्रीका को फाइनल हराकर खिताब जीता था।

5-5 टीमों को 4 ग्रुप में बांटा जाएगा। हर ग्रुप से टॉप-2 टीमें सुपर-8 में जाएंगी। जहां 4-4 टीमों को 2 ग्रुप में बांटा जाएगा। हर ग्रुप से टॉप-2 टीमों को सेमीफाइनल में एंट्री मिलेगी। सेमीफाइनल जीतने वाली टीमों के बीच फाइनल होगा।

15 टीमों ने क्वालिफाई किया

टी-20 वर्ल्ड कप के लिए अब तक 15 टीमों ने क्वालिफाई कर लिया है। इनमें मेजबान भारत, श्रीलंका के अलावा अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, इंग्लैंड, साउथ अफ्रीका, अमेरिका, वेस्टइंडीज, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, आयरलैंड, कनाडा, नीदरलैंड और इटली शामिल हैं। इटली ने पहली ही बार किसी ICC वर्ल्ड कप में जगह बनाई है।

टूर्नामेंट के लिए बची हुईं 5 में से 2 टीमें अफ्रीका रीजनल क्वालिफायर से आएंगी। वहीं 3 टीमें एशिया और ईस्ट एशिया पैसिफिक क्वालिफायर से आएंगी। 5 जगहों के लिए जिम्बाब्वे, नामीबिया, पापुआ न्यू गिनी, नेपाल, ओमान, हॉन्गकॉन्ग और UAE जैसी टीमें दावेदार हैं।

भारत में 2026 के शुरुआती 5 महीने तक लगातार मैच

2026 में भारत को शुरुआती 5 महीनों में 3 बड़े टूर्नामेंट की मेजबानी करनी हैं। 11 से 31 जनवरी तक न्यूजीलैंड टीम वनडे और टी-20 की सीरीज खेलेगी। फिर टी-20 वर्ल्ड कप शुरू हो जाएगा। इसी दौरान 5 टीमों का विमेंस प्रीमियर लीग (WPL) भी खेला जाएगा। दोनों टूर्नामेंट खत्म होने के बाद मार्च में ही इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) भी शुरू हो जाएगी। IPL मई तक खत्म होता है।

टी-20 वर्ल्ड कप की शुरुआत 2007 में हुई। भारत ने पहले एडिशन के फाइनल में पाकिस्तान को हराकर टाइटल जीता था। इसके 17 साल बाद भारत ने 2024 में साउथ अफ्रीका को फाइनल हराया और दूसरी बार टाइटल जीता। भारत के अलावा वेस्टइंडीज और इंग्लैंड ने भी 2-2 टाइटल जीते हैं। पाकिस्तान, श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया ने 1-1 बार खिताब जीता है।

भारतीय फुटबॉल टीम ने ओमान को हराकर ब्रॉन्ज मेडल जीता

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल टीम ने पहली बार खेले गए CAFA नेशंस कप में ओमान को 3-2 से पेनाल्टी शूटआउट में हराकर ब्रॉन्ज मेडल जीता। फुटबॉल रैंकिंग में जहां ओमान 79वें नंबर पर है, वहीं भारत 133वें पायदान पर है। ताजिकिस्तान के हिसोर सेंट्रल स्टेडियम में खेले गए तीसरे स्थान के प्लेऑफ में मुकाबला 1-1 से बराबरी पर खत्म हुआ था। दोनों टीमों ने हाफ टाइम के बाद 1-1 गोल किए मैच के 55वें मिनट में जमीअल अल यहमादी ने ओमान के लिए गोल दागा, लेकिन उदांता सिंह ने 80वें मिनट में शानदार हेडर से बराबरी का गोल किया। इसके बाद मुकाबला अतिरिक्त समय में चला गया। 96वें मिनट में ओमान के अली अल बुसेदी को रेड कार्ड मिला और टीम 10 खिलाड़ियों पर सिमट गई। बावजूद इसके, भारत देर तक दबदबा बनाने के बाद भी विजयी गोल नहीं कर पाया और मैच का फैसला पेनाल्टी से हुआ।

पेनाल्टी शूटआउट में भारत के लिए लालियानजुआला छांगते, राहुल भेके और जितिन एमएस ने गोल किए। वहीं, अनवर अली का शॉट बचा लिया गया और उदांता चूक गए। ओमान की ओर से केवल थानी अल रुशैदी और मुहसन अल घस्सानी गोल कर पाए। भारतीय कप्तान और गोलकीपर गुरप्रीत सिंह संधू ने अल यहमादी का शॉट रोककर भारत को ऐतिहासिक जीत दिलाई।

पहली बार भारत ने ओमान को हराया

भारतीय टीम ने इसी के साथ किसी अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल मैच में ओमान को पहली बार हराया है। दोनों टीम अपने ग्रुप में दूसरे स्थान पर रहीं थी जिससे उन्हें तीसरे स्थान के मुकाबले में खेलने का मौका मिला।

भारत ने साल 2000 से ओमान के खिलाफ नौ मैच में से छह गंवाए हैं। दोनों टीम के बीच पिछला मुकाबला मार्च 2021 में खेला गया था जो 1-1 से ड्रॉ रहा था।

22 से बिस्किट-टूथपेस्ट जैसे प्रोडक्ट्स सस्ते मिल सकेंगे

सरकार ने कंपनियों को पुराने स्टॉक की MRP बदलने की इजाजत दी

एजेंसी

नई दिल्ली। 22 सितंबर से लागू हो रहीं नई GST दरों से पहले सरकार ने कंपनियों को अपने पुराने बचे हुए माल (अनसोल्ड स्टॉक) की मैक्सिमम रिटेल प्राइज (MRP) बदलने की इजाजत दे दी है। मैन्युफैक्चरर्स, पैकर्स और इम्पोर्टर्स अब पुराने स्टॉक पर नई कीमतें स्टैंप, स्टिकर या ऑनलाइन प्रिंटिंग से डाल सकेंगे।

भारत के कंज्यूमर अफेयर डिपार्टमेंट ने मंगलवार को आदेश जारी कर कहा कि ये अनुमति 31 दिसंबर 2025 तक या पुराना स्टॉक खत्म होने तक लागू रहेगी। नई कीमतों के साथ कंपनियों को पुराना MRP दिखना जरूरी होगा।

3 सितंबर को GST काउंसिल ने कई सामानों पर टैक्स रेट्स घटाने का ऐलान किया था, जिससे कंपनियों को कीमतें कम करने का मौका मिला है। लेकिन

पुराने स्टॉक पर प्रिंटेड MRP को बदलना कंपनियों के सामने चुनौती थी।

अब सरकार के इस समस्या का हल निकालने के बाद ग्राहकों को 22 सितंबर से ही चॉकलेट, बिस्किट, कॉफी, शैंपू और टूथपेस्ट जैसे सामान कम कीमत पर मिल सकते हैं।

अब GST के 4 की जगह केवल दो स्लैब 5% और 18% होंगे। इससे आम जरूरत की चीजें जैसे साबुन, शैंपू के साथ AC, कार भी सस्ते होंगे। GST काउंसिल की 56वीं मीटिंग में इस पर फैसला लिया गया। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 3 सितंबर को इसकी जानकारी दी।

वित्त मंत्री सीतारमण ने बताया कि दूध, रोटी, पराठा, छेना समेत कई फूड आइटम GST फ्री होंगे। वहीं इंडिविजुअल हेल्थ और लाइफ इंश्योरेंस पर भी टैक्स नहीं लगेगा। 33 जीवन रक्षक दवाएं, दुर्लभ बीमारियों और गंभीर बीमारियों के लिए दवाएं भी टैक्स फ्री होंगी। लग्जरी आइटम्स और तंबाकू प्रोडक्ट्स पर अब 28% की जगह 40% GST लगेगा। मध्यम और बड़ी कारें, 350cc से ज्यादा इंजन वाली मोटरसाइकिलें इस स्लैब में आएंगे।

13,560 करोड़ का बायबैक ला सकती है इंफोसिस :11 की बोर्ड मीटिंग में चर्चा

नई दिल्ली। आईटी सेक्टर की कंपनी इंफोसिस जल्द ही बायबैक यानी शेयरों को वापस खरीदने का फैसला ले सकती है। बोर्ड की 11 सितंबर को होने वाली बैठक में कंपनी शेयर बायबैक के प्रस्ताव पर विचार करेगी। ये खबर आने के बाद कंपनी का शेयर आज 5% की बढ़त के साथ NSE पर यह 1,504 रुपए पर कारोबार कर रहा है। 2022 के बाद से यह कंपनी का पहला और 1993 में लिस्टिंग के बाद से पांचवा शेयर बायबैक होगा।

इंफोसिस ने हाल ही में ऐलान किया कि वो अपने शेयरों का बायबैक करने पर विचार कर रही है। ये बायबैक तीन साल बाद पहली बार हो रहा है। बायबैक का मतलब है कि कंपनी अपने ही शेयरों को मार्केट से वापस खरीदेगी, जिससे मार्केट में शेयरों की संख्या कम होगी और शेयर की वैल्यू बढ़ सकती है।

इसकी बोर्ड मीटिंग 11 सितंबर 2025 को होगी, जहां इस प्रस्ताव पर फैसला लिया जाएगा।

खबरों के मुताबिक, इंफोसिस इस बायबैक के लिए करीब 13,560 करोड़ रुपए खर्च कर सकती है। कंपनी के पास इस समय 45,200 करोड़ रुपए का कैश और कैश इक्विवेलेंट है, जो इस बायबैक को आसानी से फंड कर सकता है। कंपनी की कुल नेटवर्थ 95,350 करोड़ रुपए है और ये बायबैक उसका 14-15% हिस्सा हो सकता है।

भारत में बिना रेअर अर्थ वाले मोटर का ट्रायल

दुनिया का 70% रेअर अर्थ मटेरियल चाइना के पास

एजेंसी

नई दिल्ली। इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (EV) के लिए मोटर बनाने में इस्तेमाल होने वाले रेअर अर्थ मेटल पर चीन के बढ़ते नियंत्रण और निर्यात प्रतिबंधों से निपटने के लिए भारतीय कंपनियां अब बिना रेअर अर्थ वाले मोटर का परीक्षण कर रहीं हैं। इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक फरीदाबाद की 3,500 स्क्वायर फीट की लैब में फोटोनिक सॉल्यूशंस और स्टर्लिंग जीटीके ई-मोबिलिटी जैसी भारतीय कंपनियों ने मैग्नेट-फ्री मोटर के टेस्ट शुरू किए हैं।ये मोटर ब्रिटेन की एडवांस्ड इलेक्ट्रिक मशीन्स की टेक्नोलॉजी से बनी हैं, जो टाइटली वाइंडेड मेटल कॉइल्स से पावर जनरेट करती हैं। यानी, इन मोटरों में परमानेंट मेग्नेट की जगह पावर जनरेट करने के लिए कसकर लिपटे धातु के कॉइल का

उपयोग किया जाता है। अगर इनका ट्रायल सफल होता है तो यह EV मार्केट में एक बड़ा बदलाव हो सकता है और चीन पर हमारी निर्भरता को कम हो सकती है।

रेयर मेटल्स का इस्तेमाल खास तौर पर इलेक्ट्रिक गाड़ियों में किया जाता है। इनका उपयोग परमानेंट मैग्नेट इलेक्ट्रिक मोटर्स के लिए कॉम्पैक्ट और हाई परफॉर्मेंस मेग्नेट बनाने के लिए किया जाता है।नियोडिमियम, डिस्प्रोसियम और टरबियम जैसे तत्वों से बने ये चुंबक, मोटरों को छोटे, हल्के और अन्य मोटर की तुलना में ज्यादा एफिशिएंट बनाते हैं, जो ईवी की रेंज और परफॉर्मेंस को बेहतर बनाते हैं।

इनका इस्तेमाल पेट्रोल-डीजल गाड़ियों में लगने वाले केटेलिक कन्वर्टर्स जैसे कंपोनेंट्स में भी होता है। इसके अलावा गाड़ी में लगने वाले कई सिस्टम में सेंसर से लेकर डिस्प्ले तक में ये धातुएं इस्तेमाल होती है।

अक्षय कुमार@58, नाम बदलते ही मिली पहली फिल्म

सि बंगले में नहीं मिली एंट्री, वही खरीदा, शार्क का शिकार बनने से बाल-बाल बचे

अक्षय कुमार यानी एक ऐसा नाम, जिसने अपनी मेहनत के दम पर बॉलीवुड में बहुत ऊंचा मुकाम हासिल किया। साधारण परिवार में जन्मे अक्षय ने कभी शेफ का काम किया, कभी वेटर बने, कभी बच्चों को मार्शल आर्ट्स सिखाए और कभी लाइटमैन भी बने। फिर मॉडलिंग की और जब फिल्मों में आए, तो अपने एक्शन से लोगों का दिल जीता। कॉमेडी में आए तो अपनी डायलॉग डिलीवरी से सबको खूब हंसाया। साथ ही उन्होंने कई अलग-अलग तरह के रोल निभाए। 1990 के दशक में करियर की शुरुआत करने वाले अक्षय कुमार की गिनती आज भी बॉलीवुड के टॉप अभिनेताओं में होती है। अक्षय कुमार का असली नाम राजीव भाटिया है, उनका जन्म 9 सितंबर 1967 को हुआ था। उनके पिता हरि ओम भाटिया आर्मी ऑफिसर थे और मां अरुणा भाटिया गृहिणी थीं। बचपन में ही उनके पिता के ट्रांसफर से परिवार दिल्ली से मुंबई आ गया। छुट्टियों में वे अक्सर चांदनी चौक जाते थे। अक्षय बचपन से ही खेल-कूद में बहुत रुचि रखते थे। जब अक्षय सातवीं क्लास में थे तो उनके नंबर अच्छे नहीं आए। पिता गुस्सा हुए और पूछा कि आगे क्या करना है। अक्षय डर गए और लिखकर बताया कि वे हीरो बनना चाहते हैं। जिस पर पिता ने कहा था कि पढ़ाई जरूरी है, हिंदी-इंग्लिश आनी चाहिए। स्कूल के दिनों में बस में सफर करते हुए संजय दत्त के पोस्टर देखकर कहते थे कि एक दिन मैं भी ऐसा हीरो बनूंगा। अक्षय ने स्कूल की पढ़ाई माटुंगा के डॉन बॉस्को हाई स्कूल से की। वहीं, उन्होंने कराटे सीखना भी शुरू किया। उनका पढ़ाई में ज्यादा मन नहीं लगता था और वे मार्शल आर्ट्स सीखना चाहते थे। पिता ने पैसे इकट्ठे कर उन्हें थाईलैंड (बैंकॉक) भेजा, जहां उन्होंने थाई बॉक्सिंग सीखी। अक्षय कुमार ताइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट हैं। करियर की शुरुआत में उन्होंने शेफ और वेटर का काम भी किया।भारत लौटने के बाद वे मार्शल आर्ट्स सिखाने लगे। एक दिन एक स्टूडेंट के पिता, जो मॉडल कोऑर्डिनेटर थे, ने उन्हें कहा, लंबे-चौड़े और अच्छे-खासे दिखते हो, मॉडलिंग क्यों नहीं करते? जिसके बाद अक्षय ने फर्नीचर का ऐड किया और इसके लिए उन्हें सिर्फ 2 घंटे के काम में 21 हजार रुपए मिल गए। जिस पर अक्षय ने सोचा कि मैं तो महीने भर में 5 हजार रुपए कमाता हूं। यहां इतने कम समय में इतने सारे पैसे मिल गए। जिसके बाद उन्होंने यहीं से मॉडलिंग करने का फैसला किया।

ऐश्वर्या राय AI-जनरेटेड कंटेंट के खिलाफ

दिल्ली हाईकोर्ट पहुंची :वकील ने कहा- उनके नाम-तस्वीरों का इस्तेमाल यौन इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए किया जा रहा

बॉलीवुड एक्ट्रेस ऐश्वर्या राय बच्चन ने मंगलवार को दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका लगाई और बिना इजाजत उनकी फोटो, नाम, पहचान और AI जनरेटेड अश्लील कंटेंट के इस्तेमाल पर रोक लगाने की मांग की। उन्होंने कोर्ट से कहा उनके पर्सनैलिटी राइट्स का उल्लंघन हो रहा है। एक्ट्रेस के वकील संदीप सेठी ने कोर्ट में कहा कि भ्रामक प्रचार और फायदे के लिए ऐश्वर्या राय की पहचान का धड़ल्ले से गलत इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ऐश्वर्या की अश्लील, छेड़छाड़ की गई और AI जनरेटेड तस्वीरें ऑनलाइन फैलाई जा रही हैं। संदीप सेठी ने इसे ऐश्वर्या की गरिमा और अधिकारों का गंभीर उल्लंघन बताया। उन्होंने कंटेंट की विचलित करने वाली प्रकृति पर जोर देते हुए कहा कि एक्ट्रेस की तस्वीरों का इस्तेमाल किसी की यौन इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए किया जा रहा है। एक्ट्रेस के वकील संदीप सेठी ने उन वेबसाइटों के बारे में बताया जो खुद को ऑफिशियल प्लेटफॉर्म बताकर ऐश्वर्या के नाम और उनकी तस्वीर वाले मग, टी-शर्ट और ड्रिंक प्रोडक्ट्स सहित कई अन-ऑथोराइज्ड सामान बेच रहे हैं। लाइव लॉ के अनुसार, मामले की सुनवाई कर रहे जस्टिस तेजस करिया ने कहा कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और वे लोग, जो ऐश्वर्या की तस्वीरें बदलकर या उनकी पर्सनैलिटी बिना इजाजत इस्तेमाल कर रहे हैं, उन पर रोक लगाई जाएगी। कोर्ट ने कहा कि ऐश्वर्या राय बच्चन की पब्लिसिटी और पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए इंजंक्शन ऑर्डर पास किया जाएगा। अब इस मामले की अगली सुनवाई 15 जनवरी 2026 को होगी। बता दें कि इंजंक्शन ऑर्डर कोर्ट का वह ऑर्डर होता है, जिसमें किसी को गैरकानूनी या बिना अनुमति वाला काम रोकने के लिए कहा जाता है। एडवोकेट संदीप सेठी ने कोर्ट को बताया कि ऐश्वर्या नेशन वेल्थ नाम की एक कंपनी ने लेटरहैड पर एक्ट्रेस की तस्वीर लगाई और उन्हें चेयरपर्सन बताया। उन्होंने कहा, "मेरे क्लाइंट को इसकी कोई जानकारी नहीं है। ये पूरी तरह फ्रॉड है।"

करिश्मा कपूर के बच्चे दिल्ली हाई कोर्ट पहुंचे:पिता संजय कपूर की 30,000 करोड़ रुपए की संपत्ति में हिस्सा मांगा

बॉलीवुड एक्ट्रेस करिश्मा कपूर के दोनों बच्चों समायरा और कियान ने अपने पिता संजय कपूर की 30,000 करोड़ की संपत्ति में हिस्सा पाने के लिए दिल्ली हाई कोर्ट का रुख किया है। बार एंड बेंच के अनुसार, बच्चों ने अपनी सौतेली मां प्रिया सचदेव कपूर (संजय कपूर की तीसरी पत्नी) पर आरोप लगाया है कि उन्होंने संजय कपूर की वसीयत में बदलाव किया और पूरी संपत्ति पर कब्जा करने की कोशिश की। अपनी मां के माध्यम से दायर याचिका में बच्चों ने कहा कि जून 2025 में यूके में संजय कपूर के अचानक निधन के बाद, प्रिया कपूर ने उन्हें गलत तरीके से संपत्ति से बाहर रखा। याचिका में प्रिया कपूर और उनके छोटे बेटे, संजय कपूर की मां रानी कपूर और वसीयत की कथित निष्पादक श्रद्धा सूरी मरवाह को आरोपी बनाया गया है। बता दें कि इस याचिका सुनवाई 10 सितंबर को होगी। विवाद का केंद्र 21 मार्च 2025 की वसीयत है, जिसमें कथित तौर पर संजय कपूर की पूरी संपत्ति प्रिया कपूर को दी गई। प्रिया कपूर पर वसीयत सात हफ्ते तक छिपाने का आरोप बच्चों ने दावा किया कि प्रिया कपूर ने दो सहयोगियों, दिनेश अग्रवाल और नितिन शर्मा के साथ मिलकर वसीयत को सात हफ्ते तक छिपाया और 30 जुलाई 2025 को फैमिली मीटिंग में पेश किया।

'बैटल ऑफ गलवान' से सलमान खान का फर्स्ट

लुक रिवील :बदन पर सेना की वर्दी, टपकता खून और आंखों में दिखा देश के लिए जुनून

सलमान खान इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'बैटल ऑफ गलवान' को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में फिल्म से उनका पहला लुक जारी किया गया है, जिसमें वह सेना की वर्दी में दमदार अंदाज में नजर आ रहे हैं। फैंस उनके इस नए लुक की तारीफ कर रहे हैं। सलमान खान ने फिल्म बैटल ऑफ गलवान से अपना पहला लुक ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। इस फोटो में वे आर्मी की वर्दी में, सिर से खून टपकता हुआ, घनी मूंछों के साथ देशभक्ति के रंग में नजर आ रहे हैं। बता दें, फिल्म बैटल ऑफ गलवान 2020 में गलवान घाटी में भारत और चीन की सेनाओं के बीच हुई खतरनाक झड़प पर आधारित है। जो बिना एक भी गोली चलाए लड़ी गई थी। ये जंग 15,000 फीट की ऊंचाई पर लड़ी गई थी। इस फिल्म को सलमान खान फिल्म्स प्रोड्यूस और अपूर्व लाखिया डायरेक्ट कर रहे हैं।। इसमें सलमान के अपोजिट अभिनेत्री चित्रागंदा सिंह नजर आएंगी। साथ ही फिल्म में कई नए चेहरे भी दिखेंगे। फिल्म में सलमान कर्नल बी.संतोष बाबू की भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म का म्यूजिक हिमेश रेशमिया देने वाले हैं। हाल ही में सलमान खान ने लद्दाख में शूटिंग की चुनौतियों के बारे में बताया था। उन्होंने PTI से बातचीत में कहा था, ये फिजिकली चुनौतीपूर्ण है। पहले, मैं एक भूमिका के लिए कुछ हफ्तों की ट्रेनिंग लेता था। अब इसमें ज्यादा समय लगता है। इस फिल्म में बहुत कुछ चाहिए जैसे- दौड़ना, लात-घूंसे चलाना और साथ ही ऊंचाई और बर्फीले पानी जैसी विपरीत परिस्थितियों का सामना करना।

एक नजर

अमहट मंडी से अवैध कब्जा साफ सख्ती से व्यापारियों में खौफ

सुलतानपुर। अतिक्रमण की लगातार मिल रही शिकायतों पर आखिरकार जिला प्रशासन सख्त हो गया। मंगलवार को एसडीएम सदर विपिन कुमार द्विवेदी ने भारी पुलिस बल और राजस्व टीम के साथ अमहट मंडी परिषद में अतिक्रमण हटवाने की बड़ी कार्रवाई की। बुलडोजर चलते ही पूरे क्षेत्र में हड़कंप मच गया। कार्रवाई के दौरान दर्जनों फल और सब्जी व्यापारी मौके पर मौजूद रहे। प्रशासन ने साफ चेतावनी दी कि यदि दोबारा अतिक्रमण किया गया तो सीधे चालान भेजा जाएगा और अतिक्रमणकारियों को जेल भी जाना पड़ेगा। इस कार्रवाई में क्षेत्राधिकारी नगर प्रशांत सिंह भी मौजूद रहे। सुरक्षा की दृष्टि से कई थानों की पुलिस फोर्स मौके पर तैनात की गई थी। स्थानीय लोगों का आरोप है कि अमहट मंडी परिषद में लंबे समय से मंडी सचिव की शह पर अवैध अतिक्रमण फल-फूल रहा था। फल-सब्जी की दुकानों के अलावा पीपल का चबूतरा और मंदिर परिसर तक अतिक्रमण की चपेट में आ गया था। अफसरों ने इसे तत्काल हटाने के निर्देश दिए। लोगों ने आरोप लगाया कि मंडी परिषद से जुड़े कुछ अधिकारियों की मिलीभगत और स्वेटिंग-गेटिंग के खेल के चलते यह अतिक्रमण लगातार बढ़ता गया। लेकिन एसडीएम सदर विपिन कुमार द्विवेदी ने इस खेल को पूरी तरह खराब कर दिया और सख्त कार्रवाई से स्पष्ट संदेश दिया कि अब अतिक्रमण बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस बड़ी कार्रवाई के बाद व्यापारियों में खौफ के साथ-साथ नाराजगी भी देखने को मिली, वहीं आम जनता ने प्रशासन की इस कार्रवाई की सराहना की।

लापरवाही पर नगर कोतवाल तलब हुए

सुलतानपुर। बालक का अपहरण कर हत्या करने देने की सनसनीखेज घटना के बाद आरोपी आसिफ उर्फ सोनू का घर पुलिस ने सीज कर दिया था। आरोपी के वकील रवि शुक्ल ने मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नवनीत सिंह की कोर्ट में अर्जी देकर सीज मकान को आरोपी के पक्ष में रिलीज करने की मांग की है। कोर्ट के आदेश के बाद भी कोतवाल ने इस संबंध में रिपोर्ट देने में लापरवाही बरती। सीजेएम ने नगर कोतवाल को बुधवार को सुबह साढ़े 10 बजे रिपोर्ट के साथ व्यक्तिगत रूप से तलब कर सुनवाई नियत की है। शहर के गांधीनगर सिराज प्रिंटर्स गली निकट राहुल चौराहा मोहल्ले के निवासी मो. शकील के 11 वर्षीय पुत्र उसामा का अपहरण कर 24 नवंबर 2024 को हत्या कर दी गई थी।

राहुल गांधी के मुकदमे में कोर्ट ने दर्ज किया बयान

सुलतानपुर। रायबरेली सांसद और लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर विचाराधीन मानहानि केस में मंगलवार को गवाह अनिल मिश्र की गवाही दर्ज हुई। याची के वकील संतोष पांडेय ने बताया कि राहुल गांधी के वकील केपी शुक्ला ने गवाह से आंशिक जिरह की। एमपी - एमएलए कोर्ट के मजिस्ट्रेट शुभम वर्मा ने मुकदमे में शेष साक्ष्य के लिए 23 सितंबर की तारीख नियत की है। वर्ष 2018 में बंगलूरू में एक जनसभा के दौरान राहुल गांधी ने तत्कालीन बीजेपी अध्यक्ष व मौजूदा केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर उन्हें हत्यारा कहा था। उस बयान से खुद को आहत बताते हुए कोतवाली देहात थाने के हनुमानगंज निवासी बीजेपी नेता विजय मिश्र ने राहुल गांधी के खिलाफ चार अगस्त 2018 को मानहानि का मुकदमा दायर किया था। जिले में एमपी - एमएलए कोर्ट बनने के बाद सुनवाई में तेजी आई और कोर्ट ने राहुल गांधी को विचारण के लिए 27 नवंबर 2023 को तलब कर लिया। समन मिलने पर राहुल गांधी 20 फरवरी 2024 को कोर्ट में हाजिर हुए तो उन्हें जमानत पर रिहा किया गया। 25 जुलाई 2024 को फिर हाजिर हुए राहुल गांधी ने आरोपों से इनकार कर ट्रायल की मांग की थी।

ट्रैक्टर-ट्रॉली पर चोरों का हाथ साफ, केस दर्ज

कादीपुर-सुलतानपुर। जनपद में चोरी की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। ताजा मामला कोतवाली क्षेत्र के चांदनैया गांव का है, जहां अज्ञात चोरों ने रविवार की रात घर के सामने खड़ी ट्रैक्टर की ट्रॉली को निशाना बनाकर चोरी कर लिया। घटना से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया है और ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है। ग्रामीण रजितराम पाल ने बताया कि रोज की तरह वह रविवार की रात अपने घर के सामने ट्रैक्टर और ट्रॉली खड़ा कर सोने चले गए थे। लेकिन सुबह उठकर देखा तो ट्रॉली गायब थी। आनन-फानन में ढूंढ़खोज की गई, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। प्रभारी निरीक्षक श्यामसुंदर ने बताया कि पीड़ित द्वारा सोमवार को दी गई तहरीर के आधार पर अज्ञात चोरों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस टीम मामले की गंभीरता से जांच कर रही है और जल्द ही चोरी की घटना का खुलासा करने का दावा कर रही है। ग्रामीणों का कहना है कि आए दिन क्षेत्र में चोरी की घटनाएं हो रही हैं, जिससे लोगों में दहशत का माहौल है। लोगों ने पुलिस प्रशासन से गांव में गश्त बढ़ाने और चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने की मांग की है।

बिजेथुआ महावीरन धाम की अव्यवस्थाओं पर सार्थक फाउंडेशन गंभीर

कादीपुर-सुलतानपुर। सामाजिक संस्था सार्थक फाउंडेशन की एक बैठक मंगलवार को कस्बे के एक निजी मैरिज लॉन में संपन्न हुई। बैठक में बिजेथुआ महावीरन धाम में मंगलवार और शनिवार को उमड़ने वाली भारी भीड़ से उत्पन्न होने वाली अव्यवस्थाओं पर गंभीर चर्चा की गई। संस्था के पदाधिकारियों ने बताया कि भीड़ के समय दुकानों के कूड़े-कचरे और अन्य गंदगी से पूरा परिसर प्रभावित होता है। इस समस्या से निपटने के लिए सार्थक फाउंडेशन ने जागरूकता अभियान चलाए जाने पर जोर दिया। साथ ही यह भी तय किया गया कि प्रशासन से मिलकर धाम में अस्थायी सफाई कर्मचारियों की व्यवस्था कराए जाने की मांग की जाएगी। बैठक में डब्लू सिंह ने कहा कि बिजेथुआ में जल निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं है, जिससे श्रद्धालुओं को आवागमन में दिक्कतें होती हैं। वहीं, पंकज गुप्ता ने शौचालय की कमी को बड़ी समस्या बताते हुए कहा कि इससे आमजन को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। पप्पू दुबे ने अतिक्रमण की समस्या उठाते हुए कहा कि इसे दूर करना अत्यंत आवश्यक है, तभी श्रद्धालुओं को सुविधा मिल पाएगी। बैठक में डॉ. समीर पांडे, नवीन बरनवाल, राजेंद्र वर्मा, महेंद्र पांडेय, शशि शेखर सिंह सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

गोवा में होगी अखिल भारतीय संपर्क प्रमुखों की बैठक

सुलतानपुर। विश्व हिन्दू परिषद की अखिल भारतीय संपर्क प्रमुखों की बैठक 11 से 13 सितंबर तक गोवा में होगी। संगठन के विशेष संपर्क प्रमुख अधिवक्ता नागेंद्र सिंह इसमें काशी प्रांत का प्रतिनिधित्व करेंगे। उन्होंने बताया कि सभी प्रांतों से प्रतिनिधि बैठक में सम्मिलित होंगे और देश और संगठन के हित से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होगी।

कैबिनेट मंत्री ओपी राजभर की जनसभा को ऐतिहासिक बनाने की तैयारी जोरों पर

ओपी राजभर 17 सितंबर को करेंगे वलीपुर में जनसभा संबोधित

विश्ववार्ता संवाददाता

कुड़वार-सुलतानपुर। इसौली विधानसभा क्षेत्र में सियासी सरगर्मी तेज हो गई है। आगामी 17 सितंबर को वलीपुर बाजार खेल मैदान में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी की विशाल जनसभा आयोजित होगी। इसमें पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर तथा अरविंद राजभर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे और जनता को संबोधित करेंगे।

पार्टी जिलाध्यक्ष विनीत सिंह ने कुड़वार ब्लॉक सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान जनसभा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सुभासपा लगातार अति पिछड़े, गरीब और वंचित वर्ग की आवाज बुलंद करती रही है और हर शोषित को न्याय दिलाना ही पार्टी का मूल लक्ष्य है।

बल्दीराय ब्लॉक प्रमुख शिव कुमार सिंह ने कहा कि आज़ादी से अब तक इसौली विधानसभा सीट पर भाजपा को केवल दो बार ही जीत हासिल हुई है। इस बार प्रयास है कि एनडीए गठबंधन के सहयोग से इसौली में विजय सुनिश्चित हो। उनके सुभासपा में शामिल होने की अटकलों पर उन्होंने कहा कि अभी इस पर कोई निर्णय नहीं हुआ है, इसकी घोषणा राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वयं करेंगे। सुभासपा जिला संगठन मंत्री मनोज शर्मा ने बताया कि जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में संगठन लगातार मजबूत हो रहा है। पार्टी जिले की किसी भी विधानसभा से चुनाव लड़ने को पूरी तरह तैयार है। यदि इसौली से अवसर मिला तो सुभासपा भारी मतों से जीत दर्ज करेगी। इस मौके पर कुड़वार ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि योगेंद्र प्रताप सिंह, जिला प्रमुख महासचिव संतोष राणा, प्रदीप कुमार पीटर सहित कई पदाधिकारी मौजूद रहे।

भारतीय किसान संघ ने मुख्यमंत्री को सौंपा सात सूत्रीय ज्ञापन

विश्ववार्ता संवाददाता

कुड़वार-सुलतानपुर। भारतीय किसान संघ उत्तर प्रदेश के पदाधिकारियों ने मंगलवार को मुख्यमंत्री को संबोधित सात सूत्रीय ज्ञापन प्रभारी बीडीओ को सौंपा।

संगठन के बैनर तले किसान नेता सुरेंद्र सिंह दर्जनभर साथियों के साथ ब्लॉक मुख्यालय पहुंचे और ज्ञापन एडीओ (आईएसबी) सुभाष सिंह को सौंपा। ज्ञापन में मांग की गई कि किसानों को गुणवत्तापूर्ण खाद, बीज और उर्वरक की समय से व्यवस्था कराई जाए। साथ ही कृषि उत्पादों में मिलावट करने वालों के खिलाफ सख्त कानून बनाकर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। किसान नेताओं ने खराब पड़े राजकीय नलकूपों की मरम्मत, नहरों की टूट-फूट दुरुस्त कराने तथा किसानों के लिए विद्युत आपूर्ति नियमित करने की भी मांग उठाई। उन्होंने बताया कि औरंगजेब रजबहा की हालत बेहद खराब है, जिसके कारण समय पर किसानों को पानी उपलब्ध नहीं हो पाता। इस समस्या को लेकर विभागीय अधिकारियों से कई बार बात हो चुकी है, लेकिन समाधान नहीं निकला। यदि जल्द सुधार नहीं हुआ तो विभाग के खिलाफ धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। एडीओ (आईएसबी) सुभाष सिंह ने ज्ञापन दाताओं को आश्वस्त किया कि उनकी मांगों को मुख्यमंत्री तक पहुंचाया जाएगा।

किशोरी ने गोमती नदी में लगाई छलांग युवकों ने बचाया

विश्ववार्ता संवाददाता

कुड़वार-सुलतानपुर। अज्ञात कारणों के चलते एक किशोरी ने स्थानीय गोमती नदी में पुल से छलांग लगा दी। पुल पर खड़े दो युवकों ने तुरन्त पानी में कूदकर किशोरी को बाहर निकाला। एंबुलेंस की मदद से सीएचसी पहुंचाया, जहां इलाज चल रहा है।

मंगलवार दोपहर बाद एक किशोरी कुड़वार गोमती नदी पुल पर पैदल पहुंची।वह पश्चिमी छोर से नदी में छलांग लगा दी। वहां खड़े दो युवक केवटिली निवासी राम अनुज व बरासिन निवासी राम नेवल पुल के नीचे जाकर बिना देर किए नदी में कूदकर लगभग पांच सौ मीटर दूर जाकर किशोरी को बाहर निकाला। एंबुलेंस को सूचना देकर स्थानीय सीएचसी पहुंचाया। सीएचसी पर पहुंची एक महिला ने किशोरी की पहचान की। जिसने उसका नाम नीलू (16) पुत्री स्व.राम तीर्थ व माता का नाम स्व. अनीता निवासी सोहगौली बताया। किशोरी के माता-पिता की चार वर्ष पहले मौत हो चुकी है। घर पर एक बूढ़ी दादी है। किशोरी चार बहनों में दूसरे नंबर की है। बड़ी बहन की शादी हो चुकी है। बूढ़ी दादी पेंशन से किसी तरह से तीन बहनों का पालन पोषण कर रही है। जब लड़की की सूचना दादी को मिली तो उसकी भी हालत बिगड़ गयी। उसका इलाज प्राइवेट चिकित्सक के पास चल रहा है। बहरहाल किशोरी की हालत खराब थी।

सीएचसी पर मौजूद चिकित्सक डा.अजीत मौर्या ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया लेकिन उसको ले जाने वाला कोई नहीं था। इसलिए सीएचसी पर ही इलाज चल रहा था। चिकित्सक ने बताया कि फेफड़ा संक्रमित होने की वजह से सांस लेने में दिक्कत हो रही है।

कोचिंग शिक्षक की संदिग्ध हालात में तालाब में मिली लाश

जयसिंहपुर-सुलतानपुर। कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत पटना हरिवंश गांव के निकट मंगलवार को एक कोचिंग शिक्षक की संदिग्ध परिस्थितियों में लाश मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया। मृतक की पहचान प्रदीप यादव (32 वर्ष), निवासी पटना हरिवंश के रूप में हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि तालाब में एक शव दिखाई देने पर तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। कोतवाल सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया है। मृत्यु के कारणों का खुलासा रिपोर्ट आने के बाद ही हो सकेगा। रिपोर्ट के आधार पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी। घटना के बाद से क्षेत्र में सनसनी का माहौल है। ग्रामीण विभिन्न कयास लगा रहे हैं, जबकि परिजन सदमे में हैं। पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर जांच कर रही है।

गांव में प्रधान का खौफ, पुलिस की शह पर फल-फूल रहा गुंडाराज

विश्ववार्ता संवाददाता

सुलतानपुर। जनपद के शिवगढ़ थाना क्षेत्र का ग्राम प्रधान सूरज साहू इन दिनों सुर्खियों में है। ग्रामीणों ने उन पर दबंगई और गुंडई करने के गंभीर आरोप लगाए हैं। आरोप है कि प्रधान ने नशेड़ियों और गुंडों की टीम तैयार कर रखी है, जो बाजार में दुकानदारों और आम ग्रामीणों को डराने-धमकाने और मारपीट करने का काम करती है।

ग्रामीणों का कहना है कि जब पीड़ित लोग थाने में शिकायत लेकर जाते हैं तो पुलिस कार्रवाई करने की बजाय उन्हें ही टरका देती है। ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया कि प्रधान की दबंगई पुलिस की शह पर फल-फूल रही है। ग्रामीण सूर्य सेन सिंह ने अपने साथियों संग पुलिस की कार्यशैली के खिलाफ खुलकर हल्ला बोला। उन्होंने सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल कर दावा किया कि प्रधान सूरज साहू अपने गुंडों के साथ मिलकर ग्रामीणों से गाली-गलौज, मारपीट और धमकी देता है।

वहीं, ग्राम प्रधान सूरज साहू ने सभी आरोपों को खारिज करते हुए पलटवार किया। उन्होंने कहा कि उनके घर पर वर्मा बिरादरी के लोगों ने हमला किया था और उन्हें स्थानीय विधायक सीताराम वर्मा का संरक्षण प्राप्त है। प्रधान ने इस पूरे विवाद को जातीय राजनीति से जोड़ते हुए अपने ऊपर लगे आरोपों से पल्ला झाड़ लिया। हालांकि ग्रामीणों का कहना है कि उनके पास प्रधान की दबंगई और माफियागीरी के कई ठोस सबूत मौजूद हैं। उनका आरोप है कि पुलिस की चुप्पी और उदासीन रवैया ही प्रधान को माफिया राज स्थापित करने में मदद कर रहा है।

महिला सशक्तिकरण को लेकर जागरूकता अभियान, जाना अधिकार

विश्ववार्ता संवाददाता

सुलतानपुर। निदेशक महिला कल्याण उत्तर प्रदेश लखनऊ के निर्देश और जिलाधिकारी कुमार हर्ष के कुशल निर्देशन में बुधवार को "संकल्प हब फॉर इम्पावरमेंट ऑफ वूमेन योजना" के तहत राधारानी कुवर कृष्ण बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज में महिला सशक्तिकरण जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए जिला प्रोबेशन अधिकारी वी.पी. वर्मा ने कहा कि महिला सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से महिलाएं अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं ले सकें और शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आजीविका में समान अवसर प्राप्त कर सकें। उन्होंने कहा कि सशक्त महिला ही समाज और राष्ट्र की मजबूती की आधारशिला होती है।

जिला मिशन समन्वयक रेखा गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार और शक्ति प्रदान करना ही सच्चे अर्थों में महिला सशक्तिकरण है। इससे महिलाएं राष्ट्र के विकास में बराबर की हिस्सेदारी निभा सकती हैं। सहायक कौशल विकास मिशन पंकज तिवारी ने छात्रों को कौशल विकास मिशन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह पहल युवाओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण देने के लिए चलाई जा रही है। बेरोजगार युवक-युवतियां अपनी पसंद के कोर्स में निःशुल्क प्रशिक्षण लेकर गुणवत्तापूर्ण रोजगार पा सकते हैं। कार्यक्रम में विद्यालय की प्रधानाचार्या बिंदु श्रीवास्तव, संतोष पाल, सरोज यादव जेंडर स्पेशलिस्ट, राहुल विश्वकर्मा, सत्यम मिश्रा, नीलम, रीता श्रीवास्तव, विदुषी गुप्ता, अर्चना श्रीवास्तव और विपिन कुमार कश्यप सहित विद्यालय स्टाफ और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। सभी ने इस आयोजन की सराहना की और सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

पुलिस की क्लीनचिट रिपोर्ट रद्द, पुन : विवेचना का आदेश

विश्ववार्ता संवाददाता

» कोतवाली नगर क्षेत्र के विवेक नगर मोहल्ले का मामला

सुलतानपुर। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नवनीत सिंह ने भूमि विवाद से जुड़े एक मामले में पुलिस की क्लीनचिट रिपोर्ट को खारिज करते हुए पुनः विवेचना का आदेश दिया है। मामला कोतवाली नगर क्षेत्र के विवेक नगर मोहल्ले का है।

अधिवक्ता अब्बास अहमद खान ने प्रोटेस्ट पेश कर फाइनल रिपोर्ट रद्द करने की मांग की थी। वादिनी मीना देवी के मुताबिक उन्होंने जमीन का बैनामा लेकर उस पर मकान व सर्वोदय विद्या मंदिर स्कूल का निर्माण कराया।

आरोप है कि मेजरगंज निवासी वीरेन्द्र की पत्नी नयवन्ती देवी ने उसी मकान व स्कूल की तस्वीर और चौहद्दी दिखाकर धोखाधड़ी से 25 अक्टूबर 2024 को आरोपी संगीता मिश्रा व गौरव दूबे के पक्ष में फर्जी बैनामा कर दिया। अधिवक्ता ने कहा कि कागजी साक्ष्य के बावजूद पुलिस ने राजनीतिक दबाव में अन्तिम रिपोर्ट लगा दी जबकि नायब तहसीलदार ने साल 1998 में ही आदेश देकर नयवन्ती देवी का नाम खतौनी से हटाने का निर्देश दिया था, जिसे विवेचक ने नजरअंदाज कर दिया।

इसके अलावा हल्का लेखपाल की रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों की भी उपेक्षा की गई। न्यायालय ने वादिनी का प्रोटेस्ट प्रार्थनापत्र स्वीकार करते हुए पुलिस की क्लीनचिट रिपोर्ट निरस्त कर कर प्रभारी निरीक्षक को पुनः विवेचना का आदेश दिया।

हलियापुर में तमंचा-कारतूस संग अभियुक्त गिरफ्तार

विश्ववार्ता संवाददाता

सुलतानपुर। अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना हलियापुर पुलिस ने मंगलवार को बड़ी सफलता हासिल की। पुलिस ने कांपा निवासी हरिकेश सिंह पुत्र केदारनाथ सिंह को गिरफ्तार कर उसके पास से एक देशी तमंचा .315 बोर और एक जिंदा कारतूस बरामद किया।

यह कार्रवाई एसपी कुंवर अनुपम सिंह के निर्देशन, एएसपी अखंड प्रताप सिंह के मार्गदर्शन तथा सीओ बल्दीराय सौरभ सावंत और थानाध्यक्ष तरुण कुमार पटेल के नेतृत्व में की गई।

थानाध्यक्ष तरुण पटेल ने बताया कि अभियुक्त के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आवश्यक विधिक कार्रवाई की गई है और उसे माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया।

गिरफ्तारी करने वाली टीम में उपनिरीक्षक रामधनी वर्मा, कांस्टेबल शीलू राठौर और कांस्टेबल रामबली राम की अहम भूमिका रही।

उत्कृष्ट कार्य के लिए एसडीएम सम्मानित, व्यापार मंडल ने सौंपा ज्ञापन

विश्ववार्ता संवाददाता

जयसिंहपुर-सुलतानपुर। जिला उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमंडल की ओर से जयसिंहपुर उप जिलाधिकारी प्रभात सिंह को न्यायिक क्षेत्र और पर्व-त्योहारों के सफल आयोजन में उत्कृष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया। संगठन ने उन्हें अंग वस्त्र, शॉल और राम दरबार भेंट कर सम्मानित किया।

इस दौरान व्यापार मंडल ने क्षेत्र की समस्याओं को लेकर 7 सूत्रीय ज्ञापन भी उप जिलाधिकारी को सौंपा। मुख्य मांगों में

मुंगर बाजार में बनी नाली से पानी की निकासी की व्यवस्था,तहसील पावर हाउस पर हो रही भीषण विद्युत कटौती व ट्रिपिंग पर रोक,बगिया चौराहे पर जल निकासी की पुख्ता व्यवस्था,मुंगर बाजार में सुरक्षा हेतु बीट हाउस की स्थापना,तहसील गेट के सामने सड़क पर स्पीड ब्रेकर की व्यवस्था शामिल रहीं। ज्ञापन सौंपने के बाद उप जिलाधिकारी प्रभात सिंह ने कहा कि व्यापार मंडल द्वारा मिला यह सम्मान अविस्मरणीय है। व्यापारियों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता पर किया जाएगा।

बैठक को संबोधित करते हुए संगठन के जिला प्रभारी बाबा संदीप श्रीवास्तव ने कहा कि जो भी अधिकारी ईमानदारी और निष्ठा से कार्य करेगा, उसे संगठन सम्मानित करेगा। इस मौके पर तहसील संरक्षक राम विशाल यादव, तहसील प्रभारी संजय मिश्रा, मिश्रौली बाजार अध्यक्ष डॉ. नसीम, बरौसा बाजार अध्यक्ष संजय गुप्ता बजरंगी, मुंगर बाजार अध्यक्ष रामकेदार मौर्य, महासचिव सरताज अली, सत्य प्रकाश मिश्रा, राकेश कुमार, अशोक कुमार वर्मा, माता प्रसाद शर्मा, कोषाध्यक्ष सुभाष विश्वकर्मा, रामतीर्थ शर्मा, दिनेश गुप्ता, रामकेश मिश्रा, शारदा, अलाउद्दीन, अब्दुल रहमान सहित कई व्यापारी नेता मौजूद रहे।

दुर्गा पूजा महोत्सव को लेकर प्रशासन-संस्थाओं में बनी सहमति

विश्ववार्ता संवाददाता

कादीपुर-सुलतानपुर। दुर्गा पूजा महोत्सव को लेकर कोतवाली परिसर में उप जिलाधिकारी उत्तम कुमार तिवारी की अध्यक्षता में सोमवार देर शाम पीस कमेटी की बैठक संपन्न हुई।

बैठक को संबोधित करते हुए एसडीएम उत्तम तिवारी ने कहा कि सभी समितियों के पदाधिकारी अपने-अपने पंडालों की अनुमति हेतु आवेदन पत्र भरकर कोतवाली में जमा करें। विद्युत, अग्निशमन सहित अन्य विभागों की एनओसी मिलते ही परमिशन प्रदान कर दी जाएगी। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि डीजे संचालन हेतु संबंधित लोग ई-डिस्ट्रिक्ट पोर्टल पर फॉर्म भरकर अनुमति लेना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि दुर्गा पूजा महोत्सव को भव्य एवं शांतिपूर्ण ढंग से मनाने के लिए आप सबका सहयोग आवश्यक है।

बैठक में केंद्रीय पूजा व्यवस्था समिति के अध्यक्ष आनंद प्रकाश द्विवेदी ने कहा कि उनकी सभी समितियाँ हमेशा शासन-प्रशासन का सहयोग करती रही हैं और आगे भी करती रहेंगी। उन्होंने प्रशासन का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि वर्तमान समय में कुछ जगहों पर सड़कें खराब हैं, विद्युत व्यवस्था बाधित है तथा जल निगम की पाइप लाइन लीकेज की समस्या भी बनी हुई है। इन समस्याओं का समाधान पूजा प्रारंभ होने से पहले किया जाए, जिससे महोत्सव सुचारु रूप से संपन्न कराया जा सके।

समिति अध्यक्ष ने यह भी आग्रह किया कि पूजा के दौरान मांस और मदिरा की बिक्री पर रोक लगाई जाए, जिससे मेले और पूजा की पवित्रता भंग न हो।

बैठक में नगर पंचायत अध्यक्ष आनंद जायसवाल, केंद्रीय पूजा व्यवस्था समिति के महामंत्री ललित कसौधन, रमेश मोदनमल, दुर्गा पूजा समिति रानीपुर कायस्थ के प्रदीप अग्रहरि, मरीमाता पूजा समिति के बृजेश सिंह चौहान, एसडीओ विद्युत, रेंजर, फायर विभाग, जल निगम विभाग तथा नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी अमित सिंह सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर डिवाइडर से टकराई गाड़ी, युवक की मौत

दोस्तपुर-सुलतानपुर। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर मंगलवार को एक भीषण सड़क हादसा हो गया। हादसे में जैतपुर थाना क्षेत्र के भुजगी गांव निवासी युवक अमन तिवारी पुत्र संतोष कुमार तिवारी की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। अचानक हुए इस हादसे से परिवार और गांव में कोहराम मच गया है। जानकारी के अनुसार, अमन तिवारी लखनऊ से पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के जरिए अपने घर लौट रहा था। जब वह दोस्तपुर टोल से करीब छह किमी दूर एक्सप्रेसवे की 167वीं किमी पर पहुंचा, तभी उसकी कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से जोरदार टकरा गई और अमन गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों और एक्सप्रेसवे की टीम ने तत्काल उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दोस्तपुर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

अनाथ बच्चों का सहारा बनी खाकी

पिता की हत्या, मां जेल में, पुलिस ने पहुंचाई मदद

विश्ववार्ता संवाददाता

सुलतानपुर। पिता की हत्या और मां के जेल जाने से तीन मासूम बच्चे अनाथ हो गए। बूढ़ी दादी और गरीब चाचा किसी तरह उनका सहारा बने हुए हैं। ऐसे कठिन वक्त में खाकी ने इंसानियत की मिसाल पेश की है।

सीओ लंभुआ अब्दुस सलाम खान, चांदा थानाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह और क्राइम इंस्पेक्टर तनवीर खां किंदीपुर स्थित मृतक महेश के घर पहुँचे। पुलिस टीम की गाड़ियां आते ही परिवार सहम गया, लेकिन अधिकारियों ने भरोसा दिलाया कि घबराने की जरूरत नहीं, वे मदद के लिए आए हैं। इसके बाद सरकारी गाड़ी से गेहूं, चावल, आटा, आलू सहित जरूरी राशन और गृहस्थी का सामान उतारकर बच्चों को सौंपा गया। पुलिस अधिकारियों ने बच्चों को दुलारते हुए कहा कि प्रशासन हर संभव मदद करेगा।

सीओ अब्दुस सलाम ने कहा हम भी परिवार से हैं और इंसानियत यही कहती है कि एक-दूसरे की मदद करें।इस मौके पर एसआई चुन्नू लाल, हेड कांस्टेबल मोहन यादव, कांस्टेबल अनुराग पाल, कांस्टेबल विकास व चालक सोनू मौजूद रहे। वहीं ग्राम प्रधान शेर बहादुर यादव, पंकज सिंह, केदारनाथ सिंह, संतोष कुमार अग्रहरी और उमाशंकर यादव समेत भारी संख्या में ग्रामीण इकट्ठा हुए और पुलिस की इस पहल की सराहना की।

गौरतलब है कि कुछ दिन पहले महेश की पत्नी पूजा और उसके प्रेमी डंगर को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा था। दोनों ने अवैध संबंधों के चलते महेश की गला रेतकर हत्या कर दी थी।

विश्ववार्ता
जलता नेपाल
लखनऊ, बुधवार, 10 सितंबर, 2025

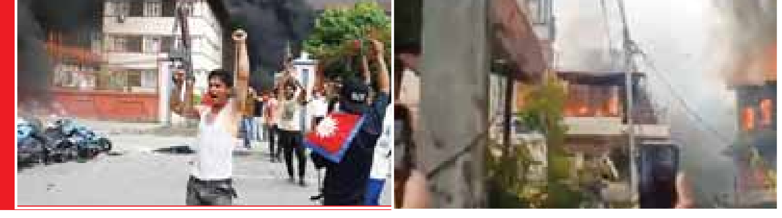

नेपाल में जेन जेड ने पलट दी रातों-रात सरकार

प्रदर्शनकारियों ने मंगलवार को नेपाल की संघीय संसद को आग के हवाले कर दिया।

नेपाली प्रधानमंत्री ओली के निवास पर आग

प्रदर्शनकारियों ने मंगलवार को नेपाली कांग्रेस के ऑफिस में आग लगा दी।

काठमांडू। नेपाल में सोशल मीडिया पर बैन और भ्रष्टाचार के खिलाफ नौजवानों के आंदोलन ने देश की राजनीति को हिला दिया है। इन प्रदर्शनों के चलते सोशल मीडिया पर से बैन हटाने के बावजूद प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा। तीन दिन पहले सरकार ने फेसबुक और एक्स समेत 26 सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म्स को बैन करने का आदेश दिया था। इसके बाद राजधानी काठमांडू सहित पूरे देश में युवाओं खासकर जेन जी ने सड़कों पर उतरकर जोरदार विरोध दर्ज कराया। प्रदर्शनों में बल प्रयोग के कारण अब तक 21 लोगों की मौत हो चुकी है। 19 लोगों की मौत सोमवार को और 2 की मौत मंगलवार को हुई।

बढ़ते दबाव के बीच सोमवार को सोशल मीडिया पर से बैन हटाने के बाद भी प्रदर्शनकारियों का गुस्सा शांत नहीं हुआ। राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल,प्रधानमंत्री ओली सहित कई नेताओं के निजी घरों पर हमला करने के साथ ही प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन में भी तोड़फोड़ की। आंदोलनकारी प्रधानमंत्री ओली के इस्तीफे पर अड़े रहे और राजधानी के कई हिस्सों में 'केपी चोर, देश छोड़ो' और 'भ्रष्ट नेताओं के खिलाफ कार्रवाई करो' जैसे नारे लगाए। बालाकोट स्थित उनके घर को आग के हवाले कर दिया। दूसरी तरफ, सैकड़ों प्रदर्शनकारी ओली के ऑफिस में भी घुस गए। इसके कुछ देर बाद प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति पौडेल को अपना इस्तीफा भेज दिया, जिसे स्वीकार भी कर लिया गया।

राष्ट्रपति के निजी घर को भी आग के हवाले कर दिया

प्रदर्शनकारियों ने ऊर्जा मंत्री दीपक खड़का के घर से बरामद नोटों को हवा में उड़ाया।

ओली ने कहा कि मैं अपने पद से इस्तीफा दे रहा हूं ताकि राजनीतिक समाधान ढूंढा जा सके और समस्याओं को हल करने के लिए आगे की पहल की जा सके। नेपाल के नौजवान पिछले कुछ समय से भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चला रहा थे और इसके लिए रेडिट, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म का इस्तेमाल करके मंत्रियों और रसूख वालों के परिवारों की अय्याशी वाली जीवनशैली का पर्दाफाश कर रहे थे। माना जा रहा है कि सरकार ने इसे दबाने के लिए सोशल मीडिया पर ही बैन लगा दिया और इसी ने आंदलोन को भड़काने में चिंगारी का काम किया। प्रदर्शनकारियों की मुख्य मांगों में प्रधानमंत्री ओली के इस्तीफे के अलावा राष्ट्रीय सरकार का गठन और भ्रष्ट नेताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई शामिल है। उनकी अन्य मांगों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी और राजनीतिक पद पर आसीन लोगों के लिए रिटायरमेंट की आयु तय करना शामिल है। 2008 में नेपाल में राजतंत्र खत्म होने के बाद से कम्युनिस्ट पार्टियां किसी ना किसी रूप से सत्ता में हैं। प्रधानमंत्री ओली की कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल नेपाली कांग्रेस के समर्थन से सरकार चला रही थी। नेपाली कांग्रेस पहले से ही ओली पर इस्तीफे का दबाव बना रही थी। पार्टी के महासचिव गगन थापा ने सोशल मीडिया पर लिखा था,'ओली को स्थिति की जिम्मेदारी लेते हुए तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए।'सोमवार शाम कैबिनेट की बैठक हुई और गोलीबारी की घटना की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए गृह मंत्री रमेश लेखक ने इस्तीफा दे दिया था। नेपाली कांग्रेस के नेता इस बात का भी दबाव बना रहे थे कि ओली नहीं हटते हैं तो पार्टी अपने मंत्रियों को बुला ले, खुद सरकार बनाए और आंदोलनकारी 'जेन ज़ी' समूह के साथ बातचीत शुरू करे।

नेपाली मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, प्रधानमंत्री ओली ने कोर्ट के फैसले की आड़ में विरोध की आवाज को दबाने के लिए सोशल मीडिया को ही बैन कर दिया। दरअसल कोर्ट के फैसले में सोशल मीडिया के रजिस्ट्रेशन और इन प्लैटफॉर्म्स पर निगरानी के लिए कानून बनाने के लिए कहा गया था, लेकिन ओल सरकार ने इन्हें बैन ही कर दिया। ओली ने 15 जुलाई 2024 को प्रधानमंत्री पद का कार्यभार संभाला था। इससे पहले भी वह अक्टूबर 2015 से अगस्त 2016 और फरवरी 2018 से जुलाई 2021 तक पद पर रह चुके थे। बतौर प्रधानमंत्री यह उनका चौथा कार्यकाल था।

आज का दिन नेपाल के लिए काला दिन, मनीषा कोइराला ने किया जेन जेड का सपोर्ट

विश्ववार्ता ब्यूरो

नयी दिल्ली। नेपाल में हिंसक प्रदर्शनों से हालात लगातार बिगड़ते जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियोज और फोटोज को देख बॉलीवुड की जानी-मानी एक्ट्रेस मनीषा कोइराला ने नेपाल सरकार के रवैये की तीखी निंदा की है। बता दें, मनीषा खुद नेपाल से संबंध रखती हैं। मनीषा कोइराला का जन्म नेपाल की राजधानी काठमांडू में हुआ था। मनीषा कोइराला ने सोशल मीडिया पोस्ट में एक खून से सने जूते की तस्वीर साझा करते हुए लिखा, "आज का दिन नेपाल के लिए काला दिन है। जब जनभावनाओं, भ्रष्टाचार के खिलाफ आक्रोश और न्याय की मांग का जवाब गोलियों से मिलता है तो उसे काला दिन कहते हैं।" नेपाल सरकार ने 26 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बैन लगा दिया। इसके बाद काठमांडू समेत देश के कई हिस्सों में खासतौर पर जेन जेड युवाओं ने विरोध-प्रदर्शन तेज कर दिए। संसद

भवन के बाहर हजारों प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने आंसू गैस, रबर बुलेट और यहां तक कि गोलीबारी का भी इस्तेमाल किया। ऐसे में कम-से-कम 20 लोगों की मौत और 250 से अधिक लोग घायल हो गए। इसके बाद, राजधानी सहित कई बड़े शहरों में कर्फ्यू लगा दिया गया। मनीषा के दादा विशेश्वर प्रसाद नेपाल के प्रधानमंत्री रह चुके थे, जबकि पिता भी कैबिनेट मंत्री रहे हैं। फिल्मों की दुनिया में उन्होंने सबसे पहले नेपाली फिल्म फेरी भेटौला से कदम रखा। इसके बाद बॉलीवुड में उन्होंने साल 1991 में रिलीज हुई फिल्म सौदागर से डेब्यू किया, जिसने उन्हें पहचान दिलाई।

सुरक्षा बलों ने पीएम ओली को हेलिकॉप्टर से सुरक्षित जगह पर शिफ्ट कर दिया। उन्हें कहां ले जाया गया है, इसकी जानकारी नहीं है।

पूर्व पीएम झालानाथ खनाल उनकी पत्नी राजलक्ष्मी चित्रकार जो जलकर मर गई

इस्तीफा दे चुके गृहमंत्री रमेश लेखक के घर को आगजनी और तोड़-फोड़ की।

कौन से युवा कहलाते हैं जेन जेड ? रातोंरात नेपाल में कर दिया सरकार का तख्तापलट

विश्ववार्ता ब्यूरो

नयी दिल्ली। भारत का पड़ोसी देश नेपाल जल रहा है। संसद भवन, सुप्रीम कोर्ट, राष्ट्रपति भवन से लेकर पीएम हाउस तक आंदोलनकारी भीड़ का कब्जा है और इन्हें आग के हवाले कर दिया गया है। यह आंदोलन इतना भीषण था कि पहले ओली सरकार के 5 मंत्रियों ने इस्तीफा दिया तो वहीं अब खुद पीएम ओली ने पद छोड़ दिया है। सेना की सलाह पर वह पद छोड़कर अलग हो गए हैं, लेकिन अब भी स्थिति कंट्रोल नहीं हो रही है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने सलाह दी है कि नेपाल न जाएं। नेपाल की राजधानी काठमांडू में स्थित त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट को बंद कर दिया गया है। फिलहाल नेपाल में हालात संभलने का इंतजार है। इस आंदोलन के पीछे जेन जेड को जिम्मेदार बताया जा रहा है।

जनसांख्यिकी के जानकार मानते हैं कि मिलेनियल्स या फिर जेनरेशन वाई के बाद पैदा होने वाले बच्चे जनरेशन जेड कहलाते हैं। इनके जन्म के वर्षों को 1997 से 2012 और 2015 के अंतराल में बांटा गया है। इसके बाद की पीढ़ी को जेनरेशन अल्फा कहा जाता है। जेन जेड को लेकर कहा जाता है कि यह ऐसी पीढ़ी है, जिसने पैदा होती ही या फिर होश संभालते ही इंटरनेट पर काम किया। इस पीढ़ी को लैपटॉप, आईफोन जैसे गैजेट्स मिले तो वहीं 5जी स्पीड का इंटरनेट भी मिला। सोशल मीडिया के कई प्लेटफॉर्म्स पर इन लोगों को

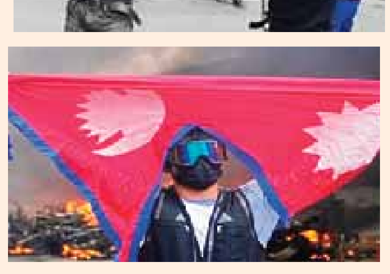

किशोरावस्था में ही एक्सेस मिली। इस कारण यह अपनी पुरानी पीढ़ियों की तुलना में सबसे ज्यादा टेक सेवी है। यही वजह है कि जब नेपाल में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर पाबंदी लगी तो इस पीढ़ी का गुस्सा भड़क गया। इस पीढ़ी को टेक-सेवी यानी तेजी से तकनीक को अपनाने वाला माना जाता है। ऑनलाइन गेमिंग, ई-कॉमर्स और डिजिटल पेमेंट इनके जीवन का सामान्य हिस्सा है। इसके अलावा समाज में समय व्यतीत करने के साथ ही सोशल मीडिया पर वक्त गुजारना भी इनकी जिंदगी में सामान्य है। ऐसे में जब इन प्लेटफॉर्म्स पर पाबंदी लगी तो नेपाल में युवा भड़क गए। नेपाल का केस यह भी समझने के लिए पर्याप्त है कि कैसे टेक कंपनियां हमारे जीवन में दखल दे चुकी हैं और उनके प्रोडक्ट्स के बिना लोग अपनी जिंदगी दुश्वार समझ सकते हैं।

इस पीढ़ी की एक खासियत यह भी है कि इसने पुराने दौर के भेदभाव या फिर वर्गभेद को नहीं देखा है। ऐसे में किसी भी तरह के भेदभाव और असमानता का खुलकर विरोध करते हैं। यह पीढ़ी विविधता, समावेश और सामाजिक न्याय पर ज़्यादा ध्यान देती है। जेंडर इक्वैलिटी, जलवायु परिवर्तन और मानवाधिकार जैसे मुद्दों को लेकर जागरूक रहते हैं। पारंपरिक नौकरी की बजाय फ्रीलांसिंग, स्टार्टअप्स, और क्रिएटिव करियर की ओर झुकाव रखते हैं। इसका अर्थ है कि पहले की तरह नौकरियों में सुरक्षा खोजने की बजाय अपने स्तर पर भी कुछ करने के प्रयास करते हैं। इस पीढ़ी को मिलेनियल्स की तुलना में ज़्यादा प्रैक्टिकल और सेविंग ओरिएंटेड भी माना जाता है।

भारत विरोधी बालेन शाह या रवि लामिछाने ?

कौन बनेगा नेपाल का नया पीएम, ओली के इस्तीफे के बाद

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने अपनी सरकार के खिलाफ बड़े पैमाने पर हिंसक विरोध प्रदर्शनों के बाद मंगलवार को इस्तीफा दे दिया। यह विरोध प्रदर्शन नेपाल में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर लगाए गए प्रतिबंध, भ्रष्टाचार और नेताओं और अधिकारियों के सगे-संबंधियों को नौकरियों और दूसरी सुख सुविधाओं में तवज्जो देने के कारण हो रहा है। सोमवार से शुरू हुए इस विरोध प्रदर्शन में अब तक 19 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 250 से ज्यादा लोग घायल हैं।

मंगलवार को भी काठमांडू में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए और प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षाकर्मियों पर जमकर पथराव किया। ऐसा बताया जा रहा है कि केपी शर्मा ओली इस्तीफा देने के बाद देश छोड़कर भाग गए हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि नेपाल का अगला प्रधानमंत्री कौन होगा।

नेपाल के पूर्व गृह मंत्री रबी लामिछाने, केपी शर्मा ओली के इस्तीफे के बाद उत्तराधिकारी की दौड़ में सबसे आगे बताए जा रहे हैं। उन्होंने 2022 में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की थी। आरएसपी ने खुलकर इस विरोध प्रदर्शन का समर्थन किया है। उनकी पार्टी के 21 सांसदों ने एकसाथ इस्तीफा देकर ओली पर इस्तीफे का दबाव बनाया। ऐसे में युवाओं का समर्थन भी रबी लामिछाने के साथ है। ऐसा कहा जा रहा है कि लमिछाने ने नेपाली संसद को अस्थिर करने के लिए एक सोची समझी रणनीति के तहत अपने सांसदों का इस्तीफा करवाया।

रबी लामिछाने नेपाल में पहले से ही युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय हैं। सोशल मीडिया पर उनकी बड़ी फैन फॉलोइंग है। नेपाल के युवा उन्हें भ्रष्टाचार विरोधी राजनीति का प्रतीक मानते हैं। यही कारण है कि वह युवाओं के बीच देउबा, ओली, प्रचंड जैसे जमे हुए नेताओं के विपरीत एक बेदाग विकल्प के रूप में उभरे हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि उन्होंने ही पर्दे के पीछे इस आंदोलन को समर्थन दिया और युवाओं को सरकार पर दबाव डालने के लिए उकसाया।

आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका के मानदेय में हुई बढ़ोतरी पर लगी मुहर

नीतीश कैबिनेट की बैठक में इस प्रस्ताव पर मिली मंजूरी, 25 मुख्य एजेंडों को दी गयी स्वीकृति

संजय सिंह

पटना। राज्य सरकार ने आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका के मासिक मानदेय में बढ़ोतरी कर दी है। इसके तहत सेविका को अब 7 हजार के स्थान पर 9 हजार रुपये तथा सहायिका को 4 हजार से बढ़ाकर 4500 रुपये प्रति महीने दिए जाएंगे। इसके लिए राज्य योजना मद से प्रतिवर्ष 345 करोड़ 19 लाख 20 हजार रुपये अतिरिक्त व्यय की मंजूरी कैबिनेट से दी गई है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक में 25 एजेंडों को सहमति दी गई। इससे संबंधित विस्तृत जानकारी मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग के अपर मुख्य सचिव अरविंद कुमार चौधरी ने सूचना भवन के सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता में दी।

राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग में राजस्व कर्मचारी के 3 हजार 303 नए पद की मंजूरी दी गई है। इन नए पदों पर कर्मियों की बहाली तेजी से बढ़ती जमाबंदी के मामलों का निपटारा करने के उदेश्य से किया गया है।

अपर मुख्य सचिव ने कहा कि आंगनबाड़ी सेविका एवं सहायिका को मानदेय की बढ़ी हुई राशि 1 सितंबर के प्रभाव से ही मिलेगी। आईसीडीएस (समेकित बाल विकास योजना) के क्रियान्वयन में सेविकाओं या सहायिकाओं की भूमिका मुख्य रूप से है। बढ़ती महंगाई एवं मुद्रास्फीति को ध्यान में रखते हुए इनके मानदेय में बढ़ोतरी की गई है, जिससे उनके जीवन में सुधार होगा। साथ ही उनके कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह मंडप योजना के तहत सूबे की 8

हजार 53 पंचायतों में चरणबद्ध तरीके से विवाद मंडप का निर्माण कराने के लिए राज्य योजना मद में बिहार आकस्मिकता निधि से 50 करोड़ रुपये जारी की गई है। यह नई योजना है, इस वजह से आकस्मिक निधि से अग्रिम राशि मंजूर की गई है। मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर स्ट्रीट लाइट योजना के तहत निर्धारित लक्ष्य को समय पर पूर्ण करने के लिए 100 करोड़ रुपये राशि की स्वीकृति दी गई है। यह राशि राज्य योजना मद में बिहार आकस्मिक निधि से जारी की गई है।

इसके अलावा कैबिनेट में अन्य कई महत्वपूर्ण निर्णयों पर भी सहमति बनी है। इसके तहत बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) के राज्य स्तरीय कार्यालय यानी जीविका मुख्यालय का निर्माण पटना में करने के लिए 73 करोड़ 66 लाख रुपये की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। नगर विकास एवं आवास विभाग के अंतर्गत लोक उदेश्य के कार्यों तथा विभिन्न तरह की आधारभूत संरचना मसलन नाला, सड़क, प्रशासनिक भवन, सम्राट अशोक भवन, मोक्षधाम या शवदाह गृह, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के अंतर्गत कंपोस्ट प्लांट, तरल अपशिष्ट प्रबंधन के लिए सीवरेज या सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट समेत अन्य के निर्माण के लिए आवश्यक भूमि उपलब्ध कराई जाएगी। इससे शहरों का सौंदर्यीकरण, आधारभूत संरचना का निर्माण एवं नागरिक सुविधा का विकास हो सकेगा।

वहीं, कोयंबटूर स्थित ईशा फाउंडेशन को छह शहरों पटना, गयाजी, छपरा, सहरसा, भागलपुर और बेगूसराय में गैस (एलपीजी) आधारित शवदाह गृह की स्थापना एवं संचालन के लिए इन शहरों में एक-एक एकड़ भूमि 1 रुपये के टोकन पर इस फाउंडेशन को लीज पर दी गई है। नगर निगम स्तर पर योजना प्रभाग के गठन की मंजूरी दी गई है। इसके अंतर्गत सहायक नगरपालिका योजना पदाधिकारी का पद सृजित किया गया है। नगरपालिकाओं को सौंपे गए दायित्वों एवं कार्यों के निर्वहन में सुगमता के उदेश्य से इन पदों पर नियमित नियुक्ति जरूरी है। नगर निकायों में लंबित मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसके मद्देनजर नगरपालिका विधि सेवा नियमावली, 2025 की स्वीकृति प्रदान की गई है।

श्री अरविंद कुमार चौधरी ने कहा कि राज्य के 176 नए थानों में सीसीटीवी कैमरे और डैशबोर्ड का निर्माण कराने तथा भविष्य में बनने वाले सभी नए थानों में भी इन्हें लगाने के लिए राशि मंजूर की गई है। जिन पुराने थानों का फिर से उद्धार किया गया है, उनमें भी सीसीटीवी लगाए जाएंगे। इसके लिए 280 करोड़ 60 लाख 79 हजार रुपये की मंजूरी दी गई है। जहानाबाद जिला अंतर्गत सिंचाई प्रमंडल उदेरास्थान के अधीन उदेरास्थान बराज के निर्माण का रास्ता साफ हो गया है। इससे संबंधित चल रहे मुकदमा का निपटारा होने के बाद इसके निर्माण के लिए 651 करोड़ 13 लाख रुपये की स्वीकृति दी गई है। इसके लिए संवेदक के साथ समझौता हो गया है। बराज का निर्माण के साथ पहले से निर्मित उदेरास्थान वीयर योजना की नहर प्रणालियों का आधुनिकीकरण कार्य कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री फेलोशिप योजना की हुई घोषणा

मंत्रिपरिषद की बैठक में मुख्यमंत्री फेलोशिप योजना की घोषणा की गई है। इसके लिए 121 फेलो का चयन करने और दो वर्ष के लिए इस योजना के संचालन पर 31 करोड़ 85 लाख 88 हजार 900 रुपये की स्वीकृति दी गई है। इसके तहत चयनित विशेषज्ञों को बोधगया स्थित आईआईएम से अनुबंध किया गया है। चयनित फेलो को प्रति महीने एक निश्चित राशि 1.50 लाख, 1.25 लाख, 1 लाख और 80 हजार रुपये प्रतिमाह मानदेय के तौर पर दी जाएगी। इन्हें अलग-अलग विभागों में रखा जाएगा। मुख्यमंत्री सचिवालय में 4 पद, डिप्टी सीएम कार्यालय में 2, मुख्य सचिव कार्यालय एवं विकास आयुक्त कार्यालय में 2-2 पद के अलावा अन्य विभागों में एक-एक पद और प्रमंडलीय आयुक्त, जिलाधिकारी और नगरपालिका आयुक्त कार्यालय में भी एक पद रखा गया है।

जयेश मीडिया प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **रोहित बाजपेयी** द्वारा दि इंडियन एक्सप्रेस लि. सी-26 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, कानपुर रोड, लखनऊ से मुद्रित और 33 कैंट रोड निकट ओडियन सिनेमा लखनऊ से प्रकाशित।
संपादक- **मनोरंजन सिंह***, **उत्तराखंड कार्यालय-** जे.एन. प्लाजा कॉम्प्लेक्स, तृतीय तल, जिला जज न्यायालय के सामने, हरिद्वार रोड, देहरादून
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन के लिए उत्तरदायी। समस्त विवादों का निस्तारण लखनऊ न्यायालय में मान्य होगा।
RNI No. UPHIN/2008/28657 Phone No.: (BSNL) 0522-2619671, 2619672 Phone No.: (AIRTEL) 0522-4323301, 4323302, 4323303 E-Mail: vishwavarta.response@gmail.com, dailyvishwavarta@yahoo.com dailyvishwavarta@rediffmail.com